INDIAN GEOGRAPHY

भारत का भूगोल

Preface: भारतीय भूगोल का - एनईपी 2020 और एनसीईआरटी के माध्यम से मानचित्रण

भारत के विविध परिदृश्यों की जटिल टेपेस्ट्री में, भूगोल की रूपरेखा हमारे देश की भौतिक, सांस्कृतिक और पारिस्थितिक पहचान की कहानी का पता लगाती है। पुस्तक "भारतीय भूगोल" एक मार्गदर्शक सितारे के रूप में उभरती है, जिसे दूरदर्शी कार्यक्रम "बने भारत भाग्य निर्माण" के तहत रिसर्च एंड एनालिसिस विंग द्वारा सावधानीपूर्वक डिजाइन और संपादित किया गया है। यह पुस्तक केवल संकलन नहीं है; यह **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 की परिवर्तनकारी भावना और एनसीईआरटी के मूलभूत ज्ञान के साथ जुड़े भारत की भौगोलिक पेचीदगियों के केंद्र में एक इमर्सिव अन्वेषण है।**

जैसे-जैसे हमारा देश नए क्षितिज की ओर बढ़ रहा है, "**संविधान को जानो, भारत को पहचानो**" के माध्यम से हमारे संविधान के सार को समझने का आह्वान गूंज रहा है। यह पुस्तक भारत के पहाड़ों से लेकर उसकी नदियों, शहरों से लेकर उसके गांवों तक की भौगोलिक भौगोलिक स्थिति को उजागर करती है। यह प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के लिए प्रयास करने वाले सभी उम्मीदवारों के लिए अपना हाथ बढ़ाता है, चाहे वह सरकारी पदों या गतिशील कॉर्पोरेट क्षेत्र के दायरे में हो।

एनईपी 2020 के दूरदर्शी लक्ष्यों और एनसीईआरटी **के शैक्षणिक सिद्धांतों का सहजीवन** एक कम्पास को आकार देता है जो शिक्षा के विकास को नेविगेट करता है। पुस्तक एनईपी 2020 के आयामों का खुलासा करती है: सीखने के लिए समग्र दृष्टिकोण, प्रौद्योगिकी का एकीकरण, स्वदेशी ज्ञान का उत्सव और महत्वपूर्ण सोच का पोषण। यह संरेखण न केवल एक विकसित शिक्षा प्रणाली की कल्पना करता है, बल्कि शासन में सक्रिय रूप से लगे प्रबुद्ध नागरिकों के लिए एक मंच भी है।

"भारतीय भूगोल" "बने भारत भाग्य निर्माण" **की आकांक्षाओं को प्रतिध्वनित करता है, जो** पाठकों को भारत की भौगोलिक विविधता में उतरने के लिए आमंत्रित करता है, जो हमारे संविधान के वास्तुकारों, शिक्षकों और उम्मीदवारों की भावना को प्रतिबिंबित करता है।

[KOTHARI PUBLICATION LLP

सर्वाधिकार सुरक्षित। यह प्रकाशन और इसकी सामग्री कॉपीराइट कानून द्वारा संरक्षित है। इस पुस्तक के किसी भी भाग को प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, जिसमें फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, या अन्य इलेक्ट्रॉनिक या मैकेनिकल तरीके शामिल हैं, पुनरुत्पादित, वितरित या प्रसारित नहीं किया जा सकता है, सिवाय (संक्षिप्त उद्धरणों के मामले में एवं आलोचनात्मक समीक्षाओं और कॉपीराइट कानून द्वारा अनुमत कुछ अन्य गैर-व्यावसायिक उपयोगों में)

अनुमति अनुरोधों के लिए, कोठारी प्रकाशन एलएलपी, इंदौर से संपर्क करें।

इस प्रकाशन की सामग्री की अनधिकृत प्रतिलिपि या वितरण निषिद्ध है और इसके परिणामस्वरूप कानूनी कार्रवाई हो सकती है। प्रकाशक और लेखक ने इस पुस्तक में सटीक और विश्वसनीय जानकारी प्रदान करने के लिए कड़ी मेहनत की है, लेकिन वे सामग्री की सटीकता या पूर्णता, या इसके आधार पर की गई किसी भी कार्रवाई के लिए कोई कानूनी जिम्मेदारी नहीं लेते हैं।

पूछताछ और जानकारी के लिए संपर्क करें:

कोठारी पब्लिकेशन एलएलपी इंदौर

भारतीय भूगोल

अनुक्रमणिका

सीरीयल नम्बर।	अध्याय का नाम	पृष्ठ सं।
1.	भारतीय भौगोलिक विस्तार और सीमाएँ	2-21
2.	भारतीय नदी प्रणाली	22-29
3.	झीलें एवं झीलों के प्रकार	30-31
4.	भारत में खनिज वितरण	32-48
5.	भारत में जैव विविधता हॉटस्पॉट	49-54
6.	भारत में विश्व धरोहर स्थल	55-78
7.	भारत के प्रमुख समुद्री बंदरगाह	79-88
8.	उद्योगों का विकास और औद्योगीकरण के चरण	89-101

अभ्यास प्रश्न

1. लघु उत्तरीय प्रकार
2. अभिकथन -कारण प्रश्न
3. आलोचनात्मक सोच-आधारित प्रश्न
4. बहुविकल्पीय प्रश्न
5. केस स्टडी आधारित प्रश्न

1. भारतीय भौगोलिक विस्तार और सीमाएँ

उत्तरी गोलार्ध में स्थित है ; **विशेष रूप से** एशिया महाद्वीप के दक्षिण-मध्य भाग में, मुख्य भूमि विश्व के क्षेत्रफल **8°4'N और 37°6'N** अक्षांश और **68°7'E और 97°25'E देशांतर के बीच फैली हुई है।**

दुनिया के 7वें सबसे बड़े **देश के रूप में , भारत शेष एशिया से अलग है, क्योंकि यह पहाड़ों और समुद्र के कारण अलग है, जो देश को एक विशिष्ट भौगोलिक इकाई प्रदान करता है।**

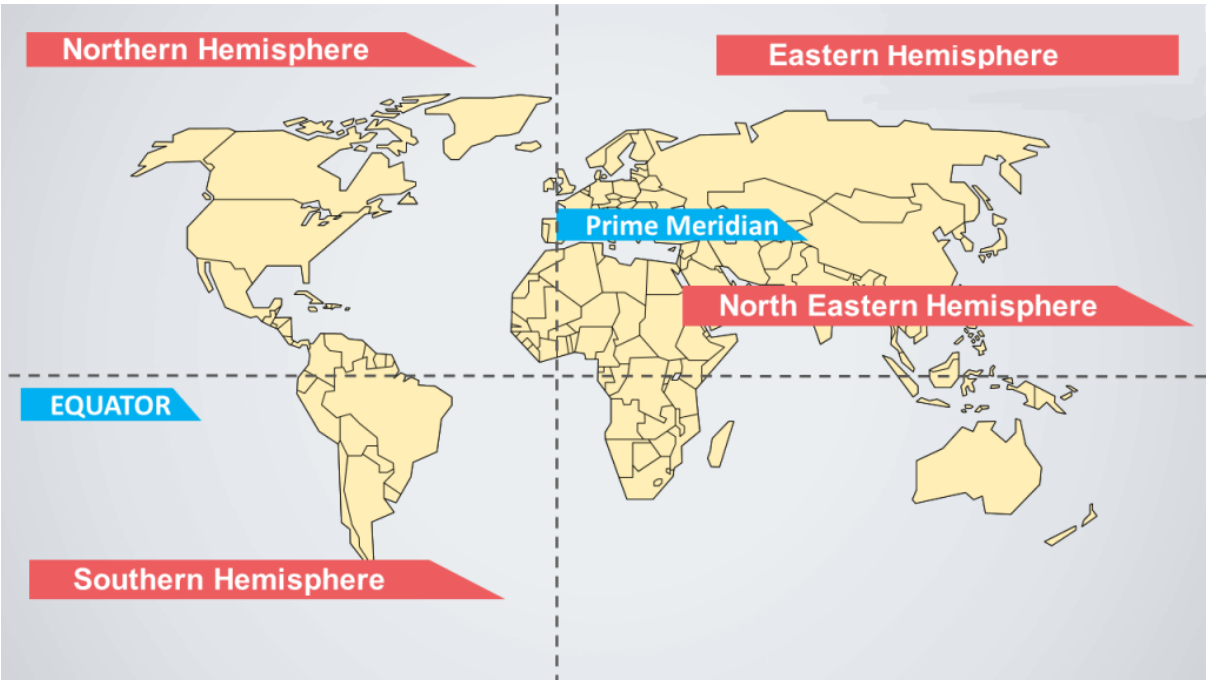

भारत की **भूमि सीमा लगभग 15,200 किमी है और अंडमान और निकोबार और लक्षद्वीप सहित मुख्य भूमि के समुद्र तट** की कुल लंबाई 7,516.6 किमी है।

भारत उत्तर-पश्चिम, उत्तर और उत्तर-पूर्व में नवीन वलित पर्वतों से घिरा है। लगभग 22° उत्तरी अक्षांश के दक्षिण में, यह सिकुड़ना शुरू होता है और हिंद महासागर की ओर बढ़ता है, इसे दो समुद्रों में विभाजित करता है, पश्चिम में अरब सागर और पूर्व में बंगाल की खाड़ी।

मुख्य भूमि का अक्षांशीय एवं देशांतरीय विस्तार लगभग 30° है। इस तथ्य के बावजूद, पूर्व-पश्चिम सीमा उत्तर-दक्षिण सीमा से छोटी प्रतीत होती है।

गुजरात से अरुणाचल प्रदेश तक दो घंटे का समय अंतराल है। इसलिए, **मिर्ज़ापुर (उत्तर प्रदेश में) से गुजरने वाली भारत की मानक मध्याह्न रेखा (82°30'पूर्व) के** समय को पूरे देश के लिए **मानक समय** के रूप में लिया जाता है। जैसे ही कोई व्यक्ति दक्षिण से उत्तर की ओर बढ़ता है, अक्षांशीय सीमा दिन और रात की अवधि को प्रभावित करती है।

कर्क रेखा **आठ से होकर गुजरती है**

states in **India**: **Gujarat** (Jasdan), **Rajasthan** (Kalinjarh), **Madhya Pradesh** (Shajapur), **Chhattisgarh** (Sonhat), **Jharkhand** (Lohardaga), **West-Bengal** (Krishnanagar), **Tripura** (Udaipur) and **Mizoram** (Champhai).

Size and Extent –East-West Extent of Main Land India (Including Pak occupied **68° 7′ east to 97° 25′ east**

Kashmir-POK):	**longitude**
भारत की मुख्य भूमि का दक्षिण-उत्तर विस्तार:	**8° 4 ′ उत्तर से 37° 6 ′ उत्तरी अक्षांश तक**
स्थानिक विस्तार:	**8° 4 ' उत्तर से 37° 6 ' उत्तर अक्षांश और 68° 7 ' पूर्व से 97° 25 ' पूर्वी देशांतर।**

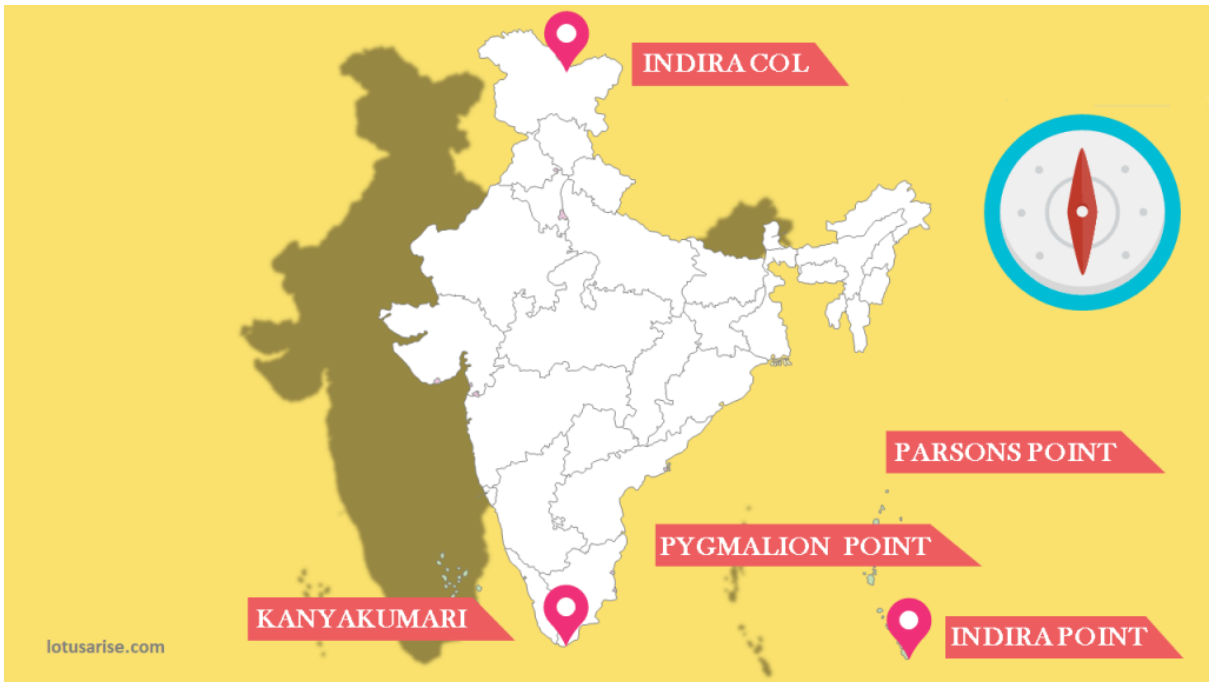

- देश का सबसे दक्षिणी बिंदु **पैग्मेलियन पॉइंट या इंदिरा पॉइंट 6° 45 ′ N अक्षांश** पर स्थित है।
- **कश्मीर में इंदिरा कोल** से कन्नियाकुमारी तक उत्तर-दक्षिण सीमा 3,214 किमी है।
- **कच्छ के रण से अरुणाचल प्रदेश तक** पूर्व-पश्चिम की चौड़ाई 2,933 किमी है।
- **32,87,263 वर्ग किमी क्षेत्रफल** के साथ भारत **दुनिया का सातवां सबसे बड़ा देश है।**
- विश्व के कुल क्षेत्रफल का लगभग **2.4 प्रतिशत है।**
- रेखा **देश के मध्य से होकर गुजरती है और इसे दो अक्षांशीय भागों में विभाजित करती है।**
- कर्क रेखा के उत्तर का क्षेत्रफल इसके दक्षिण में स्थित क्षेत्रफल का लगभग **दोगुना है।**

- 22° उत्तरी अक्षांश के दक्षिण में, देश एक प्रायद्वीप के रूप में हिंद महासागर में 800 किमी से अधिक की दूरी तक सिमट जाता है।

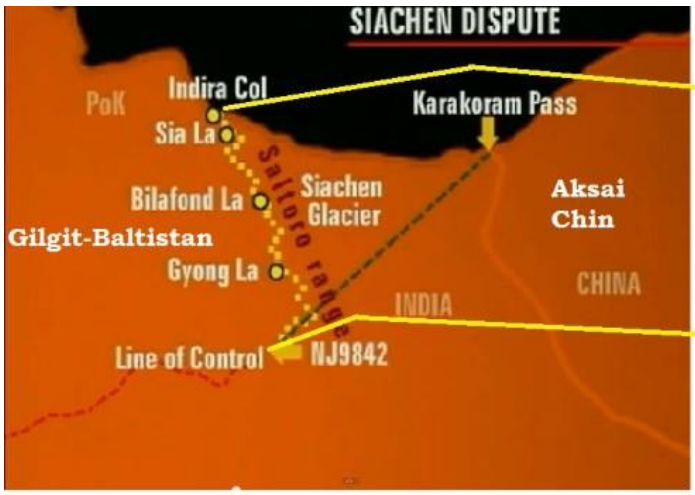

भारत की तटरेखा

भारत एक ऐसा देश है जो तीन तरफ से समुद्र से घिरा हुआ है। भारत में तटीय मैदान देश के पश्चिम और पूर्व में हैं। **7516.6 किमी** तक फैले भारत में तटीय मैदान दो प्रकार के हैं:

1. भारत का पूर्वी तटीय मैदान
2. भारत का पश्चिमी तटीय मैदान

भारत का पूर्वी तटीय मैदान

पूर्वी तटीय मैदान **उत्तर में पश्चिम बंगाल से लेकर दक्षिण में तमिलनाडु तक फैला है और आंध्र प्रदेश और ओडिशा से होकर गुजरता है। महानदी, कृष्णा, गोदावरी और कावेरी नदियों** के डेल्टा **पूर्वी तटीय मैदान में मौजूद हैं।** डेल्टा कृषि के लिए बहुत उपजाऊ और उत्पादक हैं। इसलिए, कृष्णा नदी के डेल्टा को ' **दक्षिण भारत का अन्न भंडार** ' कहा जाता है। पूर्वी तट को पुनः तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

- **उत्कल तट: चिल्का झील और कोलेरु झील** के बीच फैला हुआ , यह पश्चिमी तटीय मैदानों की तुलना में बहुत चौड़ा है और अत्यधिक वर्षा से गुजरता है। यहां उगाई जाने वाली कुछ फसलें चावल, नारियल और केला हैं।
- **आंध्र तट: कोलेरू झील और पुलिकट झील** के बीच फैला हुआ , आंध्र तट कृष्णा और गोदावरी नदियों के लिए एक बेसिन क्षेत्र बनाता है।
- **कोरोमंडल तट:** कोरोमंडल तट **तमिलनाडु में पुलिकट झील और कन्याकुमारी के बीच फैला हुआ है** । यह भारतीय तटरेखा गर्मियों में शुष्क रहती है और सर्दियों के दौरान उत्तर-पूर्वी मानसून के कारण वर्षा होती है।

चिल्का झील और पुलिकट झील (लैगून) पूर्वी तट की महत्वपूर्ण भौगोलिक विशेषताएँ हैं।

भारत का पश्चिमी तटीय मैदान

पश्चिमी तटीय मैदान **दक्षिण में केरल से लेकर कर्नाटक, गोवा और महाराष्ट्र से होते हुए उत्तर में गुजरात तक फैला हुआ है।** पश्चिमी तटीय मैदान उत्तर से दक्षिण तक 1500 किमी तक फैला है और इसकी चौड़ाई 10 से 25 किमी तक है। पश्चिमी महाद्वीपीय शेल्फ बंबई तट से सबसे चौड़ी है। यह स्थान तेल से समृद्ध है। मालाबार तट के किनारे कई खूबसूरत लैगून हैं जो इस जगह को एक पर्यटन स्थल बनाते हैं। पश्चिमी **तट पूर्वी तट की तुलना में संकरा है।**

पश्चिमी तट को आगे चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

- **कच्छ और काठियावाड़ तट:** कच्छ, जो पहले एक खाड़ी थी, सिंधु द्वारा गाद के जमाव से बनती है। कच्छ का क्षेत्र मानसून के दौरान उथले पानी से ढका रहता है और उत्तर में ग्रेट रण और पूर्व में लिटिल रण में विभाजित होता है। जबकि, काठियावाड़ कच्छ के दक्षिण में स्थित है।
- **कोंकण तट:** यह उत्तर में दमन से लेकर दक्षिण में गोवा तक फैला हुआ है। चावल और काजू इस क्षेत्र की दो महत्वपूर्ण फसलें हैं।
- **कनाडा तट:** यह मर्मगांव और मैंगलोर के बीच फैला हुआ है और लौह भंडार से समृद्ध है।
- **मालाबार तट:** मैंगलोर से कन्याकुमारी के बीच फैला मालाबार तट अपेक्षाकृत चौड़ा है। इस क्षेत्र में दक्षिणी केरल में तट के समानांतर चलने वाले लैगून भी शामिल हैं।

कोंकण तट = महाराष्ट्र तट और गोवा तट;
मालाबार तट = केरल और कर्नाटक तट।

S. No.	State	Length of the coastline (in Kilometres)
1	Gujarat	1214.7
2	Andhra Pradesh	973.7
3	Tamil Nadu	906.9
4	Maharashtra	652.6
5	Kerala	569.7
6	Odisha	476.4
7	Karnataka	280
8	Goa (with Daman & Diu)	160.5
9	West Bengal	157.5
10	Puducherry (Union Territory)	30.6

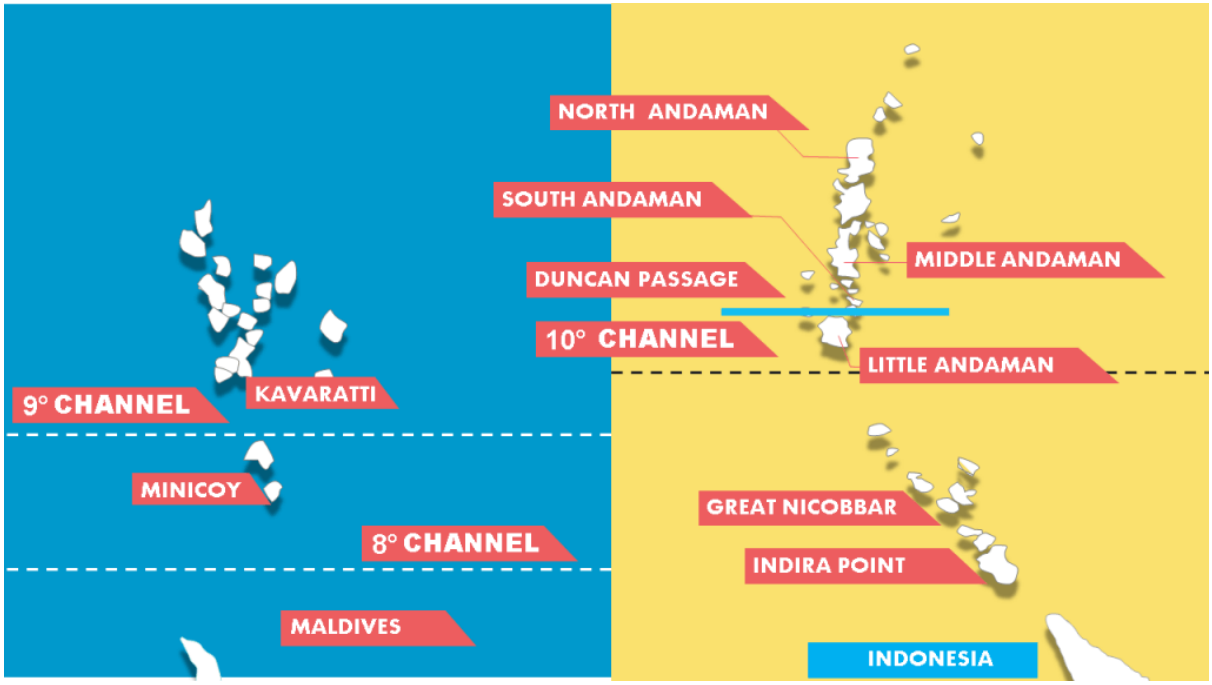

मानक समय (समय क्षेत्र)

को ग्रीनविच, लंदन, यूनाइटेड किंगडम में प्रधान मध्याह्न रेखा (0 देशांतर) के पूर्व या पश्चिम की दूरी के संदर्भ में मापा जाता है। यह 1 घंटे प्रति 15 डिग्री देशांतर के साथ समन्वित सार्वभौमिक समय (UTC) का संदर्भ बिंदु भी है।

उदाहरण के लिए: - 150 डिग्री पश्चिम (या 150 डब्ल्यू) देशांतर पर, समय 150 डिग्री को 15 डिग्री = यूटीसी, या यूटीसी-10 से 10 घंटे पीछे विभाजित किया जाना चाहिए।

भारत में **82 0 30 ई को भारतीय मानक समय (आईएसटी) के संदर्भ के रूप में लिया गया है** , जिसका अर्थ है कि **भारत यूटीसी से 5 घंटे और 30 मिनट आगे है।**

भारतीय मानक मेरिडियन **उत्तर प्रदेश** , **मध्य प्रदेश** , **छत्तीसगढ़** , **ओडिशा** और **आंध्र प्रदेश से होकर गुजरती है** ।

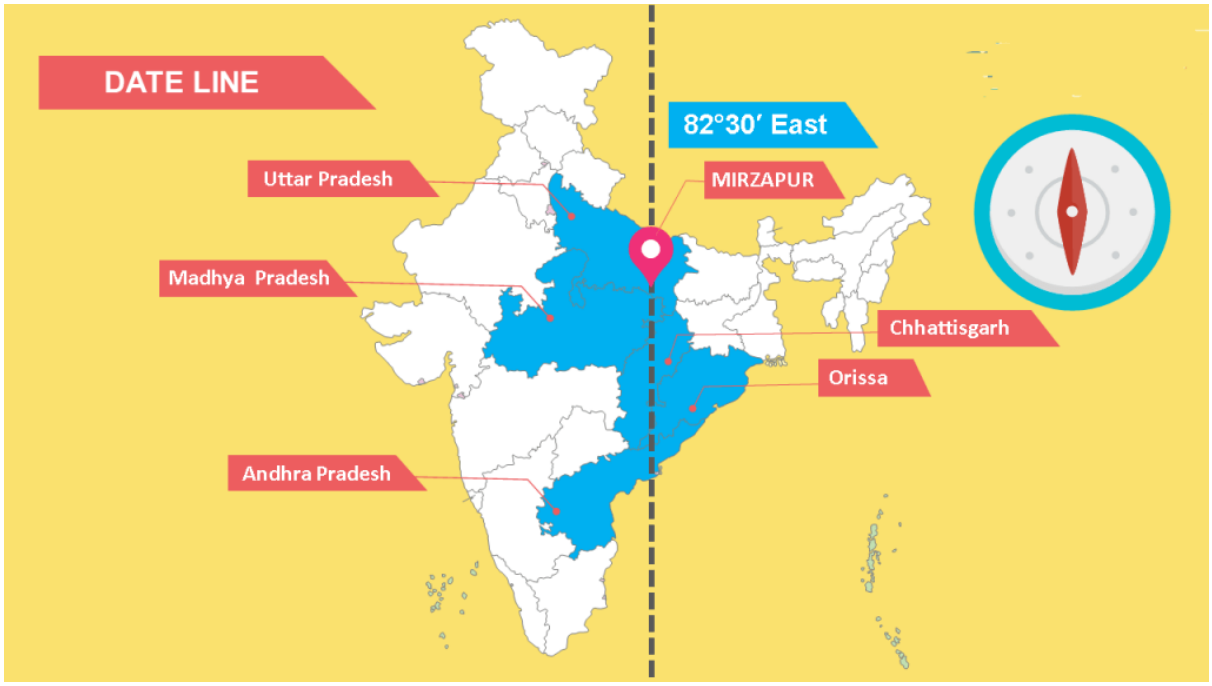

भारत, उष्णकटिबंधीय या शीतोष्ण देश?

- समशीतोष्ण भाग (कर्क रेखा के उत्तर) का क्षेत्रफल उष्णकटिबंधीय भाग से दोगुना है।
- लेकिन भारत को हमेशा दो अलग-अलग कारणों से एक उष्णकटिबंधीय देश माना गया है - भौतिक और सांस्कृतिक।

भौतिक भौगोलिक कारण

- यह देश हिमालय द्वारा शेष एशिया से अलग होता है।
- **उष्णकटिबंधीय मानसून** पर हावी है और समशीतोष्ण वायु द्रव्यमान हिमालय द्वारा अवरुद्ध हैं।
- जलवायु की दृष्टि से हिमालय के दक्षिण का संपूर्ण क्षेत्र अनिवार्य रूप से उष्णकटिबंधीय है: यद्यपि उत्तर भारत में कई स्थानों पर सर्दियों में रात का तापमान समशीतोष्ण भूमि में प्रचलित तापमान के स्तर तक नीचे आ सकता है, फिर भी साफ आसमान और तीव्र सूर्यातप से दिन का तापमान बढ़ जाता **है** । उष्णकटिबंधीय स्तर तक.

सांस्कृतिक भौगोलिक कारण

- बस्तियाँ, बीमारियाँ, कृषि और प्राथमिक आर्थिक गतिविधियाँ सभी उष्णकटिबंधीय प्रकृति की हैं।

भारत की सीमाएँ

संदर्भ: *गृह मंत्रालय*

- भारत की **15106.7 किमी** लंबी भूमि सीमा 17 राज्यों के 92 जिलों से होकर गुजरती है और **7516.6 किमी की समुद्र तट रेखा है [6100 किमी की मुख्य भूमि की तटरेखा + 1197 भारतीय द्वीपों की तटरेखा] जो** 13 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों (यूटी) को छूती है।
- **मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, दिल्ली, हरियाणा और तेलंगाना** को छोड़कर , देश के अन्य सभी राज्यों में एक या अधिक अंतरराष्ट्रीय सीमाएँ या समुद्र तट हैं और उन्हें सीमा प्रबंधन के दृष्टिकोण से **अग्रणी राज्य माना जा सकता है।**
- भारत की सबसे लंबी सीमा ***बांग्लादेश के साथ है*** जबकि सबसे छोटी सीमा अफगानिस्तान के साथ है।
- पड़ोसी देशों के साथ भारत की स्थलीय सीमाओं की लंबाई इस प्रकार है:

Name of the country	Length of the border (in Km)
Bangladesh	4,096.7
China	3,488
Pakistan	3,323
Nepal	1,751
Myanmar	1,643
Bhutan	699
Afghanistan	106
Total	**15,106.7**

गृह मंत्रालय

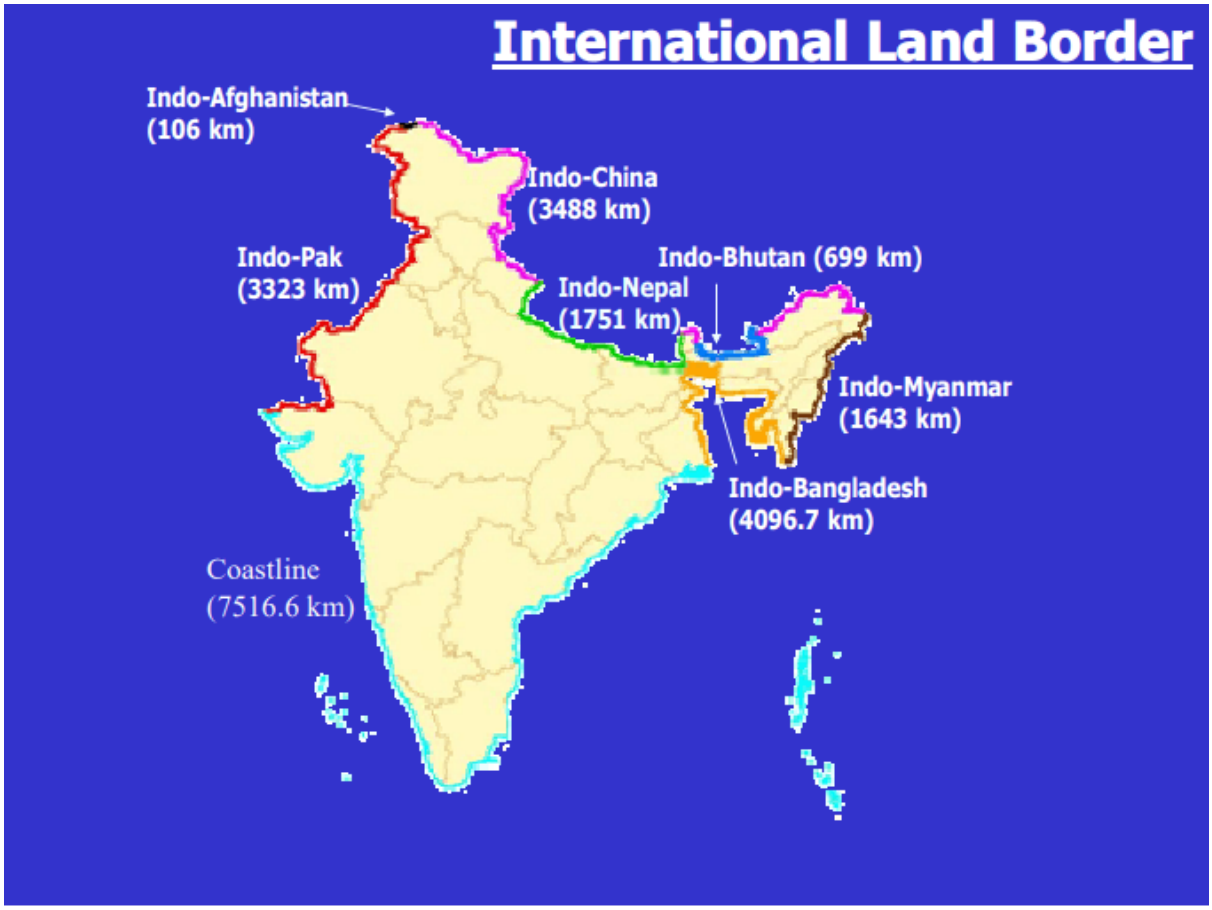

गृह मंत्रालय

चीन के साथ सीमा

- यह बांग्लादेश के साथ सीमा के बाद भारत की **दूसरी सबसे लंबी सीमा है।**
- पांच भारतीय राज्य, अर्थात् जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश चीन के साथ भारतीय सीमा को छूते हैं।
- चीन-भारत सीमा को आम तौर पर तीन क्षेत्रों में विभाजित किया गया है: (i) पश्चिमी क्षेत्र, (ii) मध्य क्षेत्र, और (iii) पूर्वी क्षेत्र।

पश्चिमी क्षेत्र

- भारत के जम्मू और कश्मीर राज्य को चीन के सिंकियांग (झिंजियांग) प्रांत से अलग करता है।
- पश्चिमी क्षेत्र की सीमा काफी हद तक जम्मू और कश्मीर राज्य के प्रति ब्रिटिश नीति का परिणाम है।
- चीन उत्तर-पूर्वी लद्दाख **के अक्साई चिन जिले , चांगमो घाटी, पैंगोंग त्सो** और **स्पोंगर त्सो** क्षेत्र के साथ-साथ पूर्वी लद्दाख की पूरी लंबाई में लगभग 5,000 वर्ग किमी की एक पट्टी पर अपना दावा करता है।

- उत्तरी कश्मीर में **हुजा-गिलगित क्षेत्र** के एक हिस्से पर भी दावा करता है *(जिसे 1963 में पाकिस्तान ने उसे सौंप दिया था)।*

मध्य क्षेत्र

- भारत के दो राज्य हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड इस सीमा को छूते हैं।

पूर्वी क्षेत्र

- भारत, तिब्बत और म्यांमार की सीमा पर दीफू दर्रा (***तालु दर्रा)*** के पास एक बिंदु तक चलती है।
- इस रेखा को आमतौर पर ब्रिटिश भारत के तत्कालीन विदेश सचिव सर हेनरी मैक महोन के नाम पर **मैक महोन रेखा के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने 1913-14 में शिमला समझौते में ग्रेट ब्रिटेन और तिब्बत के बीच सीमा समझौते पर बातचीत की थी।**

विवादित क्षेत्र

पश्चिमी क्षेत्र

- पश्चिमी क्षेत्र में भारत की लगभग 2152 किमी लंबी सीमा चीन के साथ लगती है।
- यह केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख (तत्कालीन जम्मू और कश्मीर राज्य) और चीन के झिंजियांग प्रांत के बीच है।
- **अक्साई चिन को लेकर क्षेत्रीय विवाद** है . भारत इसे तत्कालीन कश्मीर का हिस्सा होने का दावा करता है, जबकि चीन का दावा है कि यह शिनजियांग का हिस्सा है।
- अक्साई चिन पर विवाद का पता ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा चीन और उसके भारतीय उपनिवेश के बीच स्पष्ट रूप से कानूनी सीमा निर्धारित करने में विफलता से लगाया जा सकता है।
- भारत में ब्रिटिश शासन के समय, भारत और चीन के बीच दो सीमाएँ प्रस्तावित की गईं- जॉनसन लाइन और मैकडॉनल्ड्स लाइन।
    - **जॉनसन लाइन (1865 में प्रस्तावित) अक्साई चिन को तत्कालीन जम्मू-कश्मीर** (अब लद्दाख) में यानी भारत के नियंत्रण में दिखाती **है जबकि मैकडॉनल्ड लाइन (1893 में प्रस्तावित) इसे चीन के नियंत्रण में रखती है।**

- भारत जॉनसन लाइन को चीन के साथ सही, वैध राष्ट्रीय सीमा मानता है, जबकि दूसरी ओर, चीन मैकडॉनल्ड लाइन को भारत के साथ सही सीमा मानता है।

- वर्तमान में वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) लद्दाख के भारतीय क्षेत्रों को अक्साई चिन से अलग करने वाली रेखा है। यह चीनी अक्साई चिन दावा रेखा के समवर्ती है।

मध्य क्षेत्र

- इस क्षेत्र में, भारत चीन के साथ लगभग 625 किमी लंबी सीमा साझा करता है जो लद्दाख से नेपाल तक जलक्षेत्र के साथ चलती है।

- इस क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड की सीमा तिब्बत (चीन) से छूती है। इस क्षेत्र में सीमा को लेकर दोनों पक्षों में ज्यादा मतभेद नहीं है.

पूर्वी क्षेत्र

- इस क्षेत्र में भारत चीन के साथ 1,140 किमी लंबी सीमा साझा करता है।

- यह भूटान की पूर्वी सीमा से तिब्बत, भारत और म्यांमार की सीमा पर तालु र्दे के पास एक बिंदु तक चलती है।

- इस सीमा रेखा को **मैकमोहन रेखा कहा जाता है।**

- **चीन मैकमोहन रेखा को अवैध** और अस्वीकार्य मानता है और दावा करता है कि जिन तिब्बती प्रतिनिधियों ने शिमला में आयोजित 1914 कन्वेंशन पर हस्ताक्षर किए थे, जिसमें मैकमोहन रेखा को मानचित्र पर चित्रित किया गया था, उन्हें ऐसा करने का अधिकार नहीं था।

भारत-नेपाल सीमा

- भारत के पांच राज्य, अर्थात् उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और सिक्किम भारत के साथ नेपाली सीमा को छूते हैं। भारतीय और नेपाल के बीच माल और लोगों की अप्रतिबंधित आवाजाही के कारण यह सीमा **छिद्रपूर्ण है।**

- **शिवालिक पर्वतमाला** की तलहटी के साथ चलता है।

विवादित क्षेत्र

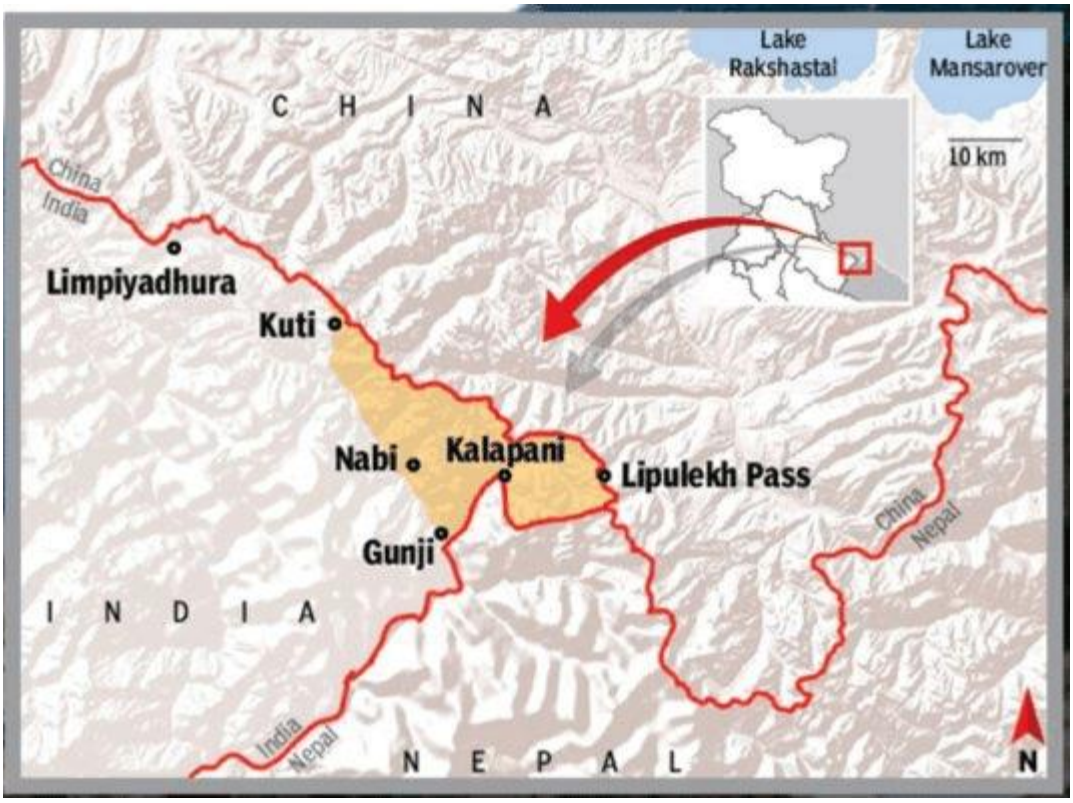

- **कालापानी:** कालापानी एक घाटी है जो उत्तराखंड के पिथौरागढ जिले के एक हिस्से के रूप में भारत द्वारा प्रशासित है। यह कैलाश मानसरोवर मार्ग पर स्थित है। भारत के नवीनतम राजनीतिक मानचित्र ने उस क्षेत्र पर भारतीय दावों को दोहराया है जिसके बारे में नेपाल का कहना है कि यह उसका सबसे पश्चिमी भाग है। भारत इस ऐतिहासिक क्षेत्र को उत्तराखंड का हिस्सा होने का दावा करता है।
    - कालापानी क्षेत्र में काली नदी भारत और नेपाल के बीच सीमा का निर्धारण करती है।
    - **1816 में नेपाल साम्राज्य और ब्रिटिश भारत (एंग्लो-नेपाली युद्ध** के बाद) द्वारा हस्ताक्षरित **सुगौली की संधि** में काली नदी को भारत के साथ नेपाल की पश्चिमी सीमा के रूप में स्थित किया गया था। नदी के स्रोत का पता लगाने में विसंगति के कारण भारत और नेपाल के बीच सीमा विवाद पैदा हो गया, प्रत्येक देश ने अपने-अपने दावों का समर्थन करने वाले मानचित्र तैयार किए।
- **सुस्ता: सुस्ता क्षेत्र भारत (उत्तर प्रदेश) और नेपाल के** बीच विवादित क्षेत्रों में से एक है।
    - **गंडक नदी (नेपाल में नारायणी नदी कहा जाता है)** के तट पर स्थित है।
    - सुस्ता क्षेत्र में विवाद का मुख्य कारण **गंडक नदी का रास्ता बदलना** है .
    - 1816 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और नेपाल के बीच हस्ताक्षरित सुगौली संधि के अनुसार, **गंडक नदी अंतरराष्ट्रीय सीमा है और नदी का पूर्वी भाग भारत का है और नदी का पश्चिमी भाग नेपाल का है।** जिस समय संधि पर हस्ताक्षर किये गये उस समय **सुस्ता गांव नदी के**

पश्चिम में स्थित था। लेकिन, पिछले कुछ वर्षों में, **गंडक नदी ने अपना मार्ग बदल दिया और सुस्ता नदी के पूर्वी हिस्से में चली गई , जो अब नदी के भारतीय हिस्से में है।**

भारत-भूटान सीमा

- काफी शांतिपूर्ण सीमा है और दोनों देशों के बीच कोई सीमा विवाद नहीं है.

भारत-पाकिस्तान सीमा

- **रेडक्लिफ पुरस्कार** के तहत देश के विभाजन का परिणाम है, जिसके अध्यक्ष **सर सिरिल रेडक्लिफ थे।**
- जम्मू-कश्मीर, **सर क्रीक** प्रमुख विवादित क्षेत्र हैं।

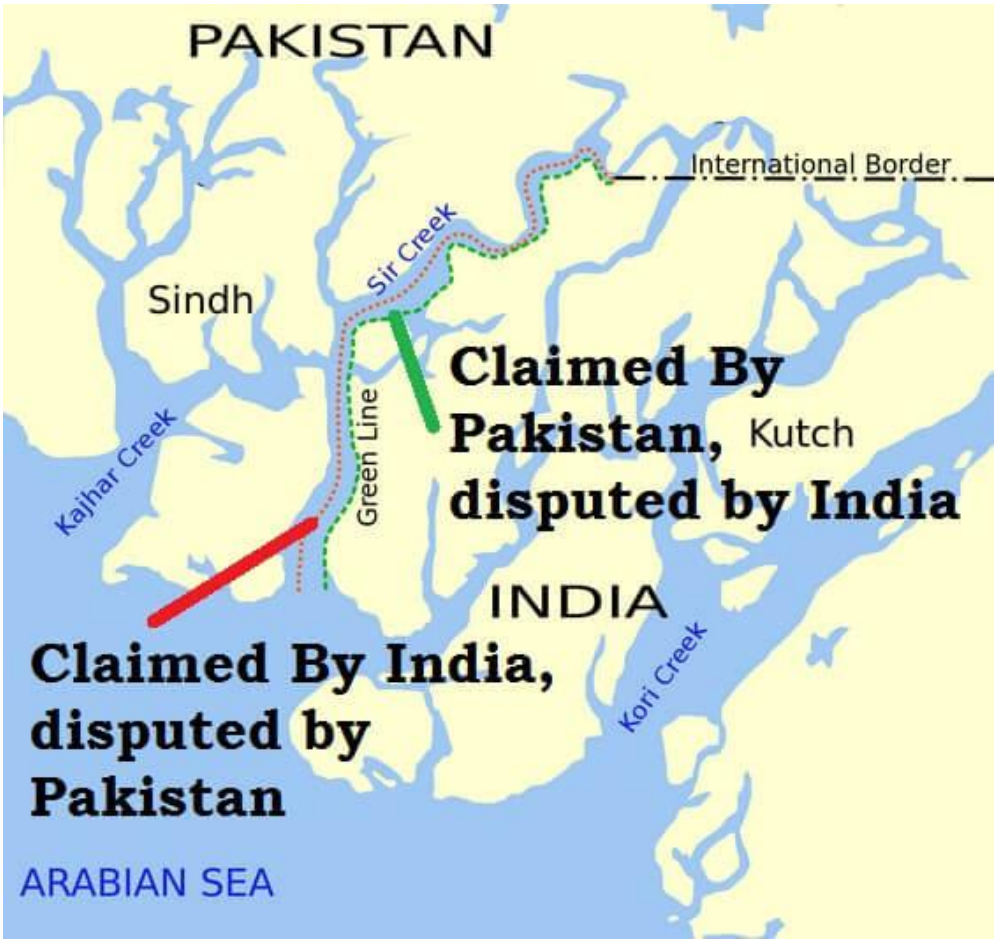

विवादित क्षेत्र

- **जम्मू और कश्मीर, पाकिस्तान के कब्जे वाला कश्मीर और गिलगित-बाल्टिस्तान:** पाकिस्तान ने जम्मू और कश्मीर में लगभग 78,000 वर्ग किमी भारतीय क्षेत्र पर अवैध और जबरन कब्जा कर रखा है। इसके अलावा, 1963 के तथाकथित चीन-पाकिस्तान सीमा समझौते के तहत, पाकिस्तान ने अवैध रूप से पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में 5,180 वर्ग किमी चीन को सौंप दिया।
- **सियाचिन ग्लेशियर:** सियाचिन ग्लेशियर भारत-पाकिस्तान के बीच वास्तविक जमीनी स्थिति रेखा के ठीक पूर्व में हिमालय के पूर्वी काराकोरम में स्थित है।
    - **(ऑपरेशन मेघदूत)** से भारत के प्रशासन के अधीन है।
- **साल्टोरो रिज:** साल्टोरो पर्वत पर्वत श्रृंखला काराकोरम हाइट्स या साल्टोरो रिज की एक उपश्रेणी है। वे काराकोरम के मध्य में, सियाचिन ग्लेशियर के दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित हैं।
    - भारत उन पर जम्मू-कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश का हिस्सा होने और पाकिस्तान द्वारा गिलगित-बाल्टिस्तान का हिस्सा होने का दावा करता है।

- 1984 में, भारत ने सीमा की मुख्य चोटियों और दर्रों पर सैन्य नियंत्रण ग्रहण कर लिया, जबकि पाकिस्तानी सेना पश्चिम की ओर हिमनद घाटियों में थी।

- **सर क्रीक** : यह कच्छ के रण की दलदली भूमि में भारत और पाकिस्तान के बीच विवादित जल की 96 किमी लंबी पट्टी है।
    - सिंध की तत्कालीन सरकार और कच्छ के राव महाराज के बीच हस्ताक्षरित *1914 के बॉम्बे सरकार के प्रस्ताव के पैराग्राफ 9 और 10* की अलग-अलग व्याख्या)।
    - भारत और पाकिस्तान के बीच सर क्रीक क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सीमा और अंतर्राष्ट्रीय समुद्री सीमा रेखा (IMBL) का सीमांकन नहीं किया गया है।

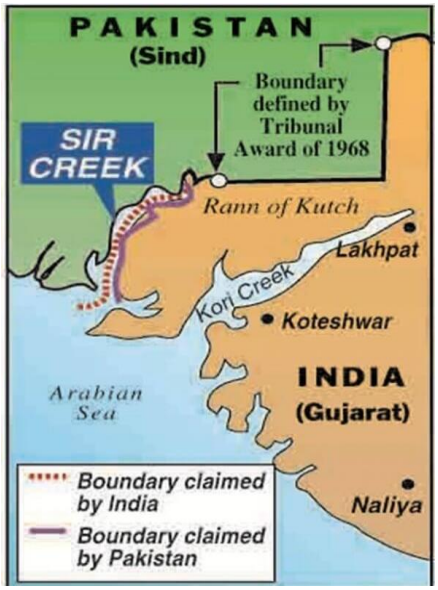

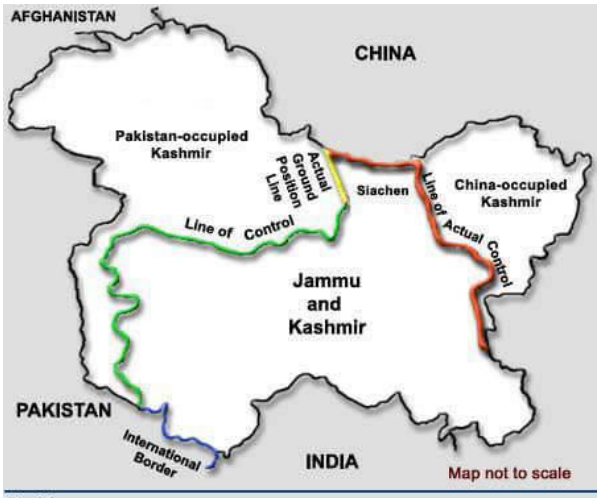

भारत-बांग्लादेश सीमा

- बांग्लादेश के साथ भारत की 4,096 किमी लंबी सीमा सबसे लंबी है।
- यह सीमा **रेडक्लिफ अवार्ड के तहत निर्धारित की गई है** जिसने तत्कालीन बंगाल प्रांत को दो भागों में विभाजित किया था।

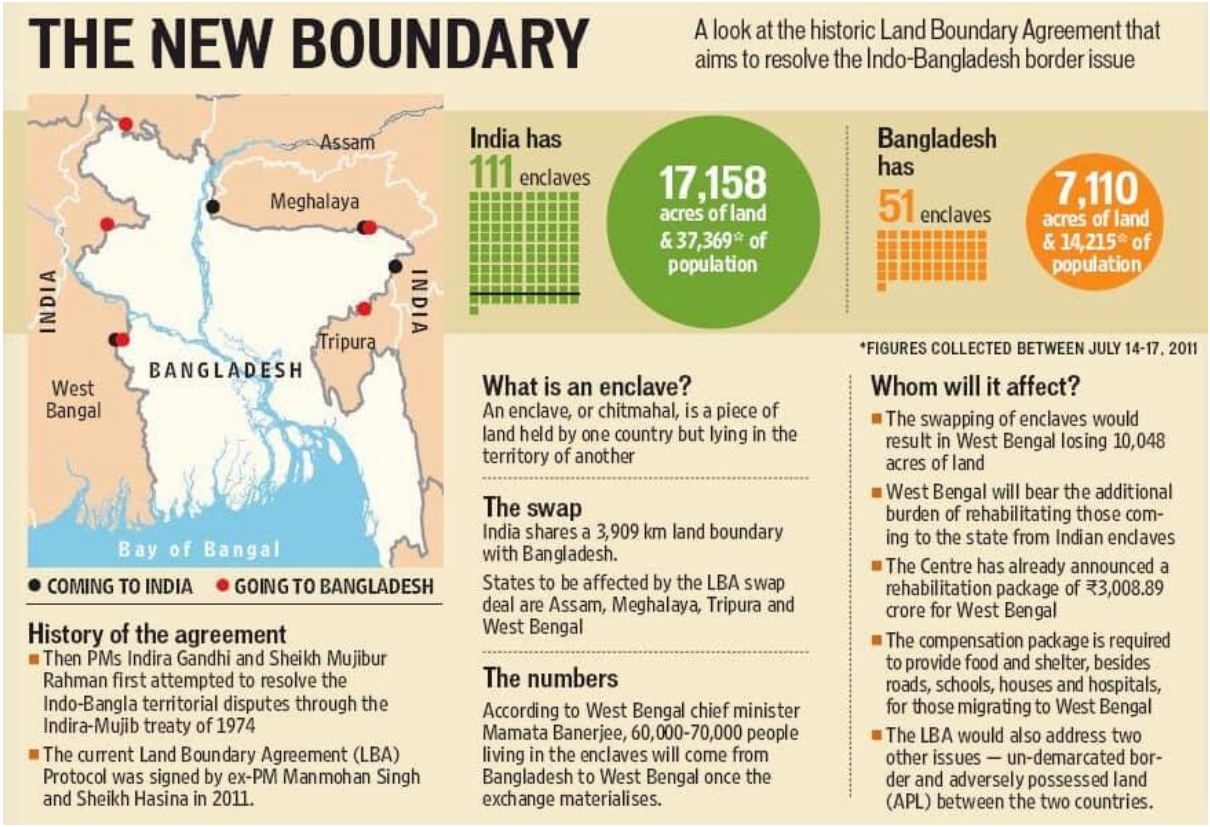

भारत-म्यांमार सीमा

- **अय्यारवाडी [इरावाडी]** के बीच जलक्षेत्र के साथ-साथ चलती है।
- यह घने जंगलों वाले क्षेत्रों से होकर गुजरता है, जिसमें भारत की ओर मिज़ो हिल्स, मणिपुर और नागालैंड और म्यांमार की ओर चिन हिल्स, नागा हिल्स और काचिन राज्य शामिल हैं।

INDIA
NORTH-EAST ZONE MAP
N
ARUNACHAL PRADESH
Itanagar
SIKKIM
Gangtok
BHUTAN
NEPAL
Dispur
ASSAM
NAGALAND
Kohima
Shillong
MEGHALAYA
BIHAR
Imphal
BANGLADESH
MANIPUR
Agartala
Aizawl
MYANMAR
JHARKHAND
TRIPURA
MIZORAM
WEST BENGAL
ODISHA
LEGEND
International Bdy.
State Boundary
Country Capital
State Capital
Map not to Scale
Copyright © 2016 www.mapsofindia.com

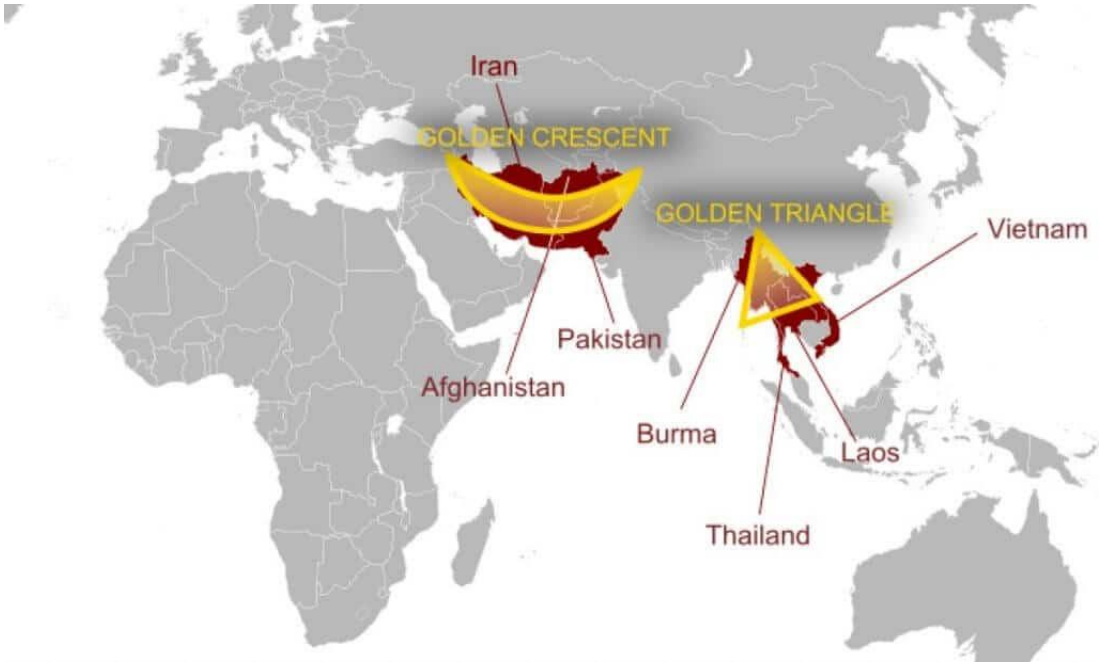

भारत-श्रीलंका सीमा

- भारत और श्रीलंका एक संकीर्ण और उथले समुद्र द्वारा एक दूसरे से अलग होते हैं जिसे **पाक जलडमरूमध्य कहा जाता है।**
- भारत में तमिलनाडु तट पर **धनुषकोडी** श्रीलंका में **जाफना प्रायद्वीप** में **तलाईमनार से केवल 32 किमी दूर है।** ये दोनों बिंदु टापुओं के एक समूह से जुड़े हुए हैं जो **एडम ब्रिज बनाते हैं।**
    - हालाँकि, जहाँ तक भारत-श्रीलंका सीमा मुद्दे का सवाल है, कुल मिलाकर शांति कायम है, लेकिन इस सवाल पर तनाव था कि **पाक जलडमरूमध्य में कच्चाथीवू द्वीप का मालिक कौन है।** इसे भारत ने 1974 में श्रीलंका को दे दिया था।

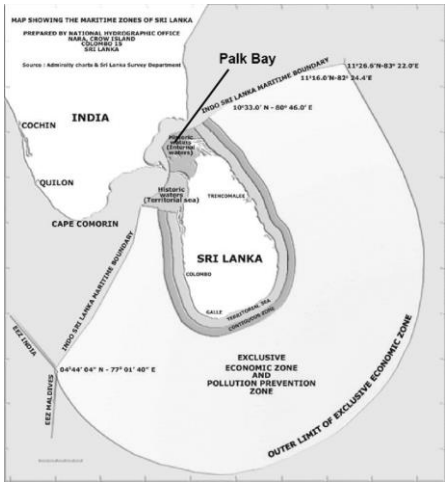

यूनिट 2 - भारतीय नदी प्रणाली

अधिकांश नदियाँ अपना जल बंगाल की खाड़ी में छोड़ती हैं। कुछ नदियाँ देश के पश्चिमी भाग से होकर बहती हैं और अरब सागर में विलीन हो जाती हैं। अरावली पर्वतमाला के उत्तरी भाग, लद्दाख के कुछ हिस्से और थार रेगिस्तान के शुष्क क्षेत्रों में अंतर्देशीय जल निकासी है। भारत की सभी प्रमुख नदियाँ तीन मुख्य जलक्षेत्रों में से एक से निकलती हैं-

- हिमालय और काराकोरम पर्वतमाला
- छोटा नागपुर पठार और विंध्य और सतपुड़ा पर्वतमाला
- पश्चिमी घाट

भारत की जल निकासी प्रणालियों का वर्गीकरण

जलग्रहण क्षेत्र के आकार के आधार पर जल निकासी प्रणालियाँ

विभाजन	जलग्रहण क्षेत्र का आकार वर्ग किमी में
प्रमुख नदी	**20,000**
मध्यम नदी	**20,000 – 2,000**
छोटी नदी	**2,000 और उससे कम**

उत्पत्ति के आधार पर जल निकासी प्रणालियाँ

- हिमालय की नदियाँ: **बारहमासी नदियाँ** : सिंधु, गंगा, ब्रह्मपुत्र और उनकी सहायक नदियाँ।
- प्रायद्वीपीय नदियाँ: **गैर-बारहमासी नदियाँ** : महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, नर्मदा, और तापी और उनकी सहायक नदियाँ।

जल निकासी के प्रकार के आधार पर जल निकासी प्रणालियाँ

भारत की नदी प्रणालियों को चार समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

- हिमालय की नदियाँ, दक्कन की नदियाँ, और तटीय नदियाँ जो समुद्र में गिरती हैं।

- अंतर्देशीय जल निकासी बेसिन (**एंडोरहेइक बेसिन**) की नदियाँ। पश्चिमी राजस्थान में सांभर जैसी नदियाँ मुख्यतः मौसमी प्रकृति की हैं, जो अंतर्देशीय घाटियों और नमक की झीलों में बहती हैं। कच्छ के रण में नमक के रेगिस्तान से होकर बहने वाली एकमात्र नदी लूनी है।

समुद्र की ओर उन्मुखीकरण पर आधारित जल निकासी प्रणालियाँ

- बंगाल की खाड़ी में जल निकासी (बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ) (पूर्व की ओर बहने वाली नदियाँ)
- अरब सागर जल निकासी (अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ) (पश्चिम की ओर बहने वाली नदियाँ)।
- नर्मदा (भारत की सबसे पवित्र नदी) और ताप्ती नदियाँ एक दूसरे के लगभग समानांतर बहती हैं लेकिन विपरीत दिशाओं (पश्चिम की ओर बहने) में खुद को खाली कर लेती हैं। दोनों नदियाँ घाटी को जलोढ़ मिट्टी से समृद्ध बनाती हैं और अधिकांश भूमि पर **सागौन के जंगल हैं।**

बंगाल की खाड़ी जल निकासी	**अरब सागर जल निकासी**
नदियाँ जो बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं	अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ
पूर्व की ओर बहने वाली नदियाँ	पश्चिम की ओर बहने वाली नदियाँ
देश का ~77 प्रतिशत अपवाह क्षेत्र बंगाल की खाड़ी की ओर उन्मुख है	देश का लगभग 23 प्रतिशत अपवाह क्षेत्र अरब सागर की ओर उन्मुख है
गंगा, ब्रह्मपुत्र, महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, पेनेरु, पेन्नीयार, वैगई, आदि।	सिंधु, **नर्मदा** , **तापी** , **साबरमती** , **माही** और बड़ी संख्या में तेजी से बहने वाली पश्चिमी तट की नदियाँ सह्याद्रि से उतरती हैं।

- बंगाल की खाड़ी के जल निकासी और अरब सागर के जल निकासी द्वारा कवर किया गया क्षेत्र उनके माध्यम से निकलने वाले पानी की मात्रा के समानुपाती नहीं है।

90 प्रतिशत से अधिक पानी बंगाल की खाड़ी में बह जाता है; शेष अरब सागर में चला जाता है या अंतर्देशीय जल निकासी बनाता है।

विभिन्न नदियों द्वारा जल का योगदान

नदी	**पानी का % योगदान**

ब्रह्मपुत्र	**~40**
गंगा	**~25**
गोदावरी	**~6.4**
महानदी	**~3.5**
कृष्णा	**~3.4**
नर्मदा	**~ 2.9**
आराम	**~20**

भारत में प्रमुख नदी प्रणाली या जल निकासी प्रणाली

हिमालयी नदी प्रणालियाँ

- सिंधु नदी प्रणाली
- ब्रह्मपुत्र नदी प्रणाली
- गंगा नदी प्रणाली

प्रायद्वीपीय नदी प्रणालियाँ

- गोदावरी नदी प्रणाली
- कृष्णा नदी प्रणाली
- कावेरी नदी प्रणाली
- महानदी नदी प्रणाली

पश्चिम की ओर बहने वाली प्रायद्वीपीय नदी प्रणालियाँ

- नर्मदा नदी प्रणाली
- ताप्ती नदी तंत्र

- साबरमती नदी
- माही नदी
- लूनी नदी

सिंधु नदी प्रणाली

सिंधु **तिब्बत में मानसरोवर झील के पास कैलाश पर्वतमाला के उत्तरी ढलान से निकलती है।**

- भारत और पाकिस्तान दोनों में इसकी बड़ी संख्या में सहायक नदियाँ हैं और स्रोत से कराची के पास बिंदु तक इसकी कुल लंबाई लगभग 2897 किमी है, जहाँ यह अरब सागर में गिरती है, जिसमें से लगभग 700 किमी भारत में पड़ती है।
- यह जम्मू-कश्मीर में एक सुरम्य घाटी का निर्माण करते हुए भारतीय क्षेत्र में प्रवेश करती है।
- कश्मीर क्षेत्र में, यह कई सहायक नदियों - जास्कर, श्योक, नुब्रा और हुंजा से जुड़ती है।
- यह लद्दाख रेंज और लेह में जास्कर रेंज के बीच बहती है।
- यह अटॉक के पास 5181 मीटर गहरी घाटी से होकर हिमालय को पार करती है, जो नंगा पर्वत के उत्तर में स्थित है।

भारत में सिंधु नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ झेलम, रावी, चिनाब, ब्यास और सतलज हैं।

ब्रह्मपुत्र नदी प्रणाली

ब्रह्मपुत्र **का उद्गम मानसरोवर झील से होता है, जो सिंधु और सतलुज का भी स्रोत है।**

- यह 3848 किमी लंबी है, जो सिंधु नदी से थोड़ी लंबी है।
- इसका अधिकांश कोर्स भारत से बाहर है।
- यह हिमालय के समानांतर पूर्व दिशा में बहती है। जब यह नामचा बरवा पहुंचता है, तो यह इसके चारों ओर यू-टर्न लेता है और भारत के अरुणाचल प्रदेश राज्य में प्रवेश करता है।
- यहां इसे **दिहांग नदी के नाम से जाना जाता है** । भारत में, यह अरुणाचल प्रदेश और असम राज्यों से होकर बहती है और कई सहायक नदियों से जुड़ी हुई है।
- असम में ब्रह्मपुत्र की अधिकांश लंबाई में एक लट में चैनल है।

तिब्बत में इस नदी को सांगपो के नाम से जाना जाता है । इसमें पानी की मात्रा कम होती है और तिब्बत क्षेत्र में गाद भी कम होती है। लेकिन भारत में, नदी भारी वर्षा वाले क्षेत्र से होकर गुजरती है, और इस प्रकार, वर्षा के दौरान नदी

में बड़ी मात्रा में पानी और काफी मात्रा में गाद होती है। आयतन की दृष्टि से यह भारत की सबसे बड़ी नदियों में से एक मानी जाती है। यह असम और बांग्लादेश में आपदा पैदा करने के लिए जाना जाता है।

गंगा नदी प्रणाली

- गंगा **भागीरथी के रूप में गंगोत्री ग्लेशियर से निकलती है।**
- गढ़वाल मंडल में देवप्रयाग पहुंचने से पहले, मंदाकिनी, पिंडर, धौलीगंगा और बिशनगंगा नदियाँ अलकनंदा में और भेलिंग नाला भागीरथी में विलीन हो जाती हैं।
- पिंडर नदी पूर्वी त्रिशूल से निकलती है और नंदा देवी करण प्रयाग में अलकनंदा से मिल जाती है। मंदाकिनी का संगम रूद्रप्रयाग में होता है।
- The water from both Bhagirathi and the Alaknanda flows in the name of the Ganga at Devprayag.

The concept of Panch Prayag

1. **Vishnuprayag**: where the river Alaknanda meets river Dhauli Ganga
2. **Nandprayag**: where river Alaknanda meets river Nandakini
3. **Karnaprayag**: where river Alaknanda meets river Pinder
4. **Rudraprayag**: where river Alaknanda meets river Mandakini
5. **Devprayag**: where river Alaknanda meets river Bhagirathi -GANGA

The principal tributaries of the Ganga are Yamuna, Damodar, Sapta Kosi, Ram Ganga, Gomati, Ghaghara, and Son. The river after traveling a distance of 2525 km from its source meets the Bay of Bengal.

Yamuna River System

- यमुना **नदी गंगा नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी है।**
- यह उत्तराखंड के बंदरपूंछ शिखर पर **यमुनोत्री ग्लेशियर से निकलती है।**
- नदी में शामिल होने वाली मुख्य सहायक नदियों में सिन, हिंडन, बेतवा केन और चंबल शामिल हैं।
- टोंस यमुना की सबसे बड़ी सहायक नदी है ।

- नदी का जलग्रहण क्षेत्र दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान और मध्य प्रदेश राज्यों तक फैला हुआ है।

नर्मदा नदी प्रणाली

- नर्मदा मध्य भारत में स्थित एक नदी है।
- यह मध्य प्रदेश राज्य में अमरकंटक पहाड़ी के शिखर तक निकलती है।
- यह उत्तर भारत और दक्षिण भारत के बीच पारंपरिक सीमा को रेखांकित करता है।
- यह प्रायद्वीपीय भारत की प्रमुख नदियों में से एक है। केवल नर्मदा, ताप्ती और माही नदियाँ पूर्व से पश्चिम की ओर बहती हैं।
- यह नदी मध्य प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र राज्यों से होकर बहती है।
- यह गुजरात के भरूच जिले में अरब सागर में गिरती है।

तापी नदी प्रणाली

- यह एक मध्य भारतीय नदी है। यह पूर्व से पश्चिम की ओर बहने वाली प्रायद्वीपीय भारत की सबसे महत्वपूर्ण नदियों में से एक है।
- इसका उद्गम दक्षिणी मध्य प्रदेश राज्य की पूर्वी सतपुड़ा श्रेणी से होता है।
- यह पश्चिम दिशा में बहती है, मध्य प्रदेश के निमाड़ क्षेत्र, पूर्वी विदर्भ क्षेत्र और महाराष्ट्र के खानदेश जैसे कुछ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थानों, दक्कन के पठार और दक्षिण गुजरात के उत्तर-पश्चिमी कोने में अरब सागर की कैम्बे की खाड़ी में गिरने से पहले बहती है।
- तापी नदी का बेसिन ज्यादातर महाराष्ट्र राज्य के पूर्वी और उत्तरी जिलों में स्थित है।
- यह नदी मध्य प्रदेश और गुजरात के कुछ जिलों को भी कवर करती है।
- तापी नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ वाघुर नदी, आनेर नदी, गिरना नदी, पूर्णा नदी, पंजारा नदी और बोरी नदी हैं।

गोदावरी नदी प्रणाली

- गोदावरी **नदी भूरे पानी वाली भारत की दूसरी सबसे लंबी नदी है।**
- नदी को अक्सर दक्षिण (दक्षिण) गंगा या वृद्ध (पुरानी) गंगा के रूप में जाना जाता है।
- यह एक मौसमी नदी है, जो गर्मियों के दौरान सूख जाती है, और मानसून के दौरान चौड़ी हो जाती है।

- यह नदी महाराष्ट्र में नासिक के पास **त्र्यंबकेश्वर से निकलती है।**
- यह 1,465 किलोमीटर (910 मील) तक पूर्व की ओर बहती है, **महाराष्ट्र (48.6%), तेलंगाना (18.8%), आंध्र प्रदेश (4.5%), छत्तीसगढ़ (10.9%) और ओडिशा (5.7%) राज्यों में बहती है और** खाड़ी में गिरती है। बंगाल का.
- नदी राजमुंदरी में एक उपजाऊ डेल्टा बनाती है।
- इस नदी के तट पर कई तीर्थ स्थल हैं, नासिक (MH), भद्राचलम (TS), और त्र्यंबक। इसकी कुछ सहायक नदियों में प्राणहिता (पेनुगंगा और वर्दा का संयोजन), इंद्रावती नदी, बिन्दुसार, सबरी और मंजीरा शामिल हैं।
- एशिया का सबसे बड़ा रेल-सह-सड़क पुल जो कोव्वुर और राजमुंदरी को जोड़ता है, गोदावरी नदी पर स्थित है।

कृष्णा नदी प्रणाली

- कृष्णा भारत की सबसे लंबी नदियों में से एक है, जो महाराष्ट्र के महाबलेश्वर से निकलती है।
- यह सांगली से होकर बहती है और बंगाल की खाड़ी में गिरती है।
- यह नदी महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश राज्यों से होकर बहती है।
- **तुंगभद्रा नदी** मुख्य सहायक नदी है जो स्वयं पश्चिमी घाट से निकलने वाली तुंगा और भद्रा नदियों से बनती है।
- दूधगंगा नदियाँ, कोयना, भीमा, मल्लप्रभा, डिंडी, घाटप्रभा, वार्ना, येरला और मुसी कुछ अन्य सहायक नदियाँ हैं।

कावेरी नदी प्रणाली

- कावेरी को दक्षिण भारत की गंगा ***"दक्षिण भारत की गंगा"*** **भी कहा जाता है ।**
- इसका उद्गम पश्चिमी घाट में स्थित तालाकावेरी से होता है।
- यह कर्नाटक के कोडागु जिले का एक प्रसिद्ध तीर्थ और पर्यटन स्थल है।
- नदी का उद्गम स्थल कर्नाटक राज्य की पश्चिमी घाट श्रृंखला और कर्नाटक से तमिलनाडु तक है।
- यह नदी बंगाल की खाड़ी में गिरती है। यह नदी कृषि के लिए सिंचाई का समर्थन करती है और इसे दक्षिण भारत के प्राचीन राज्यों और आधुनिक शहरों के समर्थन का साधन माना जाता है।

- नदी की कई सहायक नदियाँ हैं जिन्हें अर्कावथी, शिम्शा, हेमावती, कपिला, शिम्शा, होन्नुहोल, अमरावती, लक्ष्मण काबिनी, लोकापावनी, भवानी, नोय्यल और तीर्थ कहा जाता है।

महानदी नदी प्रणाली

- महानदी का उद्गम मध्य भारत की सतपुड़ा श्रेणी से होता है और यह पूर्वी भारत की एक नदी है।
- यह पूर्व में बंगाल की खाड़ी में बहती है। महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, झारखंड और उड़ीसा राज्य की नदी नाले।
- सबसे बड़ा बांध, हीराकुंड बांध नदी पर बनाया गया है।

3. झीलें एवं झीलों के प्रकार

झीलें भूमि की सतह के खोखले भाग पर स्थित होती हैं जिनमें पानी जमा होता है और आकार, आकार, गहराई और निर्माण के तरीके में काफी भिन्न होता है।

- छोटे तालाब या पूल से बड़े नहीं होते, लेकिन बड़े तालाब इतने व्यापक होते हैं कि उन्हें समुद्र का नाम दिया जाता है, उदाहरण के लिए कैस्पियन सागर।
- यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि झीलें पृथ्वी की परत की केवल अस्थायी विशेषता हैं और अंततः जल निकासी और गाद जमा होने से समाप्त हो जाती हैं।
- विश्व की अधिकांश झीलें नदियों द्वारा पोषित मीठे पानी की झीलें हैं
- लेकिन उन क्षेत्रों में जहां वाष्पीकरण वर्षा से अधिक है और केवल कुछ धाराएं झील को भरती हैं, वहां खारे पानी की झीलें बनती हैं जैसे मृत सागर और यूटा की ग्रेट साल्ट लेक।

झीलें पृथ्वी की हलचल से निर्मित होती हैं

टेक्टोनिक झीलें

- पृथ्वी की पपड़ी के मुड़ने, झुकने और टूटने के कारण, टेक्टोनिक अवसाद उत्पन्न होते हैं जो विशाल आकार और गहराई की झीलों को जन्म देते हैं।
- उदाहरण ⟶ टिटिकाका झील (एंडीज में) - दुनिया की सबसे ऊंची झील, कैस्पियन सागर (दुनिया की सबसे बड़ी झील और अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी यानी झील सुपीरियर से 5 गुना बड़ी)

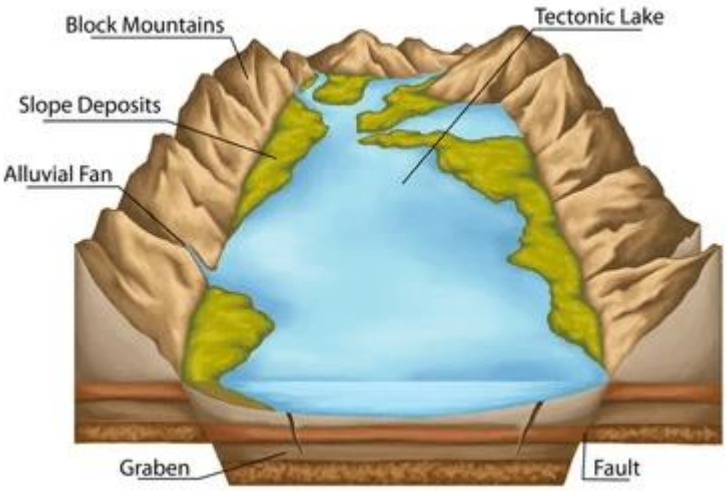

रिफ्ट वैली झीलें

- भ्रंश के कारण, दो समानांतर भ्रंशों के बीच भूमि के धंसने से एक भ्रंश घाटी का निर्माण होता है जो गहरी, संकीर्ण और लम्बी प्रकृति की होती है।

- इन कुंडों में पानी जमा होता है और इनका तल अक्सर समुद्र तल से नीचे होता है
- जैसे. तांगानिका झील (विश्व की सबसे गहरी झील) और मृत सागर (विश्व की सबसे निचली झील)

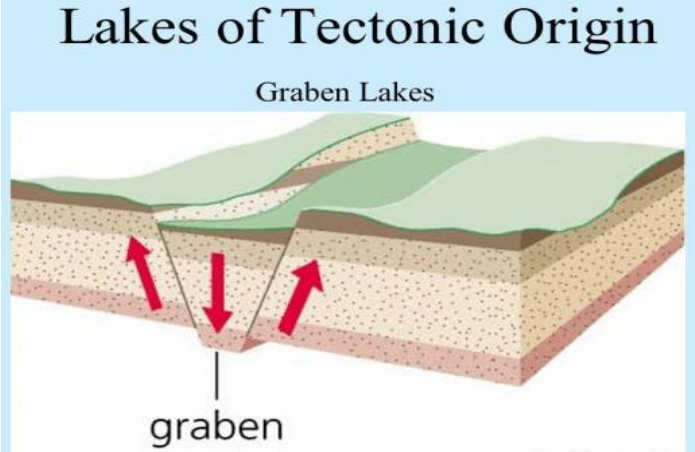

हिमनदी द्वारा निर्मित झीलें

सर्क लेक/टार्न्स

- घाटी से नीचे की ओर जाते हुए एक ग्लेशियर ऊपर पहाड़ों में घाटियों के शीर्ष पर गोलाकार खोखले स्थान छोड़ जाता है जिन्हें कॉरीज़ या सर्क कहा जाता है।
- उनके अधिक गहरे तलों में पानी भरकर सर्क झीलें बनाई जा सकती हैं
- जो घाटी के नीचे लंबे और गहरे हिमनदीय गर्तों पर कब्जा करती हैं, उन्हें रिबन झीलें कहा जाता है

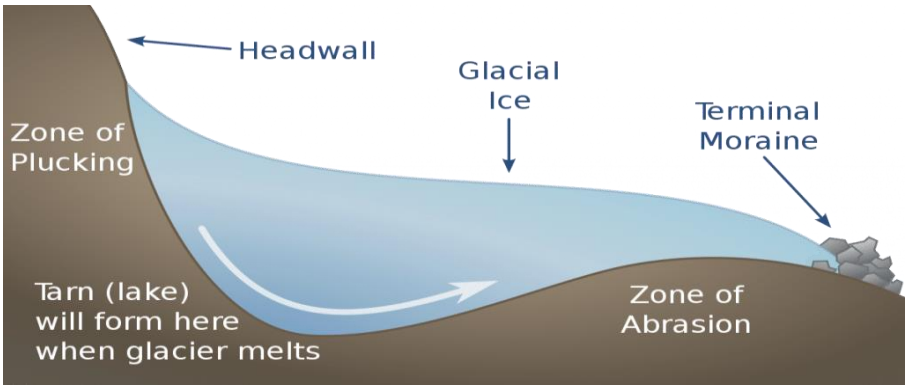

केतली झीलें

- वे मूल रूप से स्थिर बर्फ के पिघलने से बने बाहरी मैदान में बने अवसाद हैं
- असमान मोराइन सतह के कारण वे अनियमित हैं और कभी भी बड़े आकार या गहराई के नहीं होते हैं

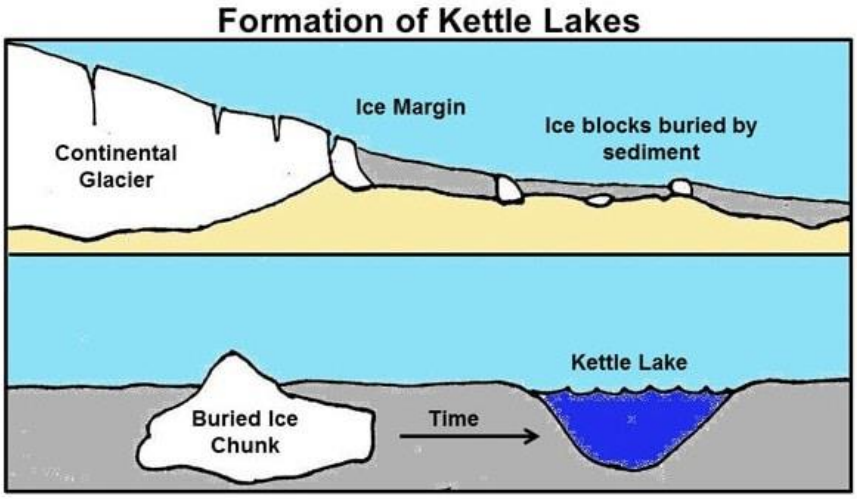

चट्टानी खोखली झीलें

- जब घाटी के ग्लेशियर या बर्फ की चादरें चट्टान की सतह पर खोखली जगहें (चट्टान की खोखली के भीतर घिरी हुई झीलें) निकालती हैं तो बर्फ के फटने से बनती है।
- फिनलैंड (झीलों की भूमि) में ऐसी झीलें प्रचुर मात्रा में हैं

घाटियों पर मोराइन बांध के कारण झीलों का निर्माण हुआ

- घाटी के ग्लेशियर अक्सर घाटी के पार मोराइन मलबा जमा करते हैं ताकि जब पानी अवरोध के पीछे जमा हो जाए तो झीलें बन जाएं।
- पार्श्व और टर्मिनल दोनों मोरेन घाटियों को बांधने में सक्षम हैं।

हिमनदों के बहाव के जमाव के कारण झीलों का निर्माण हुआ

- प्रमुख ड्रमलिन परिदृश्य वाले हिमाच्छादित तराई क्षेत्रों में, जहां जल निकासी खराब है
- बीच-बीच में अवसाद होते हैं जिनमें अक्सर पानी भर जाता है और छोटी-छोटी झीलें बन जाती हैं

ज्वालामुखीय गतिविधि से बनी झीलें

क्रेटर और काल्डेरा झीलें

- ज्वालामुखीय विस्फोट के दौरान, शंकु का शीर्ष उड़ सकता है, जिससे एक प्राकृतिक खोखलापन रह जाता है जिसे क्रेटर कहा जाता है, जो धंसने से बड़ा होकर कैल्डेरा बन सकता है।
- निष्क्रिय और विलुप्त ज्वालामुखियों में, बारिश सीधे क्रेटर या काल्डेरा में गिरती है, जिसका कोई सतही निकास नहीं होता है और एक क्रेटर या काल्डेरा झील बन जाती है।

लावा से अवरुद्ध झीलें

- ज्वालामुखीय क्षेत्रों में लावा की एक धारा घाटी में बह सकती है जो जम सकती है
- लावा के जमने से नदी अवरुद्ध हो सकती है, जिससे लावा अवरुद्ध झीलों का निर्माण हो सकता है।

ज्वालामुखीय भूमि की सतह के धंसने से झीलों का निर्माण हुआ

- खोखले लावा प्रवाह की परत ढह सकती है
- धंसाव अपने पीछे एक चौड़ा और खोखला गड्ढा छोड़ जाता है जिसमें एक झील बन सकती है।

कटाव से बनी झीलें

कार्स्ट झीलें

- चूना पत्थर पर वर्षा जल की विलायक क्रिया से घोल खोखला हो जाता है।
- जब ये मलबे से भर जाते हैं तो इनमें झीलें बन सकती हैं।
- भूमिगत गुफाओं की चूना पत्थर की छतों के ढहने से लंबी, संकरी झीलें नष्ट हो सकती हैं जो कभी भूमिगत थीं।
- पोल्जे नामक बड़े अवसादों में, जिनका सामान्यतः कोई निकास नहीं होता, झीलें हो सकती हैं।

हवा ने झीलों को उड़ा दिया

- रेगिस्तानों में हवाओं की अपस्फीति क्रिया गहरे गड्ढों का निर्माण करती है जो जल स्तर तक पहुँच सकते हैं जिसके माध्यम से पानी रिसकर छोटी उथली झीलें बनाता है।
- अत्यधिक वाष्पीकरण के कारण ये नमक की झीलें या प्लाया बन जाती हैं।

निक्षेपण से बनी झीलें

झीलों का निर्माण नदी निक्षेपों के कारण हुआ

- एक नदी बाढ़ के दौरान अपने घुमावदार छोरों को काटकर अपने मार्ग को छोटा कर सकती है और अपने पीछे एक घोड़े की नाल के आकार का चैनल छोड़ सकती है जिसे बैल-धनुष झील कहा जाता है।

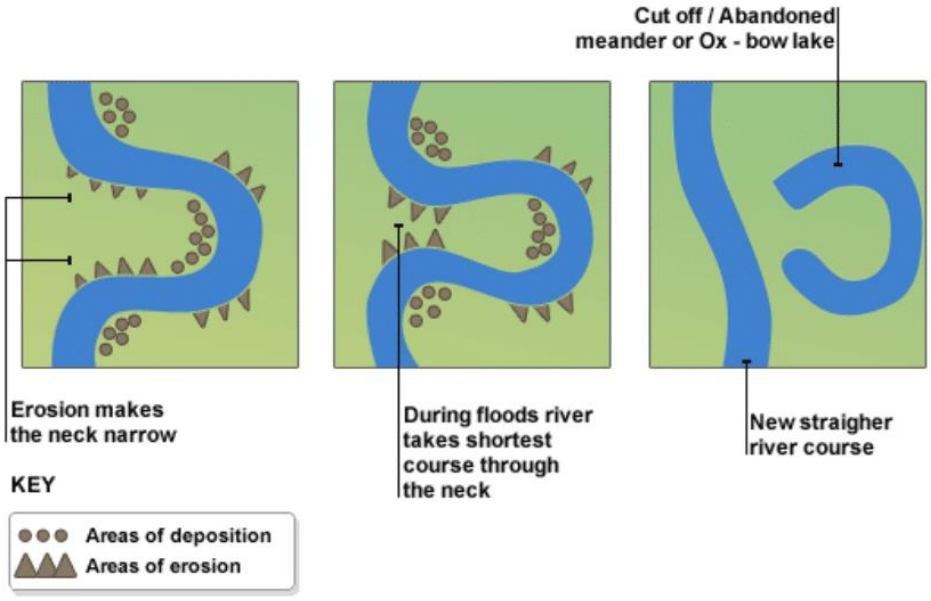

झीलों का निर्माण समुद्री निक्षेपों के कारण हुआ

- हवा और लहरों की कार्रवाई तटों के साथ लैगून को अलग कर सकती है, जो भूमि के संकीर्ण थूक से घिरा होता है जिसे लैगून झीलों के रूप में जाना जाता है।
- लैगून जल का एक उथला पिंड है जो बाधा द्वीपों या चट्टानों द्वारा जल के बड़े पिंड से अलग होता है।
- पूर्वी जर्मनी और पोलैंड में लैगून को हाफ़्स कहा जाता है।

भूस्खलन, भूस्खलन और हिमस्खलन के कारण झीलों का निर्माण हुआ

- भूस्खलन या भूस्खलन घाटियों को अवरुद्ध कर सकते हैं जिससे नदियाँ क्षतिग्रस्त हो जाती हैं, जिससे अस्थायी झीलों का निर्माण होता है।
- इन प्रक्रियाओं द्वारा निर्मित झीलों को अवरोधक झीलों के रूप में भी जाना जाता है।
- ऐसी झीलें अल्पकालिक होती हैं क्योंकि घाटियों में जमा होने वाले ढीले टुकड़े जल्द ही दबाव में टूट जाएंगे और पानी का रास्ता दे देंगे।
- जब वे अचानक रास्ता छोड़ देते हैं, तो बांध का पानी तेजी से नीचे की ओर बढ़ता है जिससे बाढ़ आ जाती है

मानव एवं जैविक गतिविधियों द्वारा निर्मित झीलें

मानव निर्मित झीलें

- प्राकृतिक झीलों के अलावा, मनुष्य ने नदी घाटी पर कंक्रीट का बाँध बनाकर कृत्रिम झीलें भी बनाई हैं
- ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि नदी के पानी को रोककर जलाशय बनाया जा सके।

जानवरों द्वारा बनाई गई झीलें

- बीवर जैसे जानवर विशेष रूप से दिलचस्प हैं।
- वे समुदायों में रहते हैं और लकड़ी, कीचड़ और मिट्टी से नदियों पर बांध बनाते हैं।
- ऐसे बीवर बांध काफी स्थायी होते हैं और प्राकृतिक पर्यावरण को इस तरह से संशोधित करते हैं कि समग्र पारिस्थितिकी तंत्र परिवर्तन पर आधारित होता है, जिससे बीवर एक प्रमुख प्रजाति बन जाते हैं।

अन्य प्रकार की मानव निर्मित झीलें

- सजावटी झीलें ⟶ खासतौर पर पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए बनाया गया है
- पुरुषों की खनन गतिविधियों द्वारा बनाई गई झीलें

- अंतर्देशीय मछली संस्कृति को विकसित करने के लिए अंतर्देशीय मछली पकड़ने वाली झीलें

4. भारत में खनिज वितरण

परिचय

भारत खनिज संसाधनों से भरपूर है। अन्वेषणों में 20,000 से अधिक ज्ञात खनिज भंडार और 60 से अधिक खनिजों के पुनर्प्राप्त करने योग्य भंडार पाए गए हैं।

कुल परिचालन खदानों की संख्या का 90% हिस्सा 11 राज्यों (आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, झारखंड, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान और कर्नाटक) का है।

भारत में खनिज बेल्ट

कुल मिलाकर, भारत निम्नलिखित खनिज भंडारों का घर है:

- **धात्विक और अधात्विक खनिज:** लोहा, क्रोमाइट, तांबा, अभ्रक और मैंगनीज।
- **ऊर्जा भंडार:** कोयला, पेट्रोलियम, थोरियम और यूरेनियम।

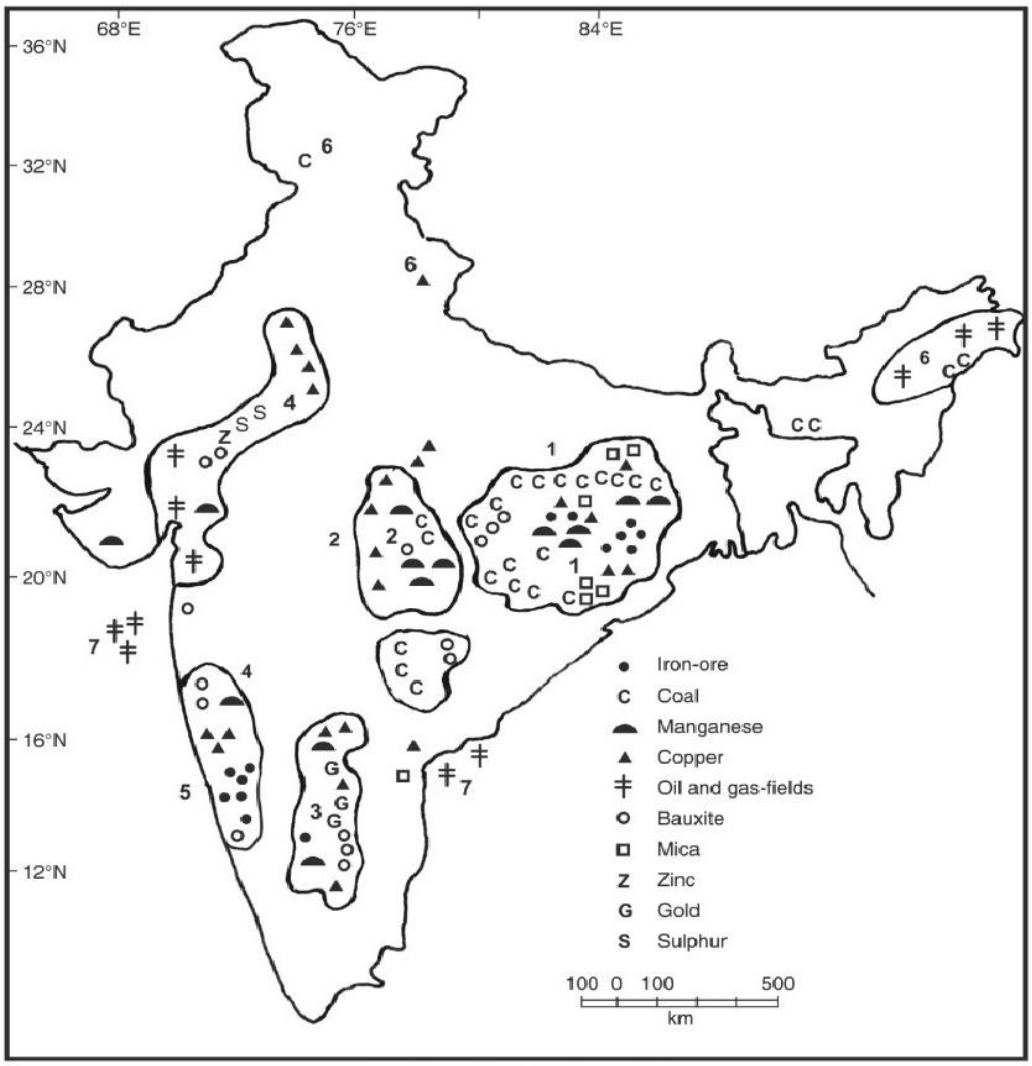

Fig. 7.1 Mineral Belts

1. छोटा नागपुर बेल्ट (उत्तरपूर्वी पठारी क्षेत्र)

- कायनाइट भंडार (100%)
- लौह अयस्क (93%)
- कोयला (84%)
- क्रोमाइट (70%)

2. हिमालय बेल्ट

- आम तौर पर धात्विक खनिजों की कमी होती है

3. हिंद महासागर

- अरब सागर और बंगाल की खाड़ी में खनिज तेल और प्राकृतिक गैस की उपस्थिति
- इसमें बहु-धात्विक पिंड (समुद्र के नीचे लगभग 4000 मीटर गहराई) शामिल हैं
- इसमें फॉस्फेट, मैंगनीज, बेरियम, सिलिकॉन, लौह एल्यूमीनियम आदि जैसे खनिज शामिल हैं।

4. मिडलैंड बेल्ट

- मैंगनीज, बॉक्साइट, तांबा, ग्रेफाइट, अभ्रक, लिग्नाइट, संगमरमर और चूना पत्थर से समृद्ध।
- झारखंड, ओडिशा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश राज्यों के आसपास फैला हुआ है।

5. पश्चिमी बेल्ट

- अलौह धातुओं का निर्माण करता है
- महाराष्ट्र राज्यों के आसपास फैला हुआ है) मुंबई तट के पास तेल संसाधन और अन्न भंडार), गुजरात और राजस्थान (बलुआ पत्थर, संगमरमर, ग्रेनाइट, फुलर, जिप्सम, आदि)
- गुजरात और राजस्थान दोनों ही नमक उत्पादन में समृद्ध हैं।

6. दक्षिण-पश्चिमी बेल्ट

- इसमें लौह अयस्क के प्रचुर भंडार हैं
- गोवा (लौह अयस्क भंडार), केरल (थोरियम, मोजार्ट और बॉक्साइट मिट्टी) और कर्नाटक राज्यों में स्थित है।

भारत में कोयला उद्योग

- 97% से अधिक कोयला भंडार गोदावरी, महानदी, सोन और दामोदर नदी घाटियों के किनारे मौजूद हैं।
- भारत में महत्वपूर्ण कोयला खनन केंद्र मध्य प्रदेश (सिंघरौली), रानीगंज, झरिया और बोकारो हैं।
- सिंगरेनी कोलियरी भारत की सबसे बड़ी कोयला उत्पादक कंपनी है।

कोकिंग कोल

धातुकर्म कोयला या कोकिंग कोयला कोयले का एक ग्रेड है जिसका उपयोग अच्छी गुणवत्ता वाले कोक का उत्पादन करने के लिए किया जा सकता है। प्राथमिक इस्पात निर्माण के लिए ब्लास्ट फर्नेस प्रक्रिया में कोक एक आवश्यक ईंधन और अभिकारक है। धातुकर्म कोयले की मांग स्टील की मांग से अत्यधिक जुड़ी हुई है। प्राथमिक इस्पात निर्माण कंपनियों के पास अक्सर एक प्रभाग होता है जो स्थिर और कम लागत वाली आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए कोकिंग के लिए कोयले का उत्पादन करता है।

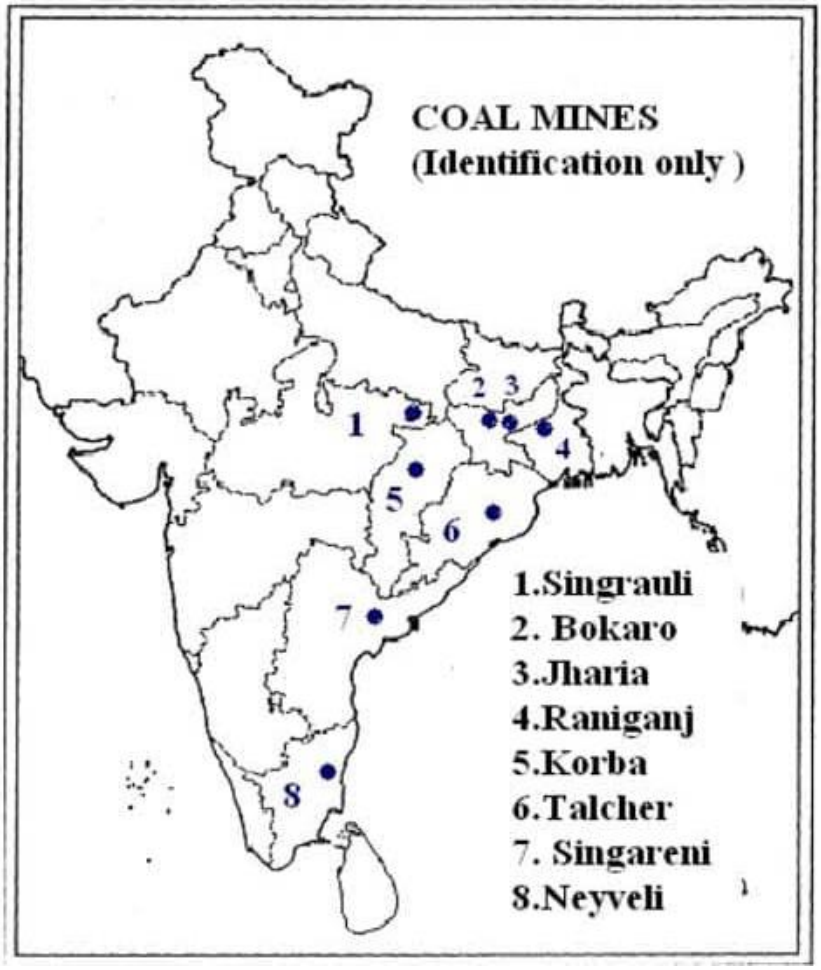

कोकिंग कोयले की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से होती है :

- लौह अयस्क से ऑक्साइड भाग को हटाने के लिए।
- उपरोक्त प्रक्रिया के लिए, लौह अयस्क को कार्बन डाइऑक्साइड के साथ मिलाएं।
- इस कारण से, कोकिंग कोयले में लिग्नाइट की तुलना में उच्च कार्बन घनत्व होता है।
- कोयले की यह किस्म तापन के लिए उपयुक्त है।

लोहा

लौह अयस्क चार प्रकार के होते हैं:

1. **मैंगनाईट:** इलेक्ट्रॉनिक उद्योगों में उपयोग किया जाता है (लगभग 70% लोहा))
2. **हेमेटाइट:** भारत इस अयस्क का दूसरा सबसे बड़ा (रूस के बाद) उत्पादक है
3. **लिमोनाइट:** पेंट निर्माण उद्योगों में उपयोग किया जाता है (लगभग 50% लोहा)

4. **साइडराइट:** इसमें मैग्नीशियम और मैंगनीज का मिश्रण होता है

भारत में लौह उद्योग

- अधिकांश लौह भंडार महाराष्ट्र (रत्नागिरि), झारखंड (हरिजाबाग और सिंगबम), छत्तीसगढ़ (बैलाडीला), ओडिशा, गोवा, कर्नाटक (बेल्लारी और चित्रदुर्ग), आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और तमिलनाडु राज्यों में पाए जाते हैं।
- Kudremukh mines (one of the largest worldwide) in the Western Ghats export iron res to foreign nations.

Steel Industries in India

- Jharkhand ⟶ Jamshedpur (TISCO), Bokaro
- West Bengal ⟶ Durgapur, Burnpur
- Odisha ⟶ Rourkela

- Chhattisgarh ⟶ Bhilai
- Andhra Pradesh ⟶ Visakhapatnam
- Karnataka ⟶ Vishveshwarya
- Tamil Nadu ⟶ Salem

Petroleum

- Extracted from Sedimentary rocks.
- Digboi in Assam is a major petroleum-producing unit in India.
- अंकलेश्वर, गुजरात, नवागाम, लुनेज, कोसानिबा आदि में प्रमुख क्षेत्र।
- गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियों के घाटियों में भी पाया जाता है
- भारत में 22 पेट्रोलियम रिफाइनरियाँ हैं।
- पेट्रोलियम भंडार के अन्य प्रमुख स्थानों में केजी बेसिन, सौराष्ट्र शेल्फ, ब्रह्मपुत्र शेल्फ और बंगाल बांग्लादेश शेल्फ शामिल हैं।
- 22 रिफाइनरियों में से 17 का स्वामित्व सार्वजनिक क्षेत्र के पास है।

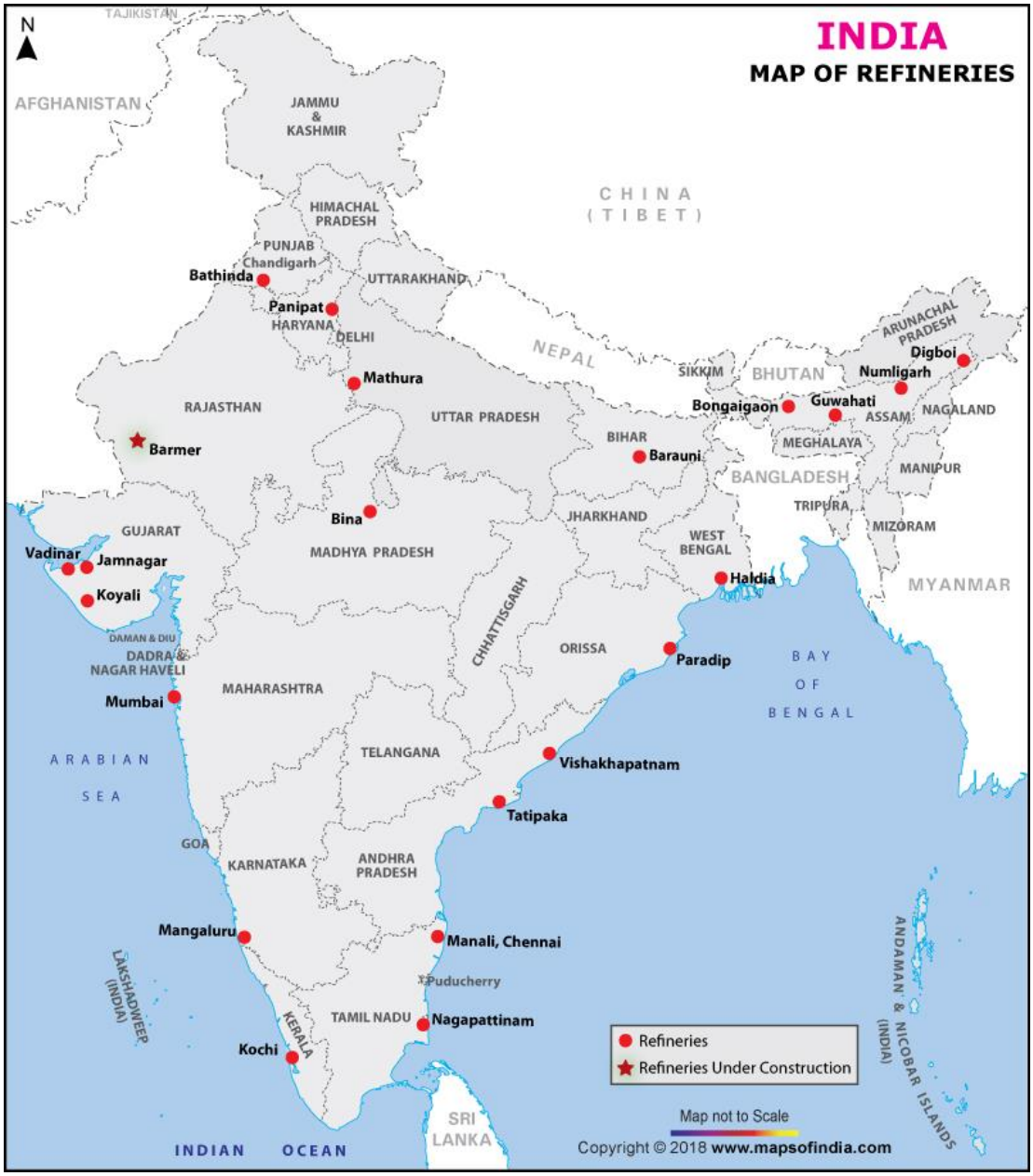

प्राकृतिक गैस

- प्राकृतिक और संपीड़ित कच्चे माल के रूप में पेट्रोकेमिकल उद्योगों में व्यापक उपयोग होता है।
- कार्बन डाइऑक्साइड की कम मात्रा वाला एक पर्यावरण-अनुकूल संसाधन।
- आम तौर पर गोदावरी-कृष्णा बेसिन के आसपास पाया जाता है।
- लगभग 1700 किमी की एक क्रॉस कंट्री गैस पाइपलाइन क्रमशः पश्चिम और उत्तर भारत में मुंबई हाई और बेसिन के बीच चलती है।

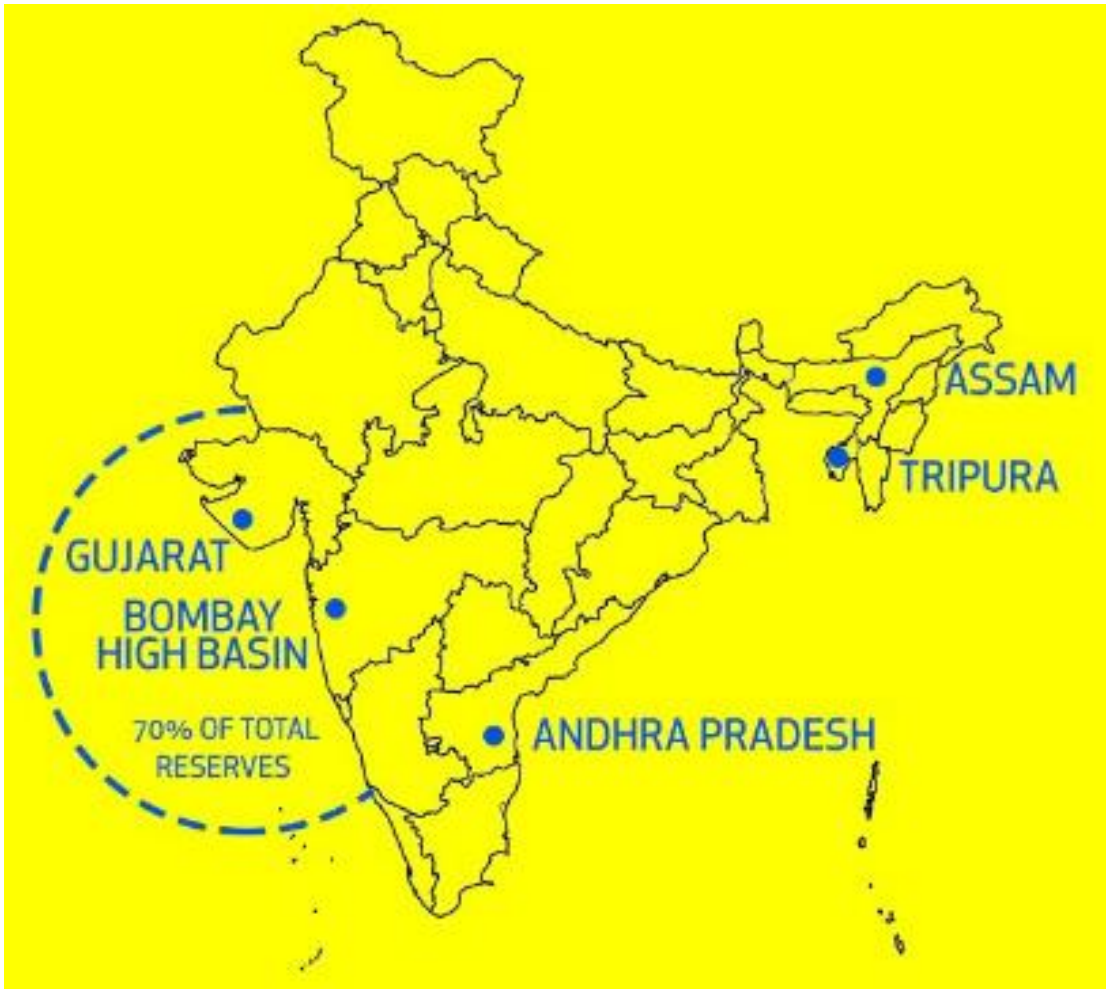

- 1984 में, देश में प्राकृतिक गैस के स्रोतों की निगरानी के लिए भारतीय गैस प्राधिकरण की स्थापना की गई थी।
- ईथेन, मीथेन, प्रोपेन, ब्यूटेन और हाइड्रोजन सल्फाइड प्राकृतिक गैस के प्रमुख गैसीय योगदानकर्ता हैं।
- एलपीजी (तरल पेट्रोलियम गैस) में प्रोपेन और ब्यूटेन का व्यापक उपयोग होता है
- तलछटी चट्टानों के भीतर गहरी गैस रेत मौजूद होती है
- TAPI (तुर्कमेनिस्तान-अफगानिस्तान-पाकिस्तान-भारत) इन चार देशों में फैली एक प्राकृतिक गैस पाइपलाइन है।
- आईपीआई (ईरान-पाकिस्तान-भारत) इन तीन देशों को कवर करने वाली एक और प्राकृतिक गैस पाइपलाइन है
- भारत सरकार ने ईरान और भारत तथा रूस, मध्य एशिया और भारत के बीच नई प्राकृतिक गैस पाइपलाइन स्थापित करने का प्रस्ताव दिया है।

भारत में परमाणु ऊर्जा संसाधन

- यूरेनियम और थोरियम जैसे स्रोत इस श्रेणी में आते हैं।
- धैवरॉक्स, सिंगभूम, अलवर, झुंझुरू, भंडारा, कुल्लू, आदि कुछ प्रसिद्ध जिले हैं जिनमें ये परमाणु ऊर्जा स्रोत हैं।
- तमिलनाडु देश में थोरियम का प्रमुख स्रोत है।

- परमाणु ऊर्जा आयोग (1948) देश में यूरेनियम और थोरियम के उत्पादन को नियंत्रित करता है।
- भारत में प्रमुख परमाणु ऊर्जा संयंत्र नरोरा (उत्तर प्रदेश), कलपक्कम (तमिलनाडु), कोटा (राजस्थान) काकरापार (गुजरात) और कैगा (कर्नाटक) में स्थित हैं।

बायोगैस

- देश में ग्रामीण क्षेत्र बायोगैस के प्रमुख उपभोक्ता हैं।
- बायोगैस मूल रूप से मानव और पशु अपशिष्ट, झाड़ियों और खेत के कचरे से बना है।
- गोबर गैस भारत में बायोगैस का एक प्रसिद्ध स्रोत है।
- बायोगैस प्राकृतिक खाद का एक समृद्ध स्रोत है।
- कुल मिलाकर, घरेलू और कृषि उपयोग के लिए घटनाओं का एक बहुत ही कुशल स्रोत।

मैंगनीज

- ओडिशा भारत में मैंगनीज उत्पादन का केंद्र है (बोनाई, सुंदरगढ़, गंगपुर, कोरपुट)।
- अन्य मैंगनीज उत्पादक राज्य कर्नाटक (धारवाड़, बेलारी, उत्तरी केनरा, चित्रदुर्ग, तुमकुर, आदि), झारखंड (चाईबासा), मध्य प्रदेश (बाला घाट), और महाराष्ट्र (नागपुर, रत्नागिरी और बांद्रा) हैं।
- स्टील और फेरोमैंगनीज मिश्र धातु के निर्माण के लिए उपयोग करें।
- 1 किलो स्टील का उत्पादन करने के लिए लगभग 10 किलो मैंगनीज को संसाधित करने की आवश्यकता होती है
- मैंगनीज संयंत्र आम तौर पर इस्पात संयंत्रों से दूर स्थित होते हैं, जिससे उन्हें नुकसान होता है।

ताँबा

- तांबे के भंडार ज्यादातर झारखंड, राजस्थान (झुंझुनू और अलवर जिले), आंध्र प्रदेश (गुंटूर में) राज्यों में हैं।
- कर्नाटक (चित्रदुर्ग और हसन में) और मध्य प्रदेश (बालघाट खदानें)।
- उपरोक्त के बावजूद, भारत अधिकांश प्रीमियम गुणवत्ता वाला तांबा (जैसे बैलेरिना कॉपर) विदेशों से आयात करता है।
- एक टन तांबे के लिए कुल 1400 किलोवाट ऊर्जा की आवश्यकता होती है।
- लोनावाला और हैदराबाद स्थित बिजली संयंत्र स्क्रैप तांबे का पुनर्चक्रण करते हैं

- भारत में तांबे की कुल उपज कम है
- तांबा गलाने से सल्फर डाइऑक्साइड गैस निकलने के कारण वायु प्रदूषण होता है।

भारत में कॉपर रिफाइनरियाँ

1. हिंदुस्तान कॉपर ⟶ खेतड़ी, झुंझुनू जिला, राजस्थान
2. बाल्को ⟶ कोरबा, छत्तीसगढ़
3. हिंडाल्को (बिरला) ⟶ दहेज, गुजरात का भरूच जिला
4. स्टरलाइट इंडस्ट्रीज ⟶ तूतीकोरिन, तमिलनाडु

अभ्रक

- ओडिशा (कोराडरमा दुनिया का सबसे बड़ा मैंगनीज उत्पादक है) से निकाला जाता है
- भारत में आंध्र प्रदेश पर्याप्त मात्रा में अभ्रक का उत्पादन करता है।
- राजस्थान में जयपुर, उदयपुर और भीलवाड़ा जिले कुछ अभ्रक उत्पादक क्षेत्र हैं।
- कर्नाटक और केरल तथा पश्चिम बंगाल भी बड़ी मात्रा में अभ्रक का उत्पादन करते हैं।
- अभ्रक में उच्च वोल्टेज के विरुद्ध उत्कृष्ट इन्सुलेशन और प्रतिरोधी गुण हैं।
- आगे उपयोग के लिए इसे पीटा जा सकता है या पतली शीट में फैलाया जा सकता है।
- झारखंड में अभ्रक बेल्ट लगभग 150 किमी लंबी और 22 किमी चौड़ी है।
- यह हज़ारीबाग़ पठार के चारों ओर फैला हुआ है।
- राजस्थान में अभ्रक जयपुर और उदयपुर के आसपास फैला हुआ है।

बाक्साइट

- भारत में बॉक्साइट खनिजों का प्रमुख उत्पादक ओडिशा (देश के कुल उत्पादन का 34.9%) है।
- अन्य बॉक्साइट उत्पादक राज्य हैं गुजरात (भावनगर और जामनगर), मध्य प्रदेश और झारखंड (लोहरदगा)
- आमतौर पर पहाड़ियों और पठारों में लेटराइट चट्टानों वाले स्थानों में पाया जाता है।

- समृद्ध बॉक्साइट भंडार के अन्य महत्वपूर्ण स्थान अमरकंटक पठार, लोहरदगा, कटनी-जबलपुर, कोलाबा, ठाणे, रत्नागिरी, आदि हैं।
- यह एल्युमिनियम के निर्माण में उपयोगी है।
- आम तौर पर वहां पाया जाता है जहां लेटराइट चट्टानों की प्रचुर मात्रा होती है।

एल्यूमिनियम-बॉक्साइट रिफाइनिंग

- इस ग्रह पर एल्युमीनियम प्रचुर मात्रा में है जबकि बॉक्साइट को विशिष्ट दूरस्थ स्थानों से निकाला जा सकता है।
- मुख्य रूप से, बॉक्साइट को कुचलकर उसकी अशुद्धियों को दूर करने के लिए कास्टिक सोडा के साथ मिलाया जाता है।
- इसके अलावा, उपरोक्त मिश्रण को नमी हटाने के लिए सूखने के लिए छोड़ दिया जाता है (इस मिश्रण से एल्यूमिना प्राप्त होता है)।
- रूपांतरण की इस प्रक्रिया से वजन भी कम होता है।
- इसके बाद अंतिम उत्पाद की परिवहन लागत कम हो जाती है।

Bauxite-Alumina Map of India

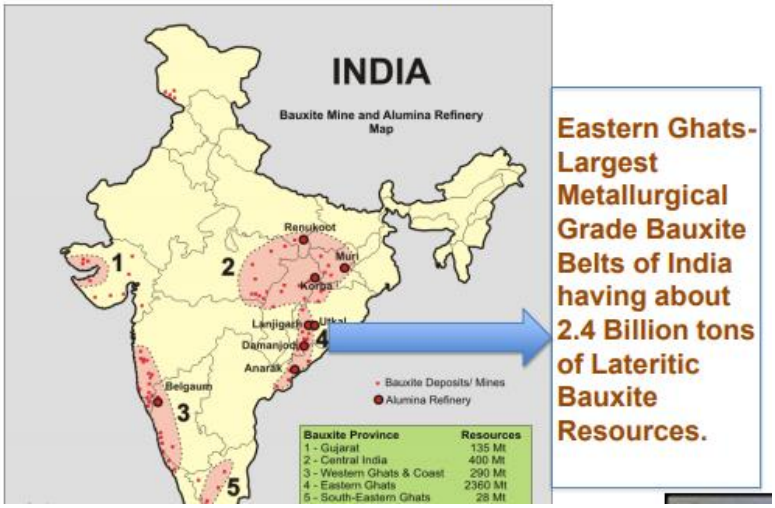

भारत में एल्यूमिनियम उद्योग

- यूपी ⟶ हिंडाल्को (बिड़ला)
- ओडिशा ⟶ हीराकुंड (बिरला), झारसुगुड़ा (वेदांत)
- छत्तीसगढ़ ⟶ कोरबा (वेदांता)

- बाल्को ⟶ रत्नागिरी, महाराष्ट्र
- नाल्को ⟶ कोरटपुर, ओडिशा
- माल्को ⟶ मेट्टूर, टीएन

सीसा और जस्ता

- इन अयस्कों को गलाने और इलेक्ट्रोलिसिस की प्रक्रियाओं के माध्यम से उत्पादित और परिष्कृत किया जाता है।
- प्रसंस्करण के लिए अयस्कों को पानी, तेल और रसायनों के साथ मिलाया जाता है।
- भारत में पर्याप्त सीसा और जस्ता अयस्क नहीं हैं और इसलिए भारत में इनमें से अधिकांश खनिज दूसरे देशों से आयात किए जाते हैं।
- भारत में कुछ प्रमुख बेल्ट झारखंड (टूंडू) और आंध्र प्रदेश (विशाखापत्तनम) में हैं।
- भारत में कुछ जस्ता बेल्ट राजस्थान (देबारी और चंदेरिया) और केरल में हैं।

5. भारत में जैव विविधता हॉटस्पॉट

जैव विविधता को किसी विशेष आवास में पौधों और जानवरों की प्रजातियों की विविधता के रूप में जाना जाता है। प्रजाति समरूपता और प्रजाति समृद्धि जैव विविधता के प्रमुख घटक हैं।

भारत अपनी समृद्ध जैव विविधता के लिए जाना जाता है और **इसका 23.39% भौगोलिक क्षेत्र** जंगलों और पेड़ों से ढका हुआ है।

जैव विविधता हॉटस्पॉट

- जैव विविधता हॉटस्पॉट को ऐसे क्षेत्रों के रूप में परिभाषित किया गया है " **जहां स्थानिक प्रजातियों की असाधारण सांद्रता निवास स्थान की असाधारण हानि से गुजर रही है"।**
- **जैव विविधता हॉटस्पॉट उच्च प्रजाति समृद्धि** और **उच्च स्तर की स्थानिकता** वाले क्षेत्र हैं।
- **जैव विविधता हॉटस्पॉट की अवधारणा** 1988 **में नॉर्मन मायर्स** द्वारा विकसित की गई थी जब उन्होंने पहचाना कि उष्णकटिबंधीय जंगल अपने पौधों की प्रजातियों के साथ-साथ निवास स्थान को भी खो रहे हैं।
- IUCN '**रेड डेटा बुक' तैयार करता है**। **दुनिया भर में 36 क्षेत्र** ऐसे हैं जो **जैव विविधता हॉटस्पॉट के रूप में योग्य हैं**। ये हॉटस्पॉट **पृथ्वी की कुल भूमि सतह का केवल 2.3% प्रतिनिधित्व** करते हैं, फिर भी दुनिया की 50% से अधिक पौधों की प्रजातियाँ और सभी स्थलीय कशेरुक प्रजातियों में से 42% इन क्षेत्रों के लिए स्थानिक हैं।

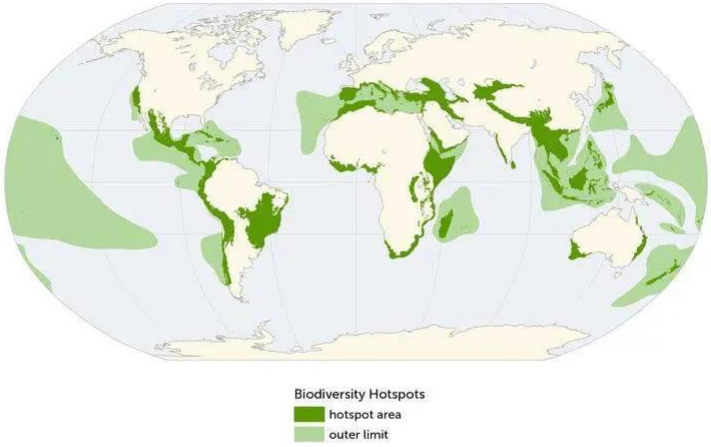

ये हॉटस्पॉट महत्वपूर्ण हैं क्योंकि **जैव विविधता पृथ्वी पर सभी जीवन का आधार है**। प्रजातियों के बिना, सांस लेने के लिए हवा नहीं होगी, खाने के लिए भोजन नहीं होगा, पीने के लिए पानी नहीं होगा। वहाँ कोई मानव समाज ही नहीं होगा। और पृथ्वी पर उन स्थानों के रूप में, जहां सबसे अधिक जैव विविधता सबसे अधिक खतरे में है, हॉटस्पॉट मानव अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण हैं।

जैव विविधता हॉटस्पॉट के रूप में अर्हता प्राप्त करने के लिए मानदंड

के अनुसार , किसी क्षेत्र को हॉटस्पॉट के रूप में अर्हता प्राप्त करने के लिए **निम्नलिखित दो मानदंडों को पूरा करना होगा :**

1. इसमें स्थानिकमारी वाले कम से कम **1,500 संवहनी पौधे होने चाहिए** , जिसका अर्थ है कि **इसमें पौधों के जीवन का उच्च प्रतिशत होना चाहिए जो ग्रह पर कहीं और नहीं पाया जाता है**। दूसरे शब्दों में, हॉटस्पॉट अपूरणीय है।
2. **इसकी मूल प्राकृतिक वनस्पति 30% या उससे कम** होनी चाहिए (**इसे अपने मूल निवास का कम से कम 70% खोना होगा**)। दूसरे शब्दों में, **इसे धमकी दी जानी चाहिए**।

भारत में जैव विविधता हॉटस्पॉट

भारत में **प्रमुख चार जैव विविधता हॉटस्पॉट** हैं :

1. **हिमालय: इसमें संपूर्ण भारतीय हिमालयी क्षेत्र** (और जो पाकिस्तान, तिब्बत, नेपाल, भूटान, चीन और म्यांमार में पड़ता है) शामिल है।
2. **इंडो-बर्मा: इसमें असम और अंडमान द्वीप समूह** (और म्यांमार, थाईलैंड, वियतनाम, लाओस, कंबोडिया और दक्षिणी चीन) को छोड़कर संपूर्ण उत्तर-पूर्वी भारत शामिल है।
3. **पश्चिमी घाट और श्रीलंका:** इसमें संपूर्ण पश्चिमी घाट (और श्रीलंका) शामिल हैं।
4. **सुंदरलैंड: इसमें निकोबार द्वीप समूह** (और इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर, ब्रुनेई, फिलीपींस) शामिल हैं।

पूर्वी हिमालय, जो मूल रूप से भारत-बर्मा जैव विविधता हॉटस्पॉट का हिस्सा था और इसमें भूटान, उत्तर-पूर्वी भारत और दक्षिणी, मध्य और पूर्वी नेपाल शामिल थे।

2004 में , एक हॉटस्पॉट पुनर्मूल्यांकन ने इस क्षेत्र को दो हॉटस्पॉट के हिस्से के रूप में वर्गीकृत किया: **इंडो-बर्मा और नव प्रतिष्ठित हिमालय।**

दुनिया के सबसे हॉट हॉटस्पॉट

1. इंडो-बर्मा क्षेत्र
2. सुंदरलैंड
3. फिलिपींस
4. पश्चिमी घाट और श्रीलंका
5. मेडागास्कर

6. तंजानिया/केन्या के पूर्वी चाप और तटीय वन
7. कैरिबियाई द्वीप
8. ब्राज़ील के अटलांटिक वन

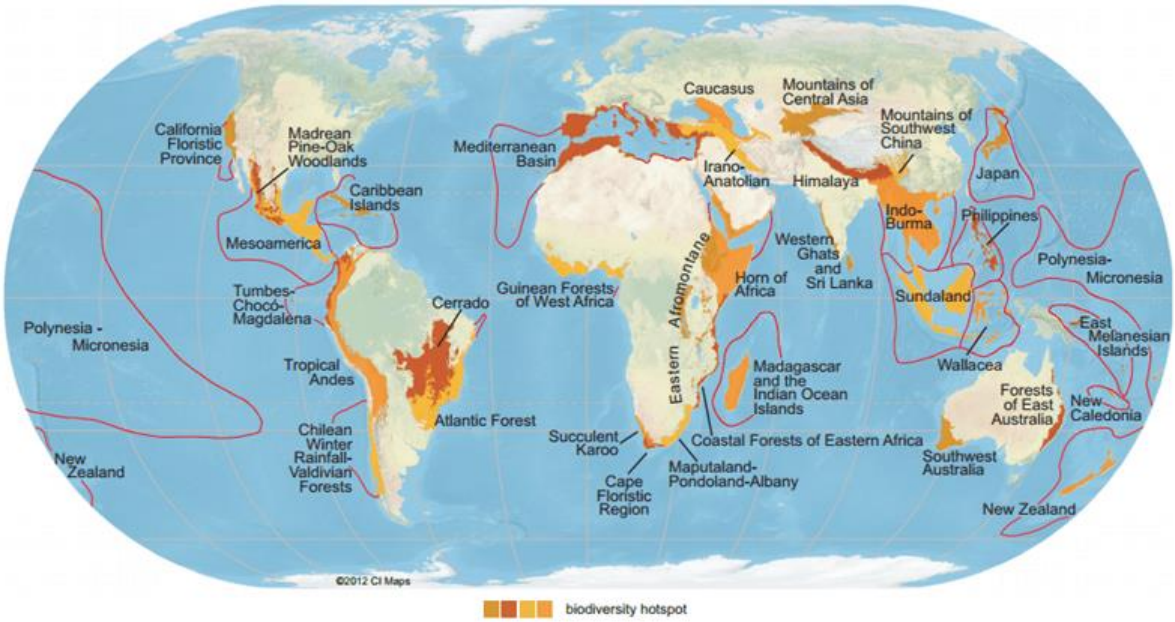

आशा के धब्बे

- होप **स्पॉट समुद्र का** एक क्षेत्र है जो अपने वन्य जीवन और महत्वपूर्ण पानी के नीचे के आवासों के कारण विशेष सुरक्षा का हकदार है।
- **को IUCN और महासागरों के अध्ययन में शामिल संगठन मिशन ब्लू द्वारा नए "आशा के स्थान** " के रूप में नामित किया गया है।
    - **अंडमान और निकोबार द्वीप में पक्षियों और पौधों की दुनिया की** कुछ **अनोखी प्रजातियाँ हैं।**
    - **लक्षद्वीप** के मामले में , **मूंगा चट्टानें** समुद्री पर्यावरण के प्रति काफी संवेदनशील हैं और उन्हें संरक्षण की आवश्यकता है।

कूल-स्पॉट

- 'कूल-स्पॉट' **दुनिया की आखिरी शरणस्थलियां हैं जहां बड़ी संख्या में खतरे वाली प्रजातियां अभी भी मौजूद हैं** ।
- कूल-स्पॉट सुरक्षा का परिणाम हो सकते हैं या बरकरार निवास स्थान के कारण हो सकते हैं जिन्हें अभी तक साफ नहीं किया गया है।

- **सभी ठंडे स्थानों को उच्च स्तर की सुरक्षा, संरक्षण प्रबंधन और बहाली से लाभ होगा।**

जैव विविधता हॉटस्पॉट संरक्षण प्रयास

यहां कुछ तरीके दिए गए हैं जिनसे हम इन जैविक हॉटस्पॉट की रक्षा कर सकते हैं:

- जैव विविधता, समुदायों और आजीविका पर काम करने के लिए **समाज के भीतर** महत्वपूर्ण जागरूकता पैदा करना। आप **सामाजिक वानिकी का** अभ्यास करके ऐसा कर सकते हैं।
- इन हॉटस्पॉट के विकास, योजना और प्राथमिकता में **जैव विविधता, समुदायों और आजीविका को मुख्यधारा में लाना।**
- अभिनव और **मजबूत प्रतिक्रियाएँ**
- संरक्षण प्रबंधन प्रयासों में संलग्न होने के लिए **समुदाय को सशक्त बनाना और जागरूकता पैदा करना**
- **वन्यजीवों** के खतरे को कम करके स्थानिक और प्राथमिकता वाली प्रजातियों की रक्षा करें !

विश्व के जैव विविधता हॉटस्पॉट

उत्तर और मध्य अमेरिका

- कैलिफ़ोर्निया फ्लोरिस्टिक प्रांत
- मैड्रियन पाइन-ओक वुडलैंड्स
- कैरिबियाई द्वीप
- मेसोअमेरिका
- उत्तर अमेरिकी तटीय मैदान

दक्षिण अमेरिका

- सेराडो
- उष्णकटिबंधीय एंडीज
- अटलांटिक वन
- चिली शीतकालीन वर्षा-वाल्डिवियन वन
- तुम्बेस-चोको-मैगडेलेना

एशिया प्रशांत

महाद्वीप के अनुसार, इसमें सबसे अधिक पारिस्थितिक हॉटस्पॉट हैं, जिसमें कुल 16 महत्वपूर्ण क्षेत्र जैव विविधता से परिपूर्ण हैं।

- पूर्वी हिमालय
- पश्चिमी घाट, भारत: श्रीलंका
- इंडो-बर्मा, भारत और म्यांमार
- नया केलडोनिया
- न्यूज़ीलैंड
- पोलिनेशिया-माइक्रोनेशिया
- जापान
- पूर्वी मेलानेशियन द्वीप समूह
- फिलिपींस
- सुंदरलैंड
- दक्षिण पश्चिम ऑस्ट्रेलिया
- पूर्वी ऑस्ट्रेलिया
- वालेसिया ऑकेसस
- ईरानी-अनातोलियन
- दक्षिण पश्चिम चीन के पर्वत

मध्य एशिया

- मध्य एशिया के पर्वत

यूरोप

- आभ्यंतरिक घाटी

अफ़्रीका

ये आठ हॉटस्पॉट जानवरों और पौधों के जीवन की एक विविध श्रृंखला रखते हैं, जिनमें से कई केवल इन क्षेत्रों के लिए विशिष्ट हैं।

- अफ़्रीका के तटीय वन
- पूर्वी अफ़्रोमोंटेन
- पश्चिम अफ़्रीका के गिनी वन
- अफ़्रीका का भौंपू
- मेडागास्कर और हिंद महासागर द्वीप समूह
- रसीला कारू
- केप फ्लोरल क्षेत्र
- मापुटालैंड-पोंडोल

उच्च जैव विविधता जंगल क्षेत्र (HBWA)

उच्च **जैव विविधता जंगल क्षेत्र (HBWA) दृष्टिकोण कंजर्वेशन इंटरनेशनल (CI) द्वारा विकसित किया गया है। एचबीडब्ल्यूए में 5 शामिल हैं 24 प्रमुख जंगली क्षेत्रों में से जो विश्व स्तर पर** जैव विविधता के महत्वपूर्ण स्तर रखते हैं, जैसा कि मिटरमीयर एट अल (2002) द्वारा पहचाना गया है।

5 एचबीडब्ल्यूए हैं -

1. **अमेज़ॅन बेसिन** , ब्राज़ील।
2. **कांगो बेसिन** , कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य।
3. **न्यू गिनी** , इंडोनेशिया और पापुआ न्यू गिनी।
4. **उत्तरी अमेरिकी रेगिस्तान** , दक्षिण पश्चिम संयुक्त राज्य अमेरिका और मेक्सिको।
5. **मियोम्बो-मोपेन वुडलैंड्स और सवाना** , जाम्बिया।

इन क्षेत्रों का अक्षुण्ण भाग 8,981,000 किमी2 (उनकी मूल सीमा का 76%) और ग्रह के भूमि क्षेत्र का 6.1% है। HBWA की भौगोलिक सीमाएँ कई सम्मिलित WWF पारिस्थितिकी क्षेत्रों की सीमाओं से मेल खाती हैं।

अतीत में एचबीडब्ल्यूए को ज्यादातर उनके निवास स्थान के नुकसान के निम्न स्तर के कारण "कम भेद्यता" वाला माना जाता था। हालाँकि, **हाल के विश्लेषण से पता चलता है कि कई एचबीडब्ल्यूए की उच्च खेती क्षमता उन्हें भविष्य के कृषि विस्तार का लक्ष्य बनाती है। उष्णकटिबंधीय देशों में फसल विस्तार जैव विविधता के लिए प्राथमिक खतरों में से एक है।**

भारत में 6 विश्व धरोहर स्थल

- विश्व **धरोहर स्थल वह स्थान है जो अपने विशेष सांस्कृतिक या भौतिक महत्व के लिए यूनेस्को द्वारा सूचीबद्ध है** । विश्व धरोहर स्थलों की सूची यूनेस्को विश्व धरोहर समिति द्वारा प्रशासित अंतर्राष्ट्रीय **'विश्व धरोहर कार्यक्रम' द्वारा रखी जाती है।**
    - यूनेस्को **विश्व धरोहर समिति 21 यूनेस्को सदस्य देशों से बनी है** , जो महासभा द्वारा चुने जाते हैं।
- संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) दुनिया भर में मानवता के लिए उत्कृष्ट मूल्य मानी जाने वाली **सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत की पहचान, सुरक्षा और संरक्षण को प्रोत्साहित करना चाहता है।**
- **1972 में यूनेस्को** द्वारा अपनाई गई विश्व सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत के संरक्षण से संबंधित कन्वेंशन नामक एक अंतरराष्ट्रीय संधि में सन्निहित है।
- **जून 2022 तक, भारत में 40 विश्व धरोहर स्थल हैं जिनमें 32 सांस्कृतिक संपत्तियाँ, 7 प्राकृतिक संपत्तियाँ और 1 मिश्रित साइट शामिल हैं।**

संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन

- इसकी स्थापना 1945 में स्थायी शांति के निर्माण के साधन के रूप में "मानव जाति की बौद्धिक और नैतिक एकजुटता" विकसित करने के लिए की गई थी।
- यह पेरिस, फ्रांस में स्थित है।

विश्व धरोहर स्थल का चयन कैसे किया जाता है?

- लिस्टिंग की दिशा में पहला कदम किसी देश की संबंधित सरकार द्वारा किसी साइट का नामांकन है।
- विश्व धरोहर नामांकन के लिए साइट का उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य (ओयूवी) होना चाहिए।
- विश्व धरोहर नामांकन के लिए उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य (ओयूवी) निर्धारित करने के लिए, **दस सूचीबद्ध मानदंड हैं।**
- प्रस्तावित नामांकन को **इन दस मानदंडों में से कम से कम एक को पूरा करना होगा** ।
- इसके बाद नामांकन फ़ाइल का मूल्यांकन अंतर्राष्ट्रीय स्मारक और स्थल परिषद और विश्व संरक्षण संघ द्वारा किया जाता है।
- ये निकाय फिर विश्व धरोहर समिति को अपनी सिफारिशें देते हैं।

- समिति यह निर्धारित करने के लिए प्रति वर्ष एक बार बैठक करती है कि प्रत्येक नामांकित संपत्ति को विश्व विरासत सूची में शामिल किया जाए या नहीं और कभी-कभी साइट को नामांकित करने वाले देश से अधिक जानकारी का अनुरोध करने के निर्णय को स्थगित कर देती है।

उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य (ओयूवी) निर्धारित करने के लिए 10 मानदंड

(मैं) **मानव रचनात्मक प्रतिभा की उत्कृष्ट कृति का** प्रतिनिधित्व करने के लिए ;

(ii) वास्तुकला या प्रौद्योगिकी, स्मारकीय कला, नगर-योजना या परिदृश्य डिजाइन में विकास पर, समय के साथ या दुनिया के एक सांस्कृतिक क्षेत्र के भीतर मानवीय मूल्यों का एक **महत्वपूर्ण आदान-प्रदान** प्रदर्शित करना ;

(iii) किसी सांस्कृतिक परंपरा या किसी ऐसी सभ्यता के लिए अनोखी या कम से कम **असाधारण गवाही देना जो जीवित है या जो लुप्त हो गई है;**

(iv) एक **उत्कृष्ट उदाहरण बनने के लिए एक प्रकार की इमारत, वास्तुशिल्प या तकनीकी पहनावा या परिदृश्य** जो (ए) मानव इतिहास में महत्वपूर्ण चरणों को दर्शाता है;

(v) **पारंपरिक मानव बस्ती, भूमि-उपयोग, या समुद्री-उपयोग का** एक उत्कृष्ट उदाहरण होना जो किसी संस्कृति (या संस्कृतियों) या पर्यावरण के साथ मानव संपर्क का प्रतिनिधि है, खासकर जब यह अपरिवर्तनीय परिवर्तन के प्रभाव के तहत कमजोर हो गया हो;

(vi) , विचारों या विश्वासों, उत्कृष्ट सार्वभौमिक महत्व के कलात्मक और साहित्यिक कार्यों के साथ **प्रत्यक्ष या मूर्त रूप से जुड़ा** होना। (समिति का मानना है कि इस मानदंड का उपयोग अधिमानतः अन्य मानदंडों के साथ किया जाना चाहिए।

(vii) **उत्कृष्ट प्राकृतिक घटनाओं या असाधारण प्राकृतिक सौंदर्य और सौंदर्य महत्व के क्षेत्रों को शामिल** करना ;

(viii) **पृथ्वी के इतिहास के प्रमुख चरणों का प्रतिनिधित्व करने वाले** उत्कृष्ट उदाहरण होने के लिए , जिसमें जीवन का रिकॉर्ड, भू-आकृतियों के विकास में चल रही महत्वपूर्ण भूवैज्ञानिक प्रक्रियाएं, या महत्वपूर्ण भू-आकृति या भौतिक विशेषताएं शामिल हैं;

(ix) स्थलीय, मीठे पानी, तटीय और समुद्री पारिस्थितिक तंत्र और पौधों और जानवरों के समुदायों के विकास और विकास में महत्वपूर्ण **चल रही पारिस्थितिक और जैविक प्रक्रियाओं का** प्रतिनिधित्व करने वाले उत्कृष्ट उदाहरण बनना ;

(एक्स) **जैविक विविधता के इन-सीटू संरक्षण के लिए** सबसे महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण प्राकृतिक आवासों को शामिल करना , जिसमें विज्ञान या संरक्षण के दृष्टिकोण से उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य की खतरे वाली प्रजातियां भी शामिल हैं।

नामित साइटों की कानूनी स्थिति

- **जिनेवा कन्वेंशन** , इसके लेखों, प्रोटोकॉल और रीति-रिवाजों के साथ-साथ सांस्कृतिक संरक्षण के लिए हेग कन्वेंशन सहित अन्य संधियों के तहत युद्ध के कानून के अनुसार कानूनी रूप से संरक्षित हैं। सशस्त्र संघर्ष की स्थिति में संपत्ति और अंतर्राष्ट्रीय कानून।
- **जिनेवा कन्वेंशन संधि का अनुच्छेद 53 प्रख्यापित करता है:**
    - **सांस्कृतिक वस्तुओं और पूजा स्थलों का** संरक्षण। 14 मई 1954 के **सशस्त्र संघर्ष की स्थिति में सांस्कृतिक संपत्ति की सुरक्षा के लिए हेग कन्वेंशन** के प्रावधानों और अन्य प्रासंगिक अंतरराष्ट्रीय दस्तावेजों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, यह निषिद्ध है:
        - ऐतिहासिक स्मारकों, कला के कार्यों या पूजा स्थलों के खिलाफ शत्रुता का कोई भी कार्य करना जो लोगों की सांस्कृतिक या आध्यात्मिक विरासत का निर्माण करते हैं;
        - सैन्य प्रयासों के समर्थन में ऐसी वस्तुओं का उपयोग करना;
        - ऐसी वस्तुओं को प्रतिशोध की वस्तु बनाना।

भारत में यूनेस्को प्राकृतिक विश्व धरोहर स्थलों की सूची

प्राकृतिक विश्व धरोहर स्थल	राज्य	अधिसूचना का वर्ष
काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान	असम	1985
केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान	राजस्थान Rajasthan	1985

मानस वन्यजीव अभयारण्य	असम	1985
नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान और फूलों की घाटी	उत्तराखंड	1988
सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान	पश्चिम बंगाल	1987
पश्चिमी घाट	महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, तमिलनाडु और, केरल	2012
ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क	हिमाचल प्रदेश	2014

भारत में यूनेस्को सांस्कृतिक विश्व धरोहर स्थलों की सूची

सांस्कृतिक विश्व धरोहर स्थल	**राज्य**	**अधिसूचना का वर्ष**
काकतीय रुद्रेश्वर (रामप्पा) मंदिर	**तेलंगाना**	**2021**
धोलावीरा: एक हड़प्पा शहर	**गुजरात**	**2021**
ले कोर्बुज़िए का वास्तुशिल्प कार्य, आधुनिक आंदोलन में एक उत्कृष्ट योगदान	चंडीगढ़	2016
मुंबई का विक्टोरियन और आर्ट डेको पहनावा	महाराष्ट्र	2018
अहमदाबाद का ऐतिहासिक शहर	गुजरात	2017
जयपुर शहर	**राजस्थान Rajasthan**	**2020**
नालंदा महाविहार का पुरातत्व स्थल (नालंदा	बिहार	2016

विश्वविद्यालय)		
रानी-की-वाव	गुजरात	2014
राजस्थान के पहाड़ी किले	राजस्थान Rajasthan	2013
जंतर मंतर	राजस्थान Rajasthan	2010
लाल किला परिसर	दिल्ली	2007
Champaner-Pavagadh Archaeological Park	Gujarat	2004
Chhatrapati Shivaji Terminus	Maharashtra	2004
Rock Shelters of Bhimbetka	Madhya Pradesh	2003
Mahabodhi Temple Complex at Bodh Gaya	Bihar	2002
Mountain Railways of India	Tamil Nadu	1999
Humayun's Tomb, Delhi	Delhi	1993
Qutb Minar and its Monuments, Delhi	Delhi	1993
Buddhist Monuments at Sanchi	Madhya Pradesh	1989
एलिफेंटा गुफाएँ	महाराष्ट्र	1987

महान जीवंत चोल मंदिर	तमिलनाडु	1987
पत्तदकल में स्मारकों का समूह	कर्नाटक	1987
गोवा के चर्च और कॉन्वेंट	गोवा	1986
फ़तेहपुर सीकरी	उतार प्रदेश।	1986
हम्पी में स्मारकों का समूह	कर्नाटक	1986
खजुराहो स्मारक समूह	मध्य प्रदेश	1986
महाबलीपुरम में स्मारकों का समूह	तमिलनाडु	1984
सूर्य मंदिर, कोणार्क	ओडिशा	1984
आगरा का किला	उतार प्रदेश।	1983
अजंता की गुफाएँ	महाराष्ट्र	1983
एलोरा की गुफाएँ	महाराष्ट्र	1983
ताज महल	उतार प्रदेश।	1983

यूनेस्को मिश्रित विश्व धरोहर स्थल

एक मिश्रित साइट में प्राकृतिक और सांस्कृतिक दोनों महत्व के घटक शामिल होते हैं:

मिश्रित विश्व धरोहर स्थल	राज्य	अधिसूचना का वर्ष
कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान	सिक्किम	2016

आगरा का किला (1983)

- 16 वीं सदी का मुगल स्मारक
- लाल बलुआ पत्थर का किला
- इसमें जहांगीर महल और शाहजहाँ द्वारा निर्मित खास महल शामिल हैं; दर्शक कक्ष, जैसे दीवान-ए-खास

अजंता गुफाएँ (1983) स्थान: अजंता महाराष्ट्र में औरंगाबाद के पास **वाघोरा नदी** पर **सह्याद्रि पर्वतमाला (पश्चिमी घाट)** में चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाओं की एक श्रृंखला है।

- **गुफाओं की संख्या:** कुल **29 गुफाएं हैं** (सभी बौद्ध) जिनमें से 25 का उपयोग विहार या आवासीय गुफाओं के रूप में किया जाता था जबकि 4 का उपयोग चैत्य या प्रार्थना कक्ष के रूप में किया जाता था।
- **विकास का समय**
    - गुफाओं का विकास **200 ईसा पूर्व से 650 ईस्वी के बीच हुआ था** ।
    - **वाकाटक राजाओं** के संरक्षण में बौद्ध भिक्षुओं द्वारा किया गया था - जिनमें हरिषेण प्रमुख थे।
    - **चीनी बौद्ध यात्रियों फाह्यान** (चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के दौरान; 380- 415 ई.पू.) और **ह्वेन त्सांग** (सम्राट हर्षवर्द्धन के शासनकाल के दौरान; 606-647 ई.पू.) के यात्रा वृत्तांतों में पाया जा सकता है । .
- **चित्रकारी**
    - इन गुफाओं में आकृतियाँ **फ्रेस्को पेंटिंग का उपयोग करके बनाई गई थीं** ।
    - चित्रों की रूपरेखा लाल रंग से बनाई गई थी। चित्रों में **नीले रंग की अनुपस्थिति** एक प्रमुख विशेषता है ।
    - पेंटिंग आम तौर पर बौद्ध धर्म - बुद्ध के जीवन और जातक कहानियों - पर **आधारित होती हैं।**

नालन्दा, बिहार में नालन्दा महाविहार का पुरातात्विक स्थल (2016)

- तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से 13 वीं शताब्दी ईस्वी तक के एक मठवासी और शैक्षिक संस्थान के अवशेष ।
- इसमें स्तूप, मंदिर, विहार (आवासीय और शैक्षिक भवन) और प्लास्टर, पत्थर और धातु से बनी महत्वपूर्ण कलाकृतियाँ शामिल हैं।
- भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय माना जाता है।

सांची में बौद्ध स्मारक (1989)

- यह अस्तित्व में सबसे पुराना बौद्ध अभयारण्य है और 12 वीं शताब्दी ईस्वी तक भारत में एक प्रमुख बौद्ध केंद्र था
- अखंड स्तंभ, महल, मंदिर और मठ) सभी अलग-अलग संरक्षित राज्यों में हैं, जिनमें से अधिकांश दूसरी और पहली शताब्दी ईसा पूर्व के हैं।

चंपानेर-पावागढ़ पुरातत्व पार्क (2004)

- गुजरात राज्य की 16 वीं शताब्दी की राजधानी के अवशेष।

- वीं से 14 वीं शताब्दी के अन्य अवशेष, किलेबंदी, महल, धार्मिक इमारतें, आवासीय परिसर, कृषि संरचनाएं और जल प्रतिष्ठान भी शामिल हैं।
- पावागढ़ पहाड़ी की चोटी पर स्थित कालिकामाता मंदिर एक महत्वपूर्ण मंदिर माना जाता है, जो साल भर बड़ी संख्या में तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है।
- यह स्थान मुगल-पूर्व का एकमात्र पूर्ण और अपरिवर्तित इस्लामी शहर है।

छत्रपति शिवाजी टर्मिनस (पूर्व में विक्टोरिया टर्मिनस) (2004)

- भारत में विक्टोरियन गोथिक पुनरुद्धार वास्तुकला का उदाहरण भारतीय पारंपरिक वास्तुकला से प्राप्त विषयों के साथ मिश्रित है।
- ब्रिटिश वास्तुकार एफडब्ल्यू स्टीवंस द्वारा डिजाइन की गई यह इमारत 'गॉथिक सिटी' और भारत के प्रमुख अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक बंदरगाह के रूप में बॉम्बे का प्रतीक बन गई। देर से मध्ययुगीन इतालवी मॉडल पर आधारित उच्च विक्टोरियन गोथिक डिजाइन के अनुसार, टर्मिनल को 1878 में शुरू करके 10 वर्षों में बनाया गया था।
- इसका उल्लेखनीय पत्थर का गुंबद, बुर्ज, नुकीले मेहराब और विलक्षण भूमि योजना पारंपरिक भारतीय महल वास्तुकला के करीब हैं।

गोवा के चर्च और कॉन्वेंट (1986)

- गोवा के चर्च और कॉन्वेंट, विशेष रूप से बेसिलिका ऑफ बॉम जीसस एशिया में धर्म प्रचार की शुरुआत का संकेत देते हैं।
- बेसिलिका ऑफ बॉम जीसस में सेंट फ्रांसिस जेवियर की पवित्र कब्र भी है।
- ये स्मारक एशिया के प्रमुख हिस्सों में मैनुअलीन, मैननरिस्ट और बारोक कला के प्रसार के लिए जाने जाते हैं।

एलीफेंटा गुफाएँ (1987)

- मुंबई के नजदीक ओमान सागर में एलिफेंटा द्वीप या घारापुरी द्वीप (शाब्दिक रूप से 'गुफाओं का शहर') पर स्थित है।
- इसमें शैव पंथ से जुड़ी रॉक कला का संग्रह है।
- यह भारतीय कला की महानता का एक महत्वपूर्ण प्रतीक है, विशेषकर मुख्य गुफा में विशाल ऊँची नक्काशियाँ।

- इनका निर्माण लगभग 5वीं से 6ठी शताब्दी ईसवी के मध्य में हुआ था।

एलोरा की गुफाएँ

- **स्थान: यह महाराष्ट्र के सह्याद्रि पर्वतमाला** में अजंता की गुफाओं से लगभग 100 किलोमीटर दूर स्थित है।
- **गुफाओं की संख्या: यह 34 गुफाओं** का एक समूह है - 17 **ब्राह्मणवादी** , 12 **बौद्ध** और 5 **जैन**।
- **विकास का समय**
    - **5 वीं और 11 वीं शताब्दी ईस्वी** के बीच विदर्भ, कर्नाटक और तमिलनाडु के विभिन्न गिल्डों द्वारा विकसित किया गया था (अजंता गुफाओं की तुलना में नया)।
    - यही कारण है कि गुफाएँ विषय और स्थापत्य शैली के संदर्भ में प्राकृतिक विविधता को दर्शाती हैं।
- एलोरा परिसर को 1983 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल नामित किया गया था।
- गुफा मंदिरों में सबसे उल्लेखनीय कैलासा **(कैलासनाथ; गुफा 16) है** , जिसका नाम हिमालय की कैलासा श्रृंखला में उस पर्वत के नाम पर रखा गया है जहां हिंदू भगवान शिव रहते हैं।

फ़तेहपुर सीकरी (1986)

- वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सम्राट अकबर द्वारा निर्मित, फ़तेहपुर सीकरी या 'विजय का शहर', थोड़े समय के लिए मुग़ल साम्राज्य की राजधानी के रूप में भी कार्य किया।
- इसमें स्मारकों और मंदिरों की एक श्रृंखला शामिल है, जिसमें भारत की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक- जामा मस्जिद भी शामिल है।

महान जीवित चोल मंदिर (1987, 2004)

- चोल साम्राज्य के राजाओं द्वारा निर्मित, ये मंदिर वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और कांस्य ढलाई में चोलों की सटीकता और पूर्णता को दर्शाते हैं।
- वीं और 12 वीं सदी के तीन मंदिर शामिल हैं: तंजावुर में बृहदेश्वर मंदिर, गंगाईकोंडाचोलीस्वरम में बृहदेश्वर मंदिर, और दारासुरम में ऐरावतेश्वर मंदिर।
- 1035 में राजेंद्र प्रथम द्वारा निर्मित गंगैकोंडाचोलीस्वरम मंदिर और राजराज द्वितीय द्वारा निर्मित ऐरावतेश्वर मंदिर में क्रमशः 53 मीटर और 24 मीटर के विमान (गर्भगृह टॉवर) हैं।
- **बृहदीश्वर और ऐरावतेश्वर मंदिर**

हम्पी में स्मारकों का समूह (1986)

- यह स्थल विजयनगर राज्य की अंतिम राजधानी थी।
- इन द्रविड़ मंदिरों और महलों का निर्माण 14 वीं और 16 वीं शताब्दी के बीच विजयनगर के शासकों द्वारा किया गया था।
- 1565 में, शहर पर डेक्कन मुस्लिम कॉन्फेडेरसी ने कब्ज़ा कर लिया और छोड़े जाने से पहले 6 महीने की अवधि तक लूटपाट की।

महाबलीपुरम में स्मारकों का समूह (1984)

- स्मारकों के इस समूह की स्थापना 7 वीं और 8 वीं शताब्दी में पल्लव राजाओं द्वारा बंगाल की खाड़ी के कोरोमंडल तट पर की गई थी।
- ये मंदिर रथों (रथों के रूप में मंदिर), मंडप (गुफा अभयारण्य) और विशाल खुली हवा वाली राहतें जैसे- 'गंगा का अवतरण' के रूप में जटिल और अद्वितीय वास्तुकला शैलियों का दावा करते हैं।
- इसमें रिवेज़ का मंदिर भी शामिल है, जिसमें शिव की महिमा को समर्पित हजारों मूर्तियां हैं।

पत्तदकल में स्मारकों का समूह (1987)

- वीं और 8 वीं शताब्दी के दौरान चालुक्य राजवंश के तहत हासिल किया गया था।
- इसमें नौ हिंदू मंदिरों के साथ-साथ एक जैन अभयारण्य भी शामिल है, जिसमें विरुपाक्ष का मंदिर भी शामिल है, जो रानी लोकमहादेवी द्वारा अपने पति की जीत की याद में 740 ई. में निर्मित एक उत्कृष्ट कृति है।

राजस्थान के पहाड़ी किले (2013)

- इस साइट में चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, सवाई माधोपुर, जैसलमेर, जयपुर और झालावाड़ में स्थित छह राजसी किले शामिल हैं, जो सभी राजस्थान राज्य में स्थित हैं।
- वीं से 18 वीं शताब्दी तक इस भूमि पर राजपूत शासन की जीवनशैली और प्रकृति को दर्शाता है।
- ये किलेबंदी शहरी केंद्रों, महलों, व्यापारिक केंद्रों और मंदिरों को घेरती है, जहां कला और संस्कृति के विभिन्न रूप विकसित हुए।
- कुछ शहरी केंद्र, साथ ही अधिकांश मंदिर और अन्य पवित्र स्थान बच गए हैं क्योंकि किलों ने सुरक्षा के लिए प्राकृतिक संसाधनों जैसे-पहाड़ियों, रेगिस्तानों, जंगलों आदि का उपयोग किया था।

अहमदाबाद का ऐतिहासिक शहर (2017)

- साबरमती नदी के पूर्वी तट पर स्थित इस शहर की स्थापना 15वीं शताब्दी में सुल्तान अहमद शाह ने की थी। यह सदियों तक गुजरात राज्य की राजधानी के रूप में भी कार्य करता रहा।
- यह शहर इस भूमि पर विविध धर्मों के सामंजस्यपूर्ण अस्तित्व का प्रमाण है, जो इसकी वास्तुकला द्वारा प्रदर्शित होता है जिसमें विभिन्न मस्जिदों, कब्रों के साथ-साथ कई हिंदू और जैन मंदिरों के साथ प्रसिद्ध भद्र गढ़ भी शामिल है।
- शहरी ताने-बाने में गेट वाली पारंपरिक गलियों (पुरस) में घने-भरे पारंपरिक घर (पोल) शामिल हैं।

हुमायूँ का मकबरा, दिल्ली (1993)

- 1570 में निर्मित, इसका दीर्घकालिक सांस्कृतिक महत्व है क्योंकि यह भारत में निर्मित होने वाला पहला उद्यान-मकबरा था।
- यह मकबरा ताज महल सहित कई वास्तुशिल्प नवाचारों के पीछे प्रेरणा था।

जयपुर शहर, राजस्थान (2019)

- इसकी **स्थापना 1727 ई. में आमेर के** तत्कालीन कछवाहा राजपूत शासक सवाई जय सिंह द्वितीय ने की थी। यह **राजस्थान राज्य की राजधानी के रूप में भी कार्य करता है।**
- शहर को मैदानी इलाकों में स्थापित किया गया था और वैदिक वास्तुकला के आलोक में व्याख्या की गई **ग्रिड योजना के अनुसार बनाया गया था ।**
- शहर की शहरी योजना **प्राचीन हिंदू और आधुनिक मुगल के साथ-साथ पश्चिमी संस्कृतियों के विचारों के आदान-प्रदान को दर्शाती है।**
- एक वाणिज्यिक राजधानी बनने के लिए डिज़ाइन किए गए इस शहर ने आज तक अपनी स्थानीय वाणिज्यिक, कारीगरी और सहकारी परंपराओं को बरकरार रखा है।
- शहर के प्रतिष्ठित स्मारकों में **गोविंद देव मंदिर, सिटी पैलेस, जंतर मंतर, हवा महल** आदि शामिल हैं।
- **विश्व धरोहर स्थल** की मान्यता पाने वाला **देश का दूसरा शहर** बन गया है ।

खजुराहो स्मारक समूह (1986)

- इन मंदिरों का निर्माण चंदेल राजवंश के दौरान किया गया था, जो 950 और 1050 के बीच अपने चरम पर था।
- केवल 20 मंदिर बचे हैं, जो दो अलग-अलग धर्मों - हिंदू धर्म और जैन धर्म से संबंधित हैं, जिनमें जटिल और सुंदर नक्काशीदार मूर्तियों से सजाए गए प्रसिद्ध कंदारिया मंदिर भी शामिल है।

बोधगया में महाबोधि मंदिर परिसर (2002)

- तीसरी शताब्दी में सम्राट अशोक द्वारा बनवाया गया था , हालाँकि वर्तमान संरचना 5 वीं या 6 वीं शताब्दी की है।
- यह पूरी तरह से ईंटों से निर्मित सबसे पुराने बौद्ध मंदिरों में से एक है और इसे गौतम बुद्ध के जीवन से जुड़े चार पवित्र स्थलों में से एक माना जाता है।

भारत की पर्वतीय रेलवे (1999, 2005, 2008)

- इस साइट में तीन रेलवे शामिल हैं:
- **दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे**
- नीलगिरि माउंटेन रेलवे: यह लाइन 1891 में शुरू हुई और 1908 तक पूरी हुई, तमिलनाडु में 46 किलोमीटर लंबी मीटर-गेज सिंगल-ट्रैक रेलवे है।
- **कालका शिमला रेलवे**

कुतुब मीनार और उसके स्मारक, दिल्ली (1993)

- वीं शताब्दी की शुरुआत में दिल्ली में लाल बलुआ पत्थर से किया गया था।
- इसकी ऊंचाई 72.5 मीटर है, इसके आधार और शिखर पर व्यास क्रमशः 14.32 मीटर और 2.75 मीटर है।
- टावर विभिन्न सौंदर्य-सुखदायक खजानों से घिरा हुआ है, उदाहरण के लिए- 1311 में निर्मित अलाई दरवाजा और साथ ही उत्तरी भारत की सबसे पुरानी मस्जिद कुव्वतुल-इस्लाम सहित दो मस्जिदें।

रानी-की-वाव (रानी की बावड़ी), पाटन, गुजरात (2014)

- सरस्वती नदी के तट पर स्थित इस बावड़ी का निर्माण एक राजा की स्मृति में करवाया गया था।
- बावड़ियों को आसानी से सुलभ भूमिगत जल संसाधन और भंडारण प्रणाली माना जाता है, जिनका निर्माण भारतीय उपमहाद्वीप में तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व से किया गया है।
- यह बावड़ी मारू-गुर्जर स्थापत्य शैली को दर्शाती है, जिसे पानी की पवित्रता पर जोर देने के लिए एक उल्टे मंदिर के रूप में डिजाइन किया गया है और यह धार्मिक, पौराणिक और धर्मनिरपेक्ष कल्पना के संयोजन को दर्शाती हजार से अधिक मूर्तियों से संपन्न है।

लाल किला परिसर (2007)

- इसे मुगल सम्राट शाहजहां की राजधानी शाहजहांनाबाद के महल किले के रूप में बनाया गया था और इसका नाम लाल बलुआ पत्थर की विशाल दीवारों के नाम पर रखा गया है।
- संपूर्ण रूप से लाल किला परिसर में लाल किला के साथ-साथ 1546 में इस्लाम शाह सूरी द्वारा निर्मित सलीमगढ़ किला भी शामिल है।
- लाल किला मुगल वास्तुकला नवाचार और शिल्प कौशल की पराकाष्ठा का प्रतिबिंब है। महल की योजना इस्लामी प्रोटोटाइप पर आधारित है, लेकिन प्रत्येक संरचना फारसी, तिमुरिड और हिंदू परंपराओं के संयोजन से प्राप्त वास्तुशिल्प तत्वों को प्रतिबिंबित करती है।

- मंडपों की पंक्ति एक सतत जल चैनल से जुड़ी हुई है जिसे नहर-ए-बहिश्त (स्वर्ग की धारा) के नाम से जाना जाता है।

भीमबेटका के रॉक शेल्टर (2003)

- ये आश्रय स्थल मध्य भारतीय पठार के दक्षिणी किनारे पर, विंध्य पर्वतमाला की तलहटी में स्थित हैं।
- प्राकृतिक शैल आश्रयों के पांच समूहों के रूप में खोजे गए, जिनमें मेसोलिथिक और उसके बाद के अन्य कालखंडों की पेंटिंग प्रदर्शित हैं।
- आसपास के क्षेत्रों के निवासियों की सांस्कृतिक परंपराएँ चित्रों में प्रदर्शित परंपराओं के समान हैं।

सूर्य मंदिर, कोणार्क (1984)

- कोणार्क सूर्य मंदिर, पूर्वी ओडिशा में पवित्र शहर पुरी के पास स्थित है।
- वीं शताब्दी में **राजा नरसिम्हादेव प्रथम** (1238-1264 ई.) द्वारा किया गया था। इसका पैमाना, परिशोधन और संकल्पना **गंगा साम्राज्य** की ताकत और स्थिरता के साथ-साथ ऐतिहासिक परिवेश की मूल्य प्रणालियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- यह मंदिर एक विशाल रथ के आकार में बनाया गया है। यह सूर्य देव को समर्पित है। इस अर्थ में, यह सीधे और भौतिक रूप से **ब्राह्मणवाद और तांत्रिक विश्वास प्रणालियों से जुड़ा हुआ है** ।
- कोणार्क मंदिर न केवल अपनी स्थापत्य भव्यता के लिए बल्कि मूर्तिकला कार्य की जटिलता और प्रचुरता के लिए भी व्यापक रूप से जाना जाता है।
- **कलिंग वास्तुकला** की उपलब्धि के उच्चतम बिंदु को दर्शाता है जो जीवन की सुंदरता, खुशी और लय को उसकी सभी अद्भुत विविधताओं को दर्शाता है।
- कोणार्क सूर्य मंदिर के दोनों ओर 12 पहियों की दो पंक्तियाँ हैं। कुछ लोग कहते हैं कि पहिये एक दिन के 24 घंटों का प्रतिनिधित्व करते हैं और अन्य कहते हैं कि 12 महीने।
- कहा जाता है कि सात घोड़े सप्ताह के सात दिनों के प्रतीक हैं।
- नाविकों ने एक बार कोणार्क के इस सूर्य मंदिर को ब्लैक पैगोडा कहा था क्योंकि ऐसा माना जाता था कि यह जहाजों को किनारे पर खींचता था और जहाज़ों के टूटने का कारण बनता था।
- कोणार्क सूर्य पंथ के प्रसार के इतिहास में एक अमूल्य कड़ी है, जो 8वीं शताब्दी के दौरान कश्मीर में शुरू हुआ और अंततः पूर्वी भारत के तटों तक पहुंच गया।

ताज महल (1983)

- ताज महल (आगरा) **सफेद संगमरमर का एक मकबरा है जिसे मुगल बादशाह शाहजहाँ ने** अपनी पत्नी मुमताज महल की याद में बनवाया था। यह **यमुना नदी के तट पर स्थित है**।
- ताज महल का निर्माण **1631 से 1648 ई. तक 17 वर्षों की अवधि में पूरा हुआ**।
- ताज महल को **राष्ट्रीय महत्व का केंद्रीय संरक्षित स्मारक घोषित किया गया था**।
- इसे दुनिया के सात आश्चर्यों में से एक माना जाता है, इसे **1983 में विश्व धरोहर स्थलों की सूची में शामिल किया गया था**।
- यह अपने अनूठे लेआउट, समरूपता और जड़ाउ कार्य में पूर्णता के लिए प्रसिद्ध है।

ले कोर्बुज़िए का वास्तुशिल्प कार्य (2016)

- इस अंतरराष्ट्रीय धारावाहिक संपत्ति में 7 देशों में फैले 17 स्थल शामिल हैं, जो आधुनिक परंपराओं के साथ बुनी गई वास्तुशिल्प अभिव्यक्ति के एक नए रूप का प्रमाण है।
- ये स्थल कुल मिलाकर आधुनिक आंदोलन के आदर्शों का प्रचार करते हैं और इन्हें 20वीं सदी में वास्तुकला और समाज के बुनियादी मुद्दों के लिए एक महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया के रूप में भी माना जाता है।

- कॉम्प्लेक्स डु कैपिटोल, चंडीगढ़, टोक्यो (जापान) में पश्चिमी कला संग्रहालय, ला प्लाटा (अर्जेंटीना) में डॉ कुरुचेट का घर, मार्सिले (फ्रांस) में यूनिटे डी'हैबिटेशन आदि कुछ प्रसिद्ध स्थल हैं। यह संपत्ति.

जंतर मंतर, जयपुर (2010)

- वीं शताब्दी की शुरुआत में निर्मित , जंतर मंतर को खगोलीय स्थितियों को नग्न आंखों से देखने के लिए डिज़ाइन किया गया है। सटीक अवलोकन करने के लिए इस साइट पर 20 मुख्य उपकरणों का एक सेट स्थापित किया गया है।
- यह मुगल काल से चली आ रही खगोलीय कौशल और ज्ञान की अभिव्यक्ति है।

मुंबई के विक्टोरियन गोथिक और आर्ट डेको एन्सेम्बल्स (2018)

- वीं सदी में विक्टोरियन नियो-गॉथिक शैली और 20 वीं सदी में आर्ट डेको शैली में डिज़ाइन की गई सार्वजनिक इमारतों का संग्रह शामिल है।
- दोनों शैलियाँ भारतीय वास्तुशिल्प तत्वों के साथ मिश्रित हैं। उदाहरण के लिए- विक्टोरियन नियो-गॉथिक शैली में डिज़ाइन की गई इमारतें बालकनियों और बरामदों से सुसज्जित हैं। इसी प्रकार, इंडो-डेको एक शब्द है जिसका उपयोग आर्ट डेको कल्पना और वास्तुकला में भारतीय तत्वों को जोड़ने के बाद उभरी शैली का वर्णन करने के लिए किया जाता है।

काकतीय रुद्रेश्वर (रामप्पा) मंदिर (2021)

- हिंदू मंदिर का निर्माण 13वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में **काकतीय राजवंश के तहत किया गया था** ।
- इसे ग्रेनाइट और डोलराइट में पत्थर की नक्काशी और मूर्तियों से सजाया गया है जो क्षेत्रीय नृत्य रीति-रिवाजों को दर्शाते हैं।
- हिंदू प्रथाओं के अनुरूप, मंदिर का निर्माण इस तरह से किया जाता है कि यह पर्यावरण के साथ सामंजस्यपूर्ण रूप से मिश्रित हो।
- संरचना में हल्के झरझरा ईंटों, तथाकथित **'फ्लोटिंग ईंटों** ' से बने एक विशिष्ट और पिरामिडनुमा विमान के साथ नक्काशीदार ग्रेनाइट और डोलराइट के बीम और स्तंभों को सजाया गया है, जिससे छत संरचनाओं का वजन कम हो गया।

धोलावीरा: एक हड़प्पा शहर (2021)

- कांस्य युग में तीसरी से दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के मध्य तक हड़प्पा सभ्यता के केंद्रों में से एक था ।

- **1968 में पुरातत्वविद् जगत पति जोशी** द्वारा खोजे गए , धोलावीरा का नाम गुजरात के कच्छ जिले के एक गाँव के नाम पर रखा गया है।
- प्राचीन भारत में, यह 1500 ईसा पूर्व तक इसके पतन तक लगभग 1,500 वर्षों तक एक वाणिज्यिक और विनिर्माण केंद्र बना रहा।
- **मेसोपोटामिया** तक व्यापारिक संबंध थे । इस साइट को 1968 में फिर से खोजा गया था।
- मोहन-जो-दारो, गनवेरीवाला, हड़प्पा और राखीगढ़ी के बाद यह **सिंधु घाटी सभ्यता का पांचवां सबसे बड़ा महानगर था।**

ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क संरक्षण क्षेत्र (2014)

- हिमाचल प्रदेश राज्य में हिमालय पर्वत के पश्चिमी भाग में स्थित यह पार्क अपनी ऊंची अल्पाइन चोटियों, अल्पाइन घास के मैदानों और नदी के जंगलों के लिए प्रसिद्ध है।
- यह कई नदियों के हिमानी और बर्फ पिघले पानी के स्रोतों के साथ-साथ जलग्रहण क्षेत्र को भी घेरता है।
- यह एक जैव विविधता हॉटस्पॉट है जिसमें 25 प्रकार के वन हैं जिनमें असंख्य जीव-जन्तु प्रजातियाँ निवास करती हैं, जिनमें से कई खतरे में हैं।

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान (1985)

- **स्थान:** यह **असम राज्य में स्थित है** और 42,996 हेक्टेयर में फैला है। यह ब्रह्मपुत्र घाटी के बाढ़ क्षेत्र में सबसे बड़ा अबाधित और प्रतिनिधि क्षेत्र है।
- **कानूनी स्थिति**
    - इसे **1974 में राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया था।**
    - इसे **बाघ अभयारण्य घोषित किया गया है 2007 से।** इसका कुल बाघ आरक्षित क्षेत्र 1,030 वर्ग किमी है और कोर क्षेत्र 430 वर्ग किमी है।
- **अंतर्राष्ट्रीय स्थिति**
    - इसे 1985 में **यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।**
    - इसे बर्डलाइफ इंटरनेशनल द्वारा एक **महत्वपूर्ण पक्षी क्षेत्र के रूप में मान्यता दी गई है।**
- **महत्वपूर्ण प्रजातियाँ मिलीं**
    - यह **दुनिया के सबसे एक सींग वाले गैंडों का घर है।**

- काजीरंगा में संरक्षण प्रयासों का अधिकांश ध्यान 'बड़ी चार' प्रजातियों- गैंडा, हाथी, रॉयल बंगाल टाइगर और एशियाई जल भैंस पर केंद्रित है।
- 2018 की जनगणना में 2,413 गैंडे और लगभग 1,100 हाथी मिले थे।
- 2014 में आयोजित बाघ जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, काजीरंगा में अनुमानित 103 बाघ थे, जो उत्तराखंड में **जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क** (215) और कर्नाटक में **बांदीपुर नेशनल पार्क (120)** के बाद भारत में **तीसरी सबसे अधिक आबादी है।**
- काजीरंगा भारतीय उपमहाद्वीप में पाए जाने वाले प्राइमेट्स की 14 प्रजातियों में से 9 का घर भी है।

- **नदियाँ और राजमार्ग**
  - राष्ट्रीय **राजमार्ग 37** पार्क क्षेत्र से होकर गुजरता है।
  - पार्क में 250 से अधिक मौसमी जल निकाय हैं, इसके अलावा इसमें बहने वाली **डिफ्लू नदी भी है।**

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (1985)

- यह आर्द्रभूमि राजस्थान राज्य में स्थित है और 19 $^{वीं}$ शताब्दी के अंत तक बत्तख शूटिंग रिजर्व के रूप में कार्य करती थी। हालाँकि, जल्द ही शिकार बंद हो गया और इस क्षेत्र को 1982 में राष्ट्रीय उद्यान घोषित कर दिया गया।
- यह राष्ट्रीय उद्यान 375 पक्षी प्रजातियों और विभिन्न अन्य जीवन रूपों का घर है। यह पुरापाषाणकालीन प्रवासी जलपक्षी, गंभीर रूप से लुप्तप्राय साइबेरियन क्रेन के साथ-साथ विश्व स्तर पर खतरे में पड़े ग्रेटर स्पॉटेड ईगल और इंपीरियल ईगल के लिए एक शीतकालीन आश्रय स्थल के रूप में भी कार्य करता है।
- यह गैर-प्रवासी प्रजनन पक्षियों की निवासी आबादी के लिए प्रशंसित है।

मानस वन्यजीव अभयारण्य (1985)

- मानस वन्यजीव अभयारण्य असम में स्थित एक जैव विविधता हॉटस्पॉट है। यह मानस टाइगर रिजर्व का एक हिस्सा है और मानस नदी के किनारे फैला हुआ है।
- जंगली पहाड़ियों, जलोढ़ घास के मैदानों और उष्णकटिबंधीय सदाबहार जंगलों की एक श्रृंखला इस स्थल की लुभावनी सुंदरता और शांत वातावरण के लिए जिम्मेदार है।
- यह बाघ, एक सींग वाले गैंडे, दलदली हिरण, पिग्मी हॉग और बंगाल फ्लोरिकन जैसी कई लुप्तप्राय प्रजातियों को रहने योग्य वातावरण भी प्रदान करता है।

नंदा देवी और फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान (1988, 2005)

- ये दोनों राष्ट्रीय उद्यान असाधारण रूप से सुंदर उच्च ऊंचाई वाले पश्चिम हिमालयी परिदृश्य हैं और उत्तराखंड राज्य की सीमाओं के भीतर आते हैं।
- नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान में ऊबड़-खाबड़ और ऊंचे-ऊंचे जंगल हैं और भारत के दूसरे सबसे ऊंचे पर्वत-नंदा देवी की चोटी पर इसका प्रभुत्व है। इसके विपरीत, फूलों की घाटी अल्पाइन फूलों की सौंदर्यपूर्ण रूप से मनभावन घास के मैदानों को प्रदर्शित करती है।
- इन पार्कों में कई प्रकार की पुष्प और जीव-जंतु प्रजातियाँ निवास करती हैं, साथ ही विश्व स्तर पर संकटग्रस्त प्रजातियों की एक महत्वपूर्ण आबादी भी है, जिनमें शामिल हैं- हिम तेंदुआ, हिमालयी कस्तूरी मृग आदि।

सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान (1987)

- सुंदरवन मैंग्रोव वन, दुनिया के सबसे बड़े वनों में से एक, भारत और बांग्लादेश में बंगाल की खाड़ी पर **गंगा, ब्रह्मपुत्र और मेघना नदियों के डेल्टा पर स्थित है।**
- **1987 में अंकित** भारत के सुंदरबन विश्व धरोहर स्थल की सीमा से सटा हुआ है ।
- **मैंग्रोव वनों** के छोटे द्वीपों के एक जटिल नेटवर्क से घिरा हुआ है , और चल रही पारिस्थितिक प्रक्रियाओं का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।
- यह क्षेत्र अपने विस्तृत जीव-जंतुओं के लिए जाना जाता है, जिनमें 260 पक्षी प्रजातियाँ, बंगाल टाइगर और अन्य खतरे वाली प्रजातियाँ जैसे एस्टुरीन मगरमच्छ और भारतीय अजगर शामिल हैं।
    - यह कई दुर्लभ और विश्व स्तर पर खतरे में पड़ी वन्यजीव प्रजातियों का घर है, जैसे एस्टुरीन मगरमच्छ, रॉयल बंगाल टाइगर, वॉटर मॉनिटर छिपकली, **गंगा डॉल्फिन** और **ऑलिव रिडले कछुए।**

पश्चिमी घाट (2012)

- पश्चिमी घाट में भारत के पश्चिमी तट के समानांतर चलने वाली और केरल, महाराष्ट्र, गोवा, गुजरात, तमिलनाडु और कर्नाटक राज्यों से गुजरने वाली पहाड़ों की एक श्रृंखला शामिल है।
- वे 1600 किमी लंबे विस्तार में एक विशाल क्षेत्र को कवर करते हैं और लगभग 11 डिग्री उत्तर में 30 किमी पालघाट अंतराल से केवल एक बार बाधित होते हैं।
- वे भारतीय मानसून मौसम पैटर्न को भी प्रभावित करते हैं जो क्षेत्र की गर्म उष्णकटिबंधीय जलवायु में मध्यस्थता करते हैं और दक्षिण-पश्चिम से आने वाली बारिश से भरी मानसूनी हवाओं में बाधा के रूप में कार्य करते हैं।

- पश्चिमी घाट उष्णकटिबंधीय सदाबहार वनों के साथ-साथ विश्व स्तर पर संकटग्रस्त 325 प्रजातियों का भी घर है।

कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान (2016)

- **सिक्किम में स्थित,** यह राष्ट्रीय उद्यान दुनिया की तीसरी सबसे ऊंची चोटी, माउंट खंगचेंदज़ोंगा से घिरा हुआ है।
- पार्क में खड़ी ढलान वाली घाटियाँ, बर्फ शामिल हैं
- माउंट खंगचेंदज़ोंगा के आधार के आसपास स्थित 26 किमी लंबे ज़ेमू ग्लेशियर सहित ढके हुए पहाड़ और विभिन्न झीलें और ग्लेशियर।
- यह सिक्किम राज्य के लगभग 25% हिस्से को कवर करता है और विभिन्न स्थानिक और संकटग्रस्त पौधों और जानवरों की प्रजातियों के लिए रहने योग्य वातावरण सुनिश्चित करता है।
- **कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान का सांस्कृतिक महत्व**
    - **दुनिया की अग्रणी धार्मिक परंपराओं** में से एक का पवित्र स्थल है। **बेयुल या छिपी हुई पवित्र भूमि की धारणा,** जो पूरे सिक्किम तक फैली हुई है, लेकिन इसका दिल कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान के क्षेत्र में है, तिब्बती बौद्ध धर्म में महत्वपूर्ण है, न केवल सिक्किम के लिए बल्कि पड़ोसी देशों और उससे परे भी।
    - कंचनजंगा का बहुस्तरीय पवित्र परिदृश्य और छिपी हुई भूमि की सांस्कृतिक और धार्मिक प्रासंगिकता (तिब्बती बौद्ध धर्म में बेयुल और लेप्चा परंपरा में मायल लियांग) सिक्किम के लिए विशिष्ट है और विभिन्न धार्मिक परंपराओं के बीच सह-अस्तित्व और आदान-प्रदान का एक अनूठा उदाहरण है। **और जन।**
    - पारिस्थितिकी और स्थानीय पौधों के विशिष्ट गुणों के संबंध में **लेप्चा की स्वदेशी धार्मिक और सांस्कृतिक प्रथाएं** पारंपरिक ज्ञान और पर्यावरण संरक्षण का एक उदाहरण हैं।

7. भारत के प्रमुख समुद्री बंदरगाह

- **भारत में 13 प्रमुख बंदरगाह** (12 सरकारी स्वामित्व वाले और एक निजी) और **205 अधिसूचित छोटे और मध्यवर्ती बंदरगाह हैं** जो भारी मात्रा में यातायात संभालते हैं। किसी राष्ट्र के विकास में बंदरगाह बहुत केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। बंदरगाहों के माध्यम से परिवहन की लागत, क्षमता और आसानी उपलब्ध अन्य साधनों की तुलना में सबसे प्रभावी है।
- लगभग **95 प्रतिशत** और **मूल्य के हिसाब से 70 प्रतिशत** समुद्री परिवहन के माध्यम से होता है।
- भारत के सभी बंदरगाह भारत के **9 तटीय राज्यों केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गोवा, गुजरात, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में स्थित हैं** । भारत की विस्तारित तटरेखा भूमि के प्रमुख हिस्सों में से एक है जो जल निकाय में बदल जाती है। देश के तेरह प्रमुख बंदरगाह बड़ी मात्रा में कंटेनर और कार्गो यातायात संभालते हैं।
- **मुंबई, कांडला, मैंगलोर, जेएनपीटी, वधावन, मोर्मुगाओ और कोचीन** के बंदरगाह हैं ।
- **चेन्नई, तूतीकोरिन, विशाखापत्तनम, पारादीप, कोलकाता और एन्नोर के** बंदरगाह हैं । अंतिम, **एन्नोर एक पंजीकृत सार्वजनिक कंपनी है जिसमें सरकार की 68% हिस्सेदारी है।** अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में पोर्ट ब्लेयर है।
- **मुंबई भारत का सबसे बड़ा प्राकृतिक बंदरगाह है।**
- जैसा कि आप जानते हैं, भारत सरकार की एक संघीय संरचना है, और इसके संविधान के अनुसार, **समुद्री परिवहन को केंद्र और राज्य दोनों सरकारों द्वारा प्रशासित किया जाना है।** जबकि **केंद्र सरकार का शिपिंग मंत्रालय प्रमुख बंदरगाहों का प्रशासन करता है,** छोटे और मध्यवर्ती बंदरगाहों का प्रबंधन नौ तटीय राज्यों - आंध्र प्रदेश, गोवा, गुजरात, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, ओडिशा, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल **में संबंधित विभागों या मंत्रालयों द्वारा किया जाता है।** .

भारत में महत्वपूर्ण बंदरगाहों की सूची

भारत में महत्वपूर्ण प्रमुख बंदरगाहों की सूची नीचे दी गई है:

क्षेत्र	राज्य	पत्तन
पूर्वी तट	तमिलनाडु	**चेन्नई**
पश्चिमी तट	केरल	**कोच्चि** (कोचीन)
पूर्वी तट	तमिलनाडु	**एन्नोर**
पूर्वी तट	पश्चिम बंगाल	**कोलकाता** (हल्दिया)
पश्चिमी तट	गुजरात	**कांडला**
पश्चिमी तट	कर्नाटक	**मंगलौर**
पश्चिमी तट	गोवा	**मोरमुगाओ**
पश्चिमी तट	महाराष्ट्र	**मुंबई पोर्ट ट्रस्ट**
पश्चिमी तट	महाराष्ट्र	**जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट (जेएनपीटी) को न्हावा शेवा** , नवी मुंबई के नाम से भी जाना जाता है
पश्चिमी तट	महाराष्ट्र	**वधावन बंदरगाह**
पूर्वी तट	ओडिशा	**पारादीप**

क्षेत्र	राज्य	पत्तन
पूर्वी तट	तमिलनाडु	**तूतीकोरिन**
पूर्वी तट	आंध्र प्रदेश	**विशाखापत्तनम**

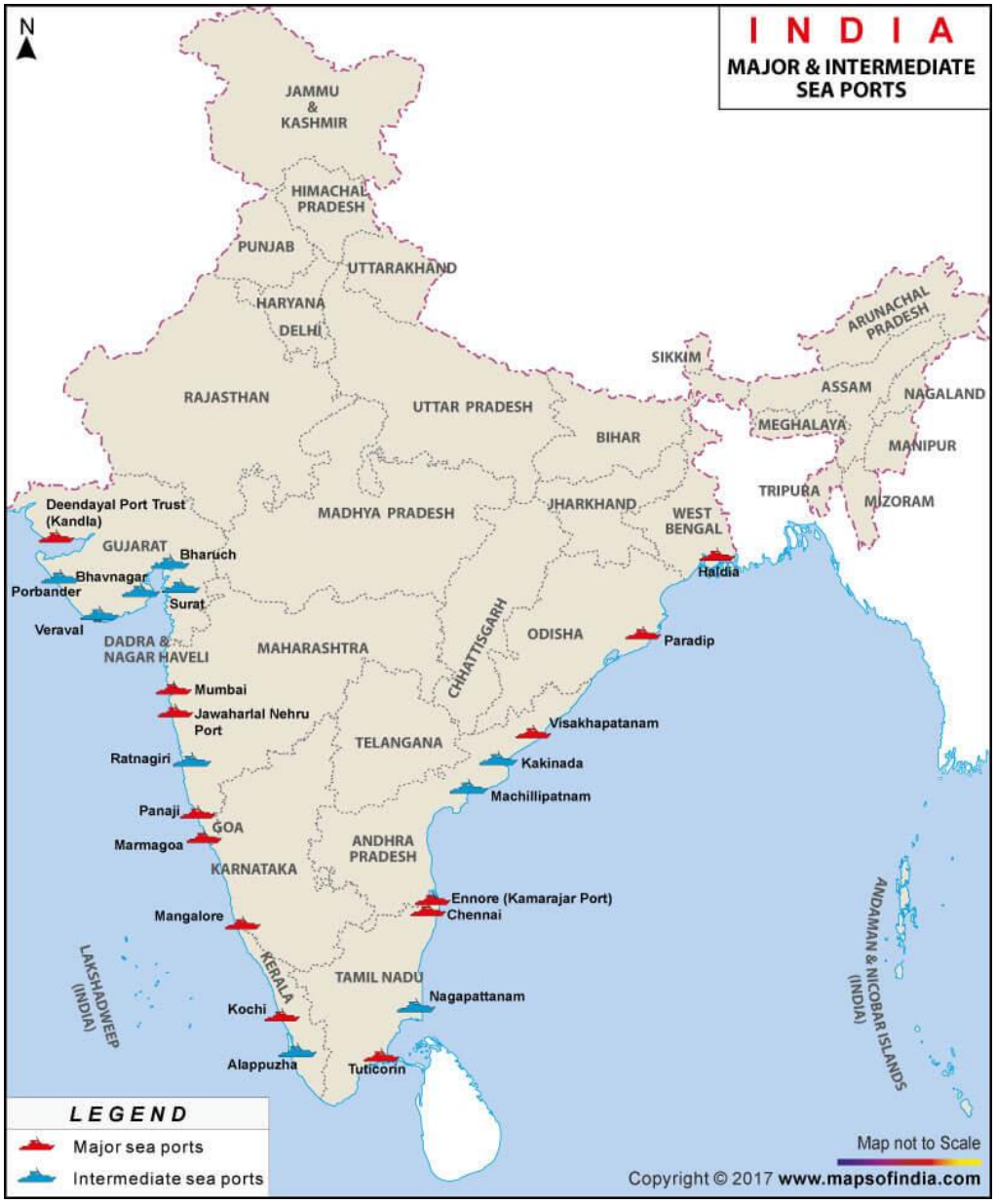

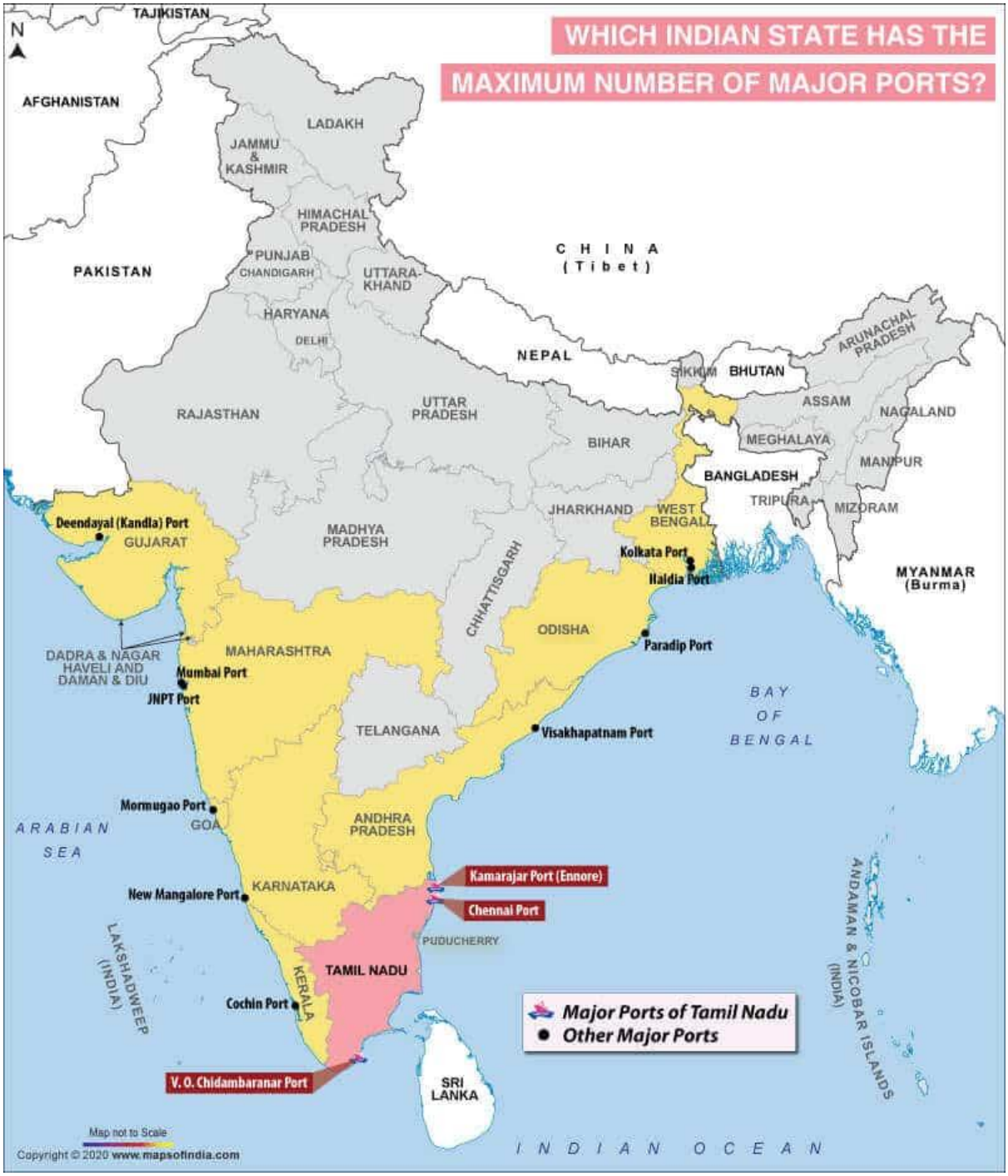

1. चेन्नई बंदरगाह

- चेन्नई बंदरगाह , जिसे पहले **मद्रास बंदरगाह** के नाम से जाना जाता था , मुंबई के न्हावा शेवा (जेएनपीटी) के बाद **भारत का दूसरा सबसे बड़ा कंटेनर बंदरगाह** है। यह बंदरगाह **बंगाल की खाड़ी में सबसे बड़ा है**।
- यह **गीले गोदी वाला** एक **कृत्रिम और सभी मौसम के लिए उपयुक्त बंदरगाह है।**

- यह बंदरगाह के अस्तित्व के कारण ही है कि **चेन्नई शहर अंततः दक्षिण भारत के प्रवेश द्वार के रूप में जाना जाने लगा।**

2. कोच्चि (कोचीन) बंदरगाह

- कोचीन बंदरगाह या कोच्चि बंदरगाह **अरब सागर** - लक्षद्वीप सागर - हिंद महासागर के समुद्री मार्ग पर कोच्चि शहर में एक प्रमुख बंदरगाह है और भारत के सबसे बड़े बंदरगाहों में से एक है। यह भारत का पहला ट्रांसशिपमेंट टर्मिनल भी है।
- यह बंदरगाह **कोच्चि झील में दो द्वीपों पर स्थित है : विलिंग्डन द्वीप और वल्लारपदम ,** फोर्ट कोच्चि नदी के मुहाने की ओर जो लक्षद्वीप सागर में खुलता है।
- **ज्वारीय बंदरगाह** का उदाहरण है ।
- बंदरगाह को आम तौर पर दक्षिण-पश्चिम भारत के **औद्योगिक और कृषि उपज बाजारों के लिए प्राकृतिक प्रवेश द्वार कहा जाता है।**
- **मसालों, चाय और कॉफी का निर्यात।**
- यह **जहाज निर्माण के केंद्रों में से एक है** ।

3. एन्नोर पोर्ट (कामराजार पोर्ट लिमिटेड)

- यह भारत का **12वाँ प्रमुख बंदरगाह है** और **भारत का पहला बंदरगाह है जो एक सार्वजनिक कंपनी है** ।
- यह चेन्नई बंदरगाह से लगभग 24 किमी उत्तर में कोरोमंडल तट पर स्थित है।
- व्यापार: लौह अयस्क, कोयला, पेट्रोलियम उत्पाद और रसायन।

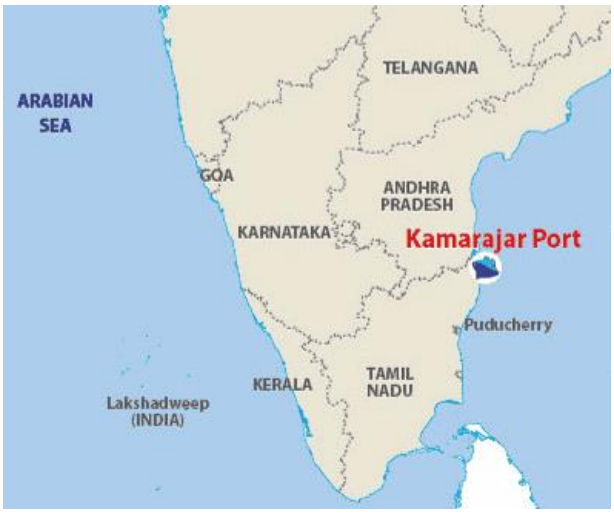

4. कोलकाता बंदरगाह

- कोलकाता बंदरगाह या कोलकाता बंदरगाह, जिसे आधिकारिक तौर पर **श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट ट्रस्ट के नाम से जाना जाता है , भारत का एकमात्र नदी तटीय प्रमुख बंदरगाह है** , जो समुद्र से लगभग 203 किलोमीटर दूर पश्चिम बंगाल के कोलकाता शहर में स्थित है।
- यह **भारत का सबसे पुराना परिचालन बंदरगाह है** और इसका निर्माण ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा किया गया था।
- कोलकाता एक मीठे पानी का बंदरगाह है जिसमें लवणता में कोई भिन्नता नहीं है।
- **डायमंड हार्बर के** नाम से जाना जाता है
- **ट्विन डॉक सिस्टम** के लिए जाना जाता है। **हुगली नदी के पूर्वी तट पर कोलकाता डॉक और पश्चिमी तट पर हल्दिया डॉक**
- व्यापार: जूट, चाय, कोयला, इस्पात

5. कांडला बंदरगाह

- कांडला शहर में स्थित **दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट , पश्चिमी भारत में गुजरात राज्य के कच्छ जिले में गांधीधाम शहर के पास एक बंदरगाह और शहर है।**
- **कच्छ की खाड़ी** पर स्थित , यह पश्चिमी तट पर प्रमुख बंदरगाहों में से एक है।
- **ज्वारीय बंदरगाह के नाम से जाना जाता है**
- इसका **निर्माण विभाजन के बाद किया गया था जब कराची बंदरगाह पाकिस्तान को हस्तांतरित कर दिया गया था।**
- यह मुंबई बंदरगाह की भीड़ से भी राहत दिलाता है
- **माल ढुलाई की मात्रा के हिसाब से सबसे बड़ा बंदरगाह।**
- इसे **व्यापार मुक्त क्षेत्र के रूप में स्वीकार किया गया है** ।

6. मैंगलोर बंदरगाह

- यह **गहरे पानी वाला, सभी मौसमों से प्रभावित बंदरगाह है।**
- **लौह अयस्क निर्यात** से संबंधित है
- यह **तटीय राज्य कर्नाटक का एकमात्र प्रमुख बंदरगाह है।**

7. मोरमुगाओ बंदरगाह

- **जुआरी नदी के मुहाने पर स्थित है**
- यह एक **प्राकृतिक बंदरगाह है**
- वर्ष 1963 में इसे प्रमुख बंदरगाह का दर्जा दिया गया।
- यह भारत में एक प्रमुख **लौह अयस्क निर्यातक बंदरगाह है।**

8. मुंबई पोर्ट ट्रस्ट

- **भारत में सबसे बड़ा प्राकृतिक बंदरगाह और बंदरगाह**
- पहले, इस बंदरगाह स्थान का उपयोग **शिवाजी की नौसेनाओं द्वारा किया जाता था।**
- **इस बंदरगाह में 3 संलग्न गीले गोदी हैं:**
    - राजकुमार की गोदी
    - विक्टोरिया डॉक
    - इंदिरा गोदी
- **भारत का सबसे व्यस्त** बंदरगाह
- कच्चे तेल और पेट्रोलियम उत्पादों के प्रबंधन के लिए **जवाहर द्वीप बंदरगाह में एक द्वीप है ।**

9. जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट (जेएनपीटी)

- **न्हावा शेवा (नवी मुंबई**) के नाम से भी जाना जाता है, **भारत का 100% लैंडलॉर्ड पोर्ट बनने वाला देश का पहला प्रमुख बंदरगाह है, जिसके सभी बर्थ पीपीपी मॉडल पर संचालित किए जा रहे हैं।**
    - न्हावा शेवा नाम उस क्षेत्र में मौजूद दो गांवों के नाम के कारण दिया गया है।
- **भारत में सबसे बड़ा कृत्रिम बंदरगाह और अग्रणी कंटेनर बंदरगाह** ।
- इसे **1989 में चालू किया गया था** और अपने संचालन के तीन दशकों में, जेएनपी एक बल्क-कार्गो टर्मिनल से **देश में प्रमुख कंटेनर बंदरगाह बन गया है।**
- यह **एलिफेंटा द्वीप के पास मुंबई बंदरगाह के पूर्वी तट पर स्थित है** और **ठाणे क्रीक के माध्यम से पहुंचा जा सकता है।**
- यह बंदरगाह भारतीय रेलवे के वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर का टर्मिनल प्वाइंट है।

- अपनी **अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ जेएनपी सभी अंतरराष्ट्रीय मानकों, उपयोगकर्ता के अनुकूल माहौल और** भीतरी इलाकों तक रेल और सड़क द्वारा उत्कृष्ट कनेक्टिविटी को पूरा करता है।
- यह **वर्तमान में 9000 बीस फुट समकक्ष इकाइयों (टीईयू) क्षमता वाले जहाजों को संभाल रहा है और उन्नयन के साथ, यह 12200 टीईयू क्षमता वाले जहाजों को संभाल सकता है।**
- व्यापार: **कपड़ा, खेल का सामान, कालीन, फार्मास्यूटिकल्स, रसायन, आदि।**

जमींदार बंदरगाह क्या है?

- इस मॉडल में, सार्वजनिक रूप से शासित बंदरगाह प्राधिकरण एक **नियामक निकाय और मकान मालिक के रूप में कार्य करता है,** जबकि निजी कंपनियां बंदरगाह संचालन - मुख्य रूप से कार्गो-हैंडलिंग गतिविधियां **करती हैं।**
- यहां, **बंदरगाह प्राधिकरण बंदरगाह के स्वामित्व को बनाए रखता है** जबकि बुनियादी ढांचे को निजी फर्मों को पट्टे पर दिया जाता है जो अपने स्वयं के अधिरचना प्रदान करते हैं और बनाए रखते हैं और कार्गो को संभालने के लिए अपने स्वयं के उपकरण स्थापित करते हैं।
- बदले में, जमींदार बंदरगाह को निजी इकाई से राजस्व का एक हिस्सा मिलता है।

सर्विस पोर्ट मॉडल?

- सेवा बंदरगाहों में, **बंदरगाह प्राधिकरण बंदरगाह गतिविधियों का प्रशासन और संचालन करता है।**
- बंदरगाह संचालन में नेविगेशनल सेवाएं, गोदाम सुविधाएं, क्रेन और कुशल कर्मचारी/मजदूर प्रदान करना शामिल है। बुनियादी ढांचे, अधिरचना का निर्माण और कर्मचारी उपलब्ध कराना बंदरगाह प्राधिकरण की जिम्मेदारी बन जाती है।
- भले ही बंदरगाह प्राधिकरण जनहित में कार्य करता हो, **बंदरगाह का पूर्ण स्वामित्व राज्य या सरकार के पास रहता है।**

10. वधावन बंदरगाह

- **13 वां प्रमुख बंदरगाह** होगा।
- इस बंदरगाह के विकास से **भारत दुनिया के टॉप-10 कंटेनर बंदरगाहों में शामिल देशों में से एक बन जाएगा।**

- **जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट (जेएनपीटी) को** मुख्य भागीदार बनाते हुए **एक विशेष प्रयोजन वाहन (एसपीवी) का** गठन किया जाएगा , जिसमें 50% के बराबर या उससे अधिक की इक्विटी भागीदारी होगी।
- बंदरगाह को **जमींदार मॉडल पर विकसित किया जाएगा।**
- गहरे ड्राफ्ट वाले जहाजों और बड़े जहाजों को संभालने की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए जेएनपीटी द्वारा वधावन बंदरगाह को **'सभी मौसम, सभी कार्गो' उपग्रह बंदरगाह के रूप में योजना बनाई गई है।**

11. पारादीप बंदरगाह

- **स्वतंत्रता के बाद पहला प्रमुख बंदरगाह चालू किया गया।**
- **महानदी नदी और बंगाल की खाड़ी के** संगम पर स्थित है ।
- **लौह एवं एल्युमीनियम के निर्यात का** कार्य करता है तथा लौह अयस्क भारी मात्रा में **जापान को निर्यात किया जाता है ।**

12. तूतीकोरिन बंदरगाह

- इस बंदरगाह का नाम बदलकर **वीओचिदंबरनार बंदरगाह कर दिया गया है।**
- यह **मन्नार की खाड़ी** में स्थित एक **कृत्रिम बंदरगाह है।**
- यह बंगाल की खाड़ी में **मोती मछली पालन के लिए प्रसिद्ध है** और इसलिए इसे मोती शहर के रूप में भी जाना जाता है।
- व्यापार: **कोयला, नमक, पेट्रोलियम उत्पाद और उर्वरक।**

13. विशाखापत्तनम बंदरगाह

- यह बंदरगाह एक प्राकृतिक बंदरगाह है और **माल ढुलाई की मात्रा के हिसाब से दूसरा सबसे बड़ा बंदरगाह भी है।**
- **यह बंदरगाह चेन्नई बंदरगाह और कोलकाता बंदरगाह के बीच में स्थित है।**
- **भारत का सबसे गहरा बंदरगाह** जापान को लौह अयस्क के निर्यात का कार्य करता है। जहाजों के निर्माण और मरम्मत की सुविधाएं उपलब्ध हैं।
- व्यापार: लौह अयस्क, कोयला, एल्यूमिना और तेल।

पोर्ट ब्लेयर

- यह बंदरगाह जहाज और उड़ान के माध्यम से भारत की मुख्य भूमि से जुड़ा हुआ था। यह बंदरगाह **सऊदी अरब और यूएस सिंगापुर नामक दो अंतरराष्ट्रीय शिपिंग लाइनों के बीच स्थित है।**

8.उद्योगों का विकास और औद्योगीकरण के चरण

उद्योग

- उद्योग **सक्रिय उद्यमों और संगठनों की एक श्रेणी है जो उत्पादों, सेवाओं या राजस्व के स्रोतों का उत्पादन या बिक्री करते हैं।**

- उद्योग का अर्थ कोई कारखाना नहीं है, इसका तात्पर्य उन आर्थिक गतिविधियों से है जो वस्तुओं के उत्पादन, खनिजों के निष्कर्षण और सेवाएँ प्रदान करने से जुड़ी हैं।
- उद्योगों को आमतौर पर अर्थशास्त्र में **प्राथमिक उद्योग, द्वितीयक उद्योग और तृतीयक उद्योग के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।**

उत्पादन

- विनिर्माण का अर्थ है **प्रसंस्करण, संयोजन और मरम्मत के माध्यम से प्राकृतिक सामग्री को उपयोगिता की वस्तुओं में बदलना।**
- विनिर्माण **आर्थिक विकास के इंजन के रूप में कार्य करता है।**

उद्योगों का विकास

- किसी देश के सामाजिक आर्थिक और मानव विकास के लिए औद्योगिक विकास महत्वपूर्ण है। **आजादी से पहले के समय से ही भारत पारंपरिक रूप से कुटीर और घरेलू उद्योगों** जैसे ढाका की मलमल, मसूलीपट्टनम के चिनटेज़, कोचीन के केलिकोस, रेशम के सामान, कलात्मक मिट्टी के बर्तन और प्राचीन वास्तुशिल्प कार्यों जैसे महरौली लौह स्तंभ के लिए प्रसिद्ध रहा है।
- भारत का सूती कपड़ा, रेशमी कपड़ा, मिट्टी के बर्तन, कांस्य, पीतल, चांदी, तांबे के काम, रंगाई और केलिको छपाई दुनिया भर में प्रसिद्ध थी।
- **आधुनिक औद्योगिक विकास की शुरुआत से पहले, भारतीय मिट्टी के बर्तन, मलमल और रेशम के सामान की बहुत मांग थी।**
- हालाँकि, भारत में अंग्रेजों के आगमन के बाद पारंपरिक हस्तशिल्प उद्योग को नुकसान हुआ। **व्यापारियों के रूप में अंग्रेजों के आगमन और उसके बाद की औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप उपनिवेशों से कच्चे माल के निर्यात और तैयार माल के आयात की नीति अपनाई गई, जिससे भारतीय कुटीर उद्योगों का पतन हुआ।** उन्नीसवीं सदी के मध्य के बाद इस गंभीर परिदृश्य में कुछ सुधार हुआ लेकिन उद्योगों की वृद्धि एक **धीमी प्रक्रिया थी।**
- भारत में, एक संगठित पैटर्न पर आधुनिक औद्योगिक क्षेत्र की शुरुआत 1854 में मुख्य रूप से भारतीय पूंजी और उद्यम के साथ **बॉम्बे में सूती कपड़ा उद्योग की स्थापना के साथ हुई। 1855 में, जूट उद्योग** कोलकाता के पास हुगली घाटी के रिशरा में बड़े पैमाने पर विदेशी पूंजी और उद्यम के साथ शुरू किया गया था।

- **1854 में बम्बई और ठाणे के बीच रेल परिवहन की शुरुआत हुई**। देश की पहली **पेपर मिल 1870 में कोलकाता के पास बालीगंज में शुरू की गई थी** और **स्टील का निर्माण पहली बार 1874 में कुल्टी में आधुनिक तरीकों से किया गया था**। टाटा **आयरन एंड स्टील कंपनी की शुरुआत 1907 में जमशेदपुर में हुई थी।**
- इसका मतलब यह है कि आधुनिक औद्योगिक क्षेत्र की शुरुआत उन्नीसवीं सदी के मध्य के बाद ही हुई थी। दो **विश्व युद्धों ने कई उद्योगों के विकास को गति दी, जैसे रसायन, लोहा और इस्पात, चीनी, सीमेंट, कांच और अन्य उपभोक्ता सामान उद्योग।**
- स्वतंत्रता के बाद की औद्योगिक नीति में रोजगार सृजन, उच्च उत्पादकता, विकास में क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करना, कृषि आधार को मजबूती प्रदान करना, निर्यातोन्मुख उद्योगों को बढ़ावा देना और उपभोक्ता संरक्षण जैसे सामाजिक- **आर्थिक उद्देश्यों की प्राप्ति पर जोर दिया गया। विकास में क्षेत्रीय असंतुलन को कम करने के लिए आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों में उद्योगों को स्थापित करने की** एक सुविचारित नीति अपनाई गई है।
- 1948 और 1956 की औद्योगिक नीतियाँ भारत में औद्योगिक विकास की दिशा दर्शाती हैं। औद्योगीकरण की प्रक्रिया प्रथम पंचवर्षीय योजना के आरंभ के साथ शुरू हुई और क्रमिक योजना अवधियों तक जारी रही।

भारत में औद्योगीकरण के चरण (उद्योगों का विकास)।

भारतीय औद्योगीकरण अर्थात उद्योगों के विकास को **निम्नलिखित पाँच चरणों में वर्गीकृत किया जा सकता है।**

चरण I (गर्भपात चरण) - 1818 से 1854 तक

- इस चरण में **औद्योगीकरण शुरू करने के कई प्रयास किए गए लेकिन असफल रहे**
- **इस अवधि के दौरान कुछ औद्योगिक स्थापनाएँ थीं:**

वर्ष	उद्योग स्थापित
1818	फोर्ट ग्लोस्टर, कोलकाता में कपड़ा मिल
1827	चेन्नई में लौह इस्पात प्रगलन

1829	अहमदाबाद में कपड़ा मिल
1832	चेन्नई और बालीगंज में कागज और लुगदी उद्योग

- **सभी उद्योग विफल हो गये** और बंद हो गये।
- दमनकारी ब्रिटिश औद्योगिक नीतियों के परिणामस्वरूप निजी **उद्योगों को प्रोत्साहन नहीं मिला।**

द्वितीय चरण (प्रारंभिक चरण) - 1854 से 1907 तक

- यह **प्रारंभिक विस्तार का चरण था**। आधुनिक उद्योग ने निम्नलिखित उद्योगों की स्थापना द्वारा अपनी उपस्थिति दर्ज की:

वर्ष	उद्योग
1854	करसनजी देवरजी द्वारा मुंबई में कॉटन टेक्सटाइल मिल, जो भारत के पहले निजी उद्यमी थे।
1855	रिशरा में जूट कपड़ा मिल। ऑस्ट्रेलिया को जूट का निर्यात शुरू हुआ।
1863	अहमदाबाद में सूती मिलें स्थापित हुईं, अमेरिकी गृहयुद्ध के कारण इसका विस्तार हुआ।
1870	बंगलौर, धारीवाल और कानपुर में ऊनी कपड़ा मिलें
1875	50 से अधिक कपड़ा मिलें स्थापित की गईं।
1907	लगभग 120 मिलें स्थापित की गईं जिनमें से 46 अकेले बंबई में थीं। इस प्रकार बम्बई 'भारत का कपास पोलिस' बन गया

- इस चरण में जो अन्य औद्योगिक विकास देखे गए वे थे:
  - **1870 में कोलकाता में पहली पेपर** मिल
  - **1853 में ठाणे से मुंबई तक पहली रेल सेवा** की शुरुआत।
  - **1874 में कुल्टी में बंगाल लोहे का काम शुरू हुआ।**
- हुगली और बिहार क्षेत्र में **कागज और लुगदी उद्योग और जूट कपड़ा उद्योग** पर प्रमुख जोर दिया गया।

- **भारत के पश्चिमी क्षेत्रों में सूती कपड़ा उद्योग पर जोर दिया** गया।
- इस प्रकार, यह चरण भारत में तत्कालीन मजबूत कृषि आधारित औद्योगिक व्यवस्था स्थापित करने में सफल रहा लेकिन बुनियादी और भारी उद्योग अभी भी पिछड़े हुए थे।

तृतीय चरण (समय से पहले चरण)- 1907 से 1955 तक

- **यह प्रारंभिक चरण था जहां लौह इस्पात उद्योग पर आधारित औद्योगीकरण शुरू हुआ।** कुछ उद्योग थे:

वर्ष	उद्योग
1907	पहला लौह एवं इस्पात उद्योग जमशेदजी टाटा द्वारा 1912 में जमशेदपुर में शुरू किया गया था
1919	कुल्टी और हीरापुर में टिस्को
1923	विश्वेश्वर्या स्टील प्लांट, भद्रावती, कर्नाटक

- **अंतर युद्ध काल** :

- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान **सशस्त्र बलों से औद्योगिक वस्तुओं की मांग में वृद्धि हुई।**
- **1921-22 में स्थापित भारतीय राजकोषीय आयोग ने** लोहा और इस्पात, कपड़ा, सीमेंट, चीनी, कागज और धातु जैसे उद्योगों को संरक्षण दिया।
- यूरोप में कच्चे माल से बने उत्पादों की परिवहन लागत समुद्र के रास्ते माल में आने वाली बाधाओं के कारण महंगी थी, जिसके कारण **युद्ध के दौरान ब्रिटिशों द्वारा भारतीय निर्मित उत्पादों के प्रति उदार नीति अपनाई गई।**
  - इस अवधि में **सूती कपड़ा उद्योगों का मुंबई से दूर फैलाव भी देखा गया। भारत दुनिया का चौथा सबसे बड़ा कपास उत्पादक देश बनकर उभरा** । इस अवधि के दौरान भारत शराब और कपड़ा का मुख्य आपूर्तिकर्ता बन गया।
  - **द्वितीय विश्व युद्ध के बाद:**
- जहाँ प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध के बीच भारतीय उद्योग समृद्ध हुआ, वहीं **द्वितीय विश्व युद्ध में भारत की भागीदारी और युद्ध में जापान के प्रवेश ने भारतीय उद्योगों के लिए समस्याएँ पैदा कर दीं।**

- हालाँकि, उपरोक्त समस्याएँ अल्पकालिक रहीं और उद्योग उबर गये। युद्ध के समय की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हथियारों और गोला-बारूद के निर्माण से भारतीय आयुध उद्योगों का विकास हुआ।
- **1941 में भारी रसायन उद्योग शुरू हुआ** और H2SO4, सिंथेटिक अमोनिया, कास्टिक सोडा, कोरीन और ब्लीचिंग पाउडर का उत्पादन शुरू हुआ।
- **1942 में बैंगलोर विमान उद्योग की शुरुआत हुई** । तांबे जैसे धातु निर्माण उद्योग की शुरुआत हुई।
- इस अवधि के दौरान बिजली उपकरण और प्लास्टिक उद्योग जैसे इंजीनियरिंग उद्योग फले-फूले।
    - **द्वितीय विश्व युद्ध और विभाजन के बाद:**
- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद मांग में गिरावट आई, जिसके बाद श्रमिकों की कमी, मशीनरी पर अधिक काम, परिवहन बाधाएं आईं, जिससे भारत में औद्योगिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।
- **विभाजन ने सूती कपड़ा और जूट उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव डाला। कपास का 40% और जूट का 80% उत्पादक क्षेत्र पाकिस्तान चला गया।**
- स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय उद्योग में बड़े पैमाने पर उपभोक्ता वस्तुओं जैसे कपास, चीनी, चमड़ा आदि का वर्चस्व था, जबकि मध्यस्थ पूंजीगत वस्तुओं की वृद्धि धीमी थी।
- **1948 के औद्योगिक नीति संकल्प ने** स्थिति बदल दी। 1948 के औद्योगिक नीति संकल्प के उद्देश्य थे:
    - रोजगार सृजन
    - उच्च उत्पादकता
    - क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करना।
    - सार्वजनिक क्षेत्र को बढ़ावा देना।
    - आत्मनिर्भरता
- उपरोक्त के अलावा 1948 के औद्योगिक नीति संकल्प में निम्नलिखित विशेषताएं थीं:
    - इसने **भारतीय अर्थव्यवस्था को मिश्रित अर्थव्यवस्था घोषित किया**
    - **लघु एवं कुटीर उद्योगों को** महत्व दिया गया
    - सरकार ने **विदेशी निवेश पर प्रतिबंध लगा दिया**
    - **इसने उद्योगों को चार व्यापक क्षेत्रों में वर्गीकृत किया:**

1. **सामरिक उद्योग (सार्वजनिक क्षेत्र):** इसमें तीन उद्योग शामिल थे जिनमें केंद्र सरकार का एकाधिकार था। इनमें हथियार और गोला-बारूद, परमाणु ऊर्जा और रेल परिवहन शामिल थे।
2. **बुनियादी/प्रमुख उद्योग (सार्वजनिक-सह-निजी क्षेत्र):** 6 उद्योग अर्थात। कोयला, लोहा और इस्पात, विमान निर्माण, जहाज निर्माण, टेलीफोन, टेलीग्राफ और वायरलेस उपकरण का निर्माण, और खनिज तेल को "प्रमुख उद्योग" या "बुनियादी उद्योग" के रूप में नामित किया गया था।
3. **महत्वपूर्ण उद्योग (नियंत्रित निजी क्षेत्र)** : इसमें भारी रसायन, चीनी, सूती कपड़ा और ऊनी उद्योग, सीमेंट, कागज, नमक, मशीन उपकरण, उर्वरक, रबर, वायु और समुद्री परिवहन, मोटर, ट्रैक्टर, बिजली आदि सहित 18 उद्योग शामिल थे।

अन्य उद्योग (निजी और सहकारी क्षेत्र) : अन्य सभी उद्योग जो उपरोक्त तीन श्रेणियों में शामिल नहीं थे, उन्हें निजी क्षेत्र के लिए खुला छोड़ दिया गया था।

- **पहली पंचवर्षीय योजना 1951-56** इसी चरण के दौरान शुरू की गई। योजना की प्रमुख विशेषताएं थीं:

- इस योजना ने **आत्मनिर्भर बंद अर्थव्यवस्था के विचार को बढ़ावा दिया** और इसे प्रोफेसर पीसी महालनोबिस द्वारा विकसित किया गया था।
- इस योजना में कम से कम समय में खाद्य आत्मनिर्भरता प्राप्त करने तथा मुद्रास्फीति पर नियंत्रण के लिए **कृषि को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई।**
- नए उद्योग लगाने से ज्यादा **मौजूदा उद्योग की क्षमता बढ़ाने** पर जोर दिया गया।
- इस अवधि के दौरान कुछ नए उद्योग उभरे जैसे अखबारी कागज, पावरलूम, चिकित्सा, पेंट, परिवहन और उपकरण।
- **स्थापित किए गए कुछ उद्योग थे सिंदरी उर्वरक कारखाना, चित्तरंजन लोकोमोटिव, इंटीग्रल कोच फैक्ट्री।**

- **इस प्रकार 1907 से 1955 के दौरान, कुछ आधुनिक और बुनियादी उद्योगों ने भारत में जड़ें जमा लीं, लेकिन विशाल जनसंख्या को देखते हुए यह बेहद अपर्याप्त था।**

चरण IV (1955-1985) - प्रारंभिक परिपक्व चरण और दूसरा FYP

- **द्वितीय योजना को भारत का आर्थिक संविधान कहा जाता है।** यह **यूएसएसआर के समाजवादी पैटर्न से प्रेरित था**। द्वितीय पंचवर्षीय योजना महालनोबिस मॉडल के आधार पर कार्य करती थी। महालनोबिस **मॉडल को** वर्ष 1953 में प्रसिद्ध प्रशांत चंद्र महालनोबिस द्वारा प्रतिपादित किया गया था।

- **द्वितीय वर्ष पंचवर्षीय योजना की मुख्य विशेषताएं थीं:**

- **बुनियादी और भारी उद्योगों** के विकास पर विशेष जोर के साथ **तीव्र औद्योगीकरण।**
- **आर्थिक नीति के लक्ष्य के रूप में समाज के समाजवादी पैटर्न** की स्थापना को स्वीकार किया।
- **पिछड़ा क्षेत्र विकास तथा ग्रोथ पोल सेंटर के ट्रिकलडाउन सिद्धांत को अपनाया गया।**
- **1954 में भिलाई (यूएसएसआर), 1959 में दुर्गापुर (यूके) और 1959 में राउरकेला (जर्मनी) में स्टील मिलें** दूसरी पंचवर्षीय योजना में स्थापित की गईं।
- जमशेदपुर, बर्नपुर, कुल्टी, बर्नपुर और भद्रावती जैसे कई पहले से मौजूद इस्पात संयंत्रों का विस्तार किया गया।
- एचएमटी बेंगलुरु, सिंदरी फर्टिलाइजर और चित्तरंजन लोकोमोटिव वर्कशॉप का भी विस्तार किया गया।
- राउरकेला और नांगल में दो और उर्वरक संयंत्र स्थापित किए गए।
    - **तीसरी पंचवर्षीय योजना (1961-66)** : इस योजना की मुख्य विशेषताएं थीं:
- इस योजना में **औद्योगिक विविधीकरण और मौजूदा उद्योगों** जैसे स्टील, मशीन, भवन, ईंधन, रसायन आदि के विस्तार पर जोर दिया गया।
- बेंगलुरु, हरियाणा, अजमेर और रांची में एचएमटी प्लांट शुरू किए गए।
- भोपाल में हेवी इलेक्ट्रिकल, हरिद्वार में ड्रग्स और फार्मेसी आधुनिक उद्योग के नए स्तंभ बन गए।
- तीसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान कुछ समस्याएँ थीं
    - भारत-चीन युद्ध 1962 और भारत-पाक युद्ध 1965
    - 1965 का सूखा
    - विदेशी ऋण की अनुपलब्धता
    - असामान्य परिस्थितियों से निपटने में कठोर प्रशासनिक नियमों की अक्षमता।

तीन वार्षिक योजनाएँ (1966-69): अवकाश की योजना बनाएं

- तीसरी योजना की विफलता यानी रुपये के अवमूल्यन (निर्यात को बढ़ावा देने के लिए) के साथ-साथ मुद्रास्फीति की मंदी के कारण चौथी FYP को स्थगित करना पड़ा। इसके स्थान पर तीन वार्षिक योजनाएँ पेश की गईं।
- **कृषि में व्याप्त संकट और भोजन की गंभीर कमी के कारण वार्षिक योजनाओं के दौरान कृषि पर जोर देना आवश्यक हो गया**। इन योजनाओं के दौरान एक पूरी नई कृषि रणनीति लागू की गई।

- **इसमें उच्च उपज देने वाली किस्मों के बीजों का व्यापक वितरण, उर्वरकों का व्यापक उपयोग, सिंचाई क्षमता का दोहन और मिट्टी संरक्षण शामिल है** । वार्षिक योजनाओं के दौरान, अर्थव्यवस्था ने तीसरी योजना के दौरान उत्पन्न झटकों को झेल लिया और आगे की योजनाबद्ध वृद्धि का मार्ग प्रशस्त किया।

- **चौथी पंचवर्षीय योजना (1969-1974)** :

- चौथी पंचवर्षीय योजना की शुरुआत में **भारतीय अर्थव्यवस्था मंदी से उबरने लगी ।**
- बोकारो स्टील प्लांट चालू हो गया.
- एगो आधारित उद्योग, लघु उद्योग आ घरेलू उद्योग पर काफी जोर दिहल गइल.
- **क्षेत्रीय और स्थानीय योजना प्रक्रिया के माध्यम से औद्योगिक फैलाव की प्रक्रिया को बढ़ाने के प्रयास किए गए।**
- मिश्र धातु और विशेष इस्पात, एल्यूमीनियम, ऑटोमोबाइल टायर, पेट्रोलियम रिफाइनरी, इलेक्ट्रॉनिक सामान, मशीन टूल्स, ट्रैक्टर और भारी विद्युत उपकरण जैसे उद्योगों ने महत्वपूर्ण प्रगति की।
- पीएसयू ने भी अच्छी प्रगति दिखाई।

- **पाँचवीं पंचवर्षीय योजना (1974-79)** :

- पाँचवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान **मुख्य क्षेत्र के उद्योगों के तीव्र विकास और निर्यातोन्मुख वस्तुओं तथा बड़े पैमाने पर उत्पादन की वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि पर जोर दिया गया।**
- इस्पात संयंत्रों का तेजी से विकास हुआ। सलेम, विजयनगर और विशाखापत्तनम में इस्पात संयंत्रों को अतिरिक्त क्षमता बनाने का प्रस्ताव दिया गया था।
- **SAIL का गठन 1973 में हुआ था।** औषधि निर्माण, तेल शोधन, रासायनिक उर्वरक और भारी इंजीनियरिंग उद्योग ने अच्छी प्रगति की।
- इस अवधि के दौरान विश्व ऊर्जा संकट ने भारत के उद्योगों पर प्रतिकूल प्रभाव डाला।

- **छठी पंचवर्षीय योजना (1980-85)** :

- इस योजना ने औद्योगिक विकास प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण मोड़ ला दिया। **उदारीकरण की शुरुआत राजीव गांधी ने की थी.**
- इस योजना के दौरान क्षमताओं के अधिकतम उपयोग पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस अवधि के दौरान औद्योगिक उत्पादकता में सुधार हुआ।

- **उपभोक्ता और पूंजीगत वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि** हुई। इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग तेजी से बढ़ा।
- एल्युमीनियम, जिंक, लेड, पेट्रोकेमिकल्स, ऑटोमोबाइल और कंज्यूमर ड्यूरेबल्स जैसे उद्योगों के लिए क्षमता निर्माण के लक्ष्य हासिल किए गए।
- पेट्रोलियम, मशीन टूल्स, ऑटोमोबाइल आदि उद्योगों में उत्पादन लक्ष्य हासिल किए गए।

चरण V (1985 से वर्तमान तक): परिपक्व चरण

- **सातवीं पंचवर्षीय योजना (1985- 1990)** :
  - सातवीं पंचवर्षीय योजना **उच्च तकनीक और इलेक्ट्रॉनिक्स औद्योगिक सेवा आधार पर केंद्रित थी**।
  - सभी क्षेत्रों में औद्योगिक आधारों का सामान्य फैलाव था। स्थानीय संसाधनों का दोहन किया गया और उपलब्ध मानव संसाधनों को कुशल बनाने के लिए उचित प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित किया गया।
  - सातवीं पंचवर्षीय योजना के साथ बड़े घरेलू बाजार और निर्यात क्षमता वाले उद्योगों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एकीकृत नीति बनाई गई थी।
  - औद्योगिक नीतियों में व्यापक बदलाव शुरू हो गए और कुछ **कड़े और प्रतिबंधात्मक कानूनों को संशोधित किया गया जिससे बड़े निजी क्षेत्र की भागीदारी और एफडीआई की अनुमति मिल सके**।
- **वार्षिक योजनाएँ (1990-91 और 1991-92)**
  - देश में तेजी से बदलती राजनीतिक स्थिति के कारण आठवीं पंचवर्षीय योजना शुरू नहीं हो सकी, जिसके कारण 1990-91 और 1991-92 की वार्षिक योजनाएँ लागू की गईं।
  - उदारीकरण का प्रभाव अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों के साथ-साथ उद्योगों पर भी पड़ा।
- **आठवीं पंचवर्षीय योजना (1992-1997)**
  - 1991 भारत में औद्योगिक विकास के इतिहास में एक महत्वपूर्ण वर्ष था। **राव-मनमोहन मॉडल के तहत नई औद्योगिक नीति अपनाई गई।**
  - नई औद्योगिक नीति की कुछ प्रमुख विशेषताएं थीं:
  - **व्यापार में प्रवेश संबंधी बाधाओं को दूर करना**।
  - सार्वजनिक क्षेत्र के लिए विशेष रूप से आरक्षित क्षेत्रों में कमी।
  - **एकाधिकारवादी और प्रतिबंधात्मक प्रथाओं के प्रति दृष्टिकोण का युक्तिकरण।**
  - विदेशी एवं आयात नीतियों का उदारीकरण।

- क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करना और रोजगार-गहन छोटे और लघु क्षेत्रों के विकास को प्रोत्साहित करना।
- **FERA का स्थान FEMA ने ले लिया**।
- नई औद्योगिक नीति के कारण **विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों का भारी आगमन हुआ।**
- नई औद्योगिक नीति ने भारतीय उद्योग को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने की प्रक्रिया को तेज कर दिया। यह अविनियमन, विनिवेश, विकेंद्रीकरण, डी-लाइसेंसिंग और हस्तांतरण (डिब्यूरोक्रेटाइजेशन) की प्रक्रिया पर आधारित था।
- आठवीं पंचवर्षीय योजना में **बहुराष्ट्रीय कंपनियों, ऑटोमोबाइल और दूरसंचार उद्योगों में वृद्धि देखी गई।**
- निम्नलिखित कारकों के कारण 2000-01 में औद्योगिक विकास धीमा हो गया:
    - घरेलू मांग में कमी
    - तेल की ऊंची कीमतें
    - गुजरात भूकंप
        - उच्च ब्याज दर से निजी निवेश पर प्रतिकूल प्रभाव और पूरे देश में मंदी।
- **नौवीं पंचवर्षीय योजना (1997-2002)**
- **नौवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान भारतीय रुपये की पूर्ण चालू खाता परिवर्तनीयता थी।**
- **पूंजी खाता परिवर्तनीयता आंशिक हो गई और FERA का FEMA व्यवस्था में पूर्ण हस्तांतरण हो गया।**
- **तीन को छोड़कर सभी आर्थिक क्षेत्र। रेलवे, अंतरिक्ष और परमाणु विज्ञान को निजी निवेश के लिए खोल दिया गया।**
- नौवीं पंचवर्षीय योजना क्षेत्रीय असंतुलन के मुद्दों को संबोधित करने में सफल रही।
- मौजूदा उद्योगों जैसे सीमेंट, कोयला, स्टील, उपभोक्ता सामान आदि को अनुकूलित किया गया।
- **दसवीं पंचवर्षीय योजना (2002-2007)**
- दसवीं पंचवर्षीय योजना में **आधुनिकीकरण और प्रौद्योगिकी उन्नयन पर जोर दिया गया।**
- दसवीं पंचवर्षीय योजना से **निर्यात में वृद्धि हुई और भारतीय उद्योगों की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि हुई।**

- दसवीं पंचवर्षीय योजना के लागू होने से क्षेत्रीय विकास में संतुलन आया।
- दसवीं पंचवर्षीय योजना में आज़ादी के बाद से **सबसे अधिक विकास दर देखी गई।**
- **भारत आईटी और सेवा क्षेत्र में अग्रणी बनकर उभरा।**
- **ऑटोमोबाइल और फार्मेसी** सेक्टर में बढ़त देखने को मिली .
- निर्यात में प्रमुखता देने के लिए वाणिज्य विभाग ने एएसआईडीएफ, मार्केट एक्सेस इनिशिएटिव (एमएआई), एसईजेड और डीएफएफटी के आधुनिकीकरण जैसी प्रमुख पहल शुरू की।
- संतुलित औद्योगिक विकास के लिए विशेष श्रेणी के राज्यों उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, उत्तर पूर्व के लिए औद्योगिक नीति पैकेज की घोषणा की गई।
    - **कपड़ा उद्योग के लिए, TUFS (टेक्सटाइल अपग्रेडेशन फॉर टेक्सटाइल) योजना शुरू की गई।**
    - भारत में कपड़ा उद्योग के बुनियादी ढांचे के विकास की देखभाल के लिए कपड़ा केंद्र बुनियादी ढांचा विकास योजना की घोषणा की गई थी।
    - आईटी और ज्ञान उद्योग की प्रचुरता में वृद्धि हुई। पर्यटन उद्योग को भी बड़ा बढ़ावा मिला।
- **ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007-2012)**
    - ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना **वित्तीय समावेशन विकास मॉडल की अवधारणा पर आधारित थी जिसमें भविष्य की दृष्टि के साथ-साथ उद्योग और कृषि के विकास की परिकल्पना की गई थी।**
    - पर्यावरणीय प्रभाव आकलन के साथ औद्योगिक विकास पर फोकस था।
    - संसाधनों के दोहन को और अधिक तर्कसंगत बनाया गया।
    - 2008-09 के वैश्विक संकट ने इस योजना के दौरान भारत के विकास पथ पर प्रतिकूल प्रभाव डाला।

अभ्यास प्रश्न

1. लघु उत्तरीय प्रकार

2. अभिकथन -कारण प्रश्न

3.आलोचनात्मक सोच-आधारित प्रश्न **4. बहुविकल्पीय प्रश्न**

5.केस स्टडी आधारित प्रश्न

1. लघु उत्तरीय प्रकार

1. प्रश्न: भारत में किस नदी को "गंगा" के नाम से जाना जाता है? उत्तर: गंगा नदी को भारत में "गंगा" के नाम से जाना जाता है।
2. प्रश्न: महाराष्ट्र की राजधानी क्या है? उत्तर: महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई है।
3. प्रश्न: कौन सा रेगिस्तान भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है ? उत्तर: थार मरुस्थल भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है ।
4. प्रश्न: भारत की सबसे ऊँची पर्वत चोटी का नाम बताइये। उत्तर: भारत की सबसे ऊँची पर्वत चोटी माउंट एवरेस्ट है।
5. प्रश्न: भारत के किस राज्य को "पाँच नदियों की भूमि" के नाम से जाना जाता है? उत्तर: पंजाब को "पांच नदियों की भूमि" के रूप में जाना जाता है।

दावा और कारण:

6. **दावा:** पश्चिमी घाट एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है।

   कारण: पश्चिमी घाट एक जैव विविधता हॉटस्पॉट है और इसमें वनस्पतियों और जीवों की एक अनूठी श्रृंखला है।

7. **दावा:** भारतीय मानसून ITCZ (इंटरट्रॉपिकल कन्वर्जेंस ज़ोन) की गतिविधि से प्रभावित होता है।

   कारण: ITCZ गर्मियों के दौरान उत्तर की ओर स्थानांतरित हो जाता है, जिससे भारत में मानसून की बारिश होती है।

8. **दावा:** दक्कन का पठार मुख्य रूप से तलछटी चट्टानों से बना है।

   कारण: दक्कन पठार का निर्माण ज्वालामुखीय गतिविधि से हुआ था, जिसके परिणामस्वरूप लावा प्रवाह जमा हुआ था।

9. **दावा:** ब्रह्मपुत्र नदी में गंगा नदी की तुलना में अधिक तलछट वहन करने की क्षमता है।

   कारण: ब्रह्मपुत्र नदी खड़ी भूभाग से होकर बहती है और कटाव के कारण बड़ी मात्रा में तलछट लाती है।

10. **दावा:** कच्छ का रण दिन के दौरान एक महत्वपूर्ण तापमान सीमा का अनुभव करता है।

कारण: कच्छ का रण कम आर्द्रता वाला एक रेगिस्तानी क्षेत्र है, जिससे तापमान में व्यापक भिन्नता होती है।

महत्वपूर्ण सोच:

11. प्रश्न: हिमालय की उपस्थिति भारत की जलवायु और मौसम के पैटर्न को कैसे प्रभावित करती है? उत्तर: हिमालय एक अवरोधक के रूप में कार्य करता है, जो मध्य एशिया से आने वाली ठंडी हवाओं को रोकता है और मानसूनी हवाओं को प्रभावित करता है, जिससे पूरे भारत में अलग-अलग मौसम और विभिन्न वर्षा पैटर्न होते हैं।

12. प्रश्न: सुंदरबन मैंग्रोव वन के पारिस्थितिक महत्व पर चर्चा करें। उत्तर: सुंदरवन एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में कार्य करता है, जो कई प्रजातियों को आवास प्रदान करता है, तटीय कटाव के खिलाफ एक बफर के रूप में कार्य करता है और कार्बन सिंक के रूप में कार्य करता है।

13. प्रश्न: पश्चिमी घाट और दक्कन पठार के संदर्भ में "वर्षा छाया प्रभाव" की अवधारणा को समझाएं। उत्तर: अरब सागर से आने वाली नमी भरी हवाओं के कारण पश्चिमी घाट में भारी वर्षा होती है, जबकि दक्कन के पठार में कम वर्षा होती है क्योंकि घाटों को पार करते समय हवा में नमी खो जाती है।

बहुविकल्पीय प्रश्न (एमसीक्यू):

14. प्रश्न: बार-बार आने वाली बाढ़ के कारण किस नदी को "बिहार का शोक" कहा जाता है? a) यमुना b) ब्रह्मपुत्र c) गंगा d) गोदावरी उत्तर: c) गंगा

15. प्रश्न: अरावली पर्वतमाला भारत के किस राज्य से होकर गुजरती है? a) राजस्थान b) उत्तर प्रदेश c) मध्य प्रदेश d) गुजरात उत्तर: a) राजस्थान

16. प्रश्न: कौन सा भारतीय शहर गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों के संगम पर स्थित है? ए) वाराणसी बी) इलाहाबाद (प्रयागराज) सी) हरिद्वार डी) कानपुर उत्तर: बी) इलाहाबाद (प्रयागराज)

केस स्टडी आधारित:

17. **केस स्टडी:** पश्चिमी घाट में वनों की कटाई का प्रभाव प्रश्न: पश्चिमी घाट क्षेत्र में वनों की कटाई के पारिस्थितिक परिणामों पर चर्चा करें। उत्तर: पश्चिमी घाट में वनों की कटाई से मिट्टी का कटाव, जैव विविधता की हानि, जल चक्र में व्यवधान और वनस्पति आवरण में कमी के कारण भूस्खलन में वृद्धि हो सकती है।

18. केस स्टडी: शहरीकरण और यमुना नदी प्रश्न: यमुना नदी पर शहरीकरण से उत्पन्न चुनौतियों का विश्लेषण करें और उनसे निपटने के लिए स्थायी उपाय सुझाएं। उत्तर: शहरीकरण के कारण प्रदूषण, अतिक्रमण और

यमुना में प्रवाह कम हो गया है। उपायों में सीवेज उपचार, वनीकरण और जन जागरूकता अभियान शामिल हैं।

19. केस स्टडी: दक्कन पठार में कृषि प्रश्न: दक्कन पठार की अर्ध-शुष्क जलवायु के लिए उपयुक्त कृषि पद्धतियों की व्याख्या करें और किसान पानी की कमी को कैसे अपनाते हैं। उत्तर: दक्कन के पठार में कृषि के लिए शुष्क भूमि पर खेती, फसल चक्र, सूखा-प्रतिरोधी फसलें और वर्षा जल संचयन जैसी जल संरक्षण विधियां आवश्यक हैं।

संक्षिप्त जवाब:

1. भारत की सबसे लंबी नदी कौन सी है?

उत्तर: गंगा (या गंगा)।

2. भारत के पश्चिमी भाग में कौन सा मरुस्थल स्थित है ?

उत्तर: थार रेगिस्तान।

3. भारत की सबसे ऊँची पर्वत चोटी का नाम बताइये।

उत्तर: कंचनजंगा।

4. भारत के किस राज्य को "पाँच नदियों की भूमि" के नाम से जाना जाता है?

उत्तर: पंजाब.

5. भारतीय मुख्य भूमि का सबसे दक्षिणी बिंदु कौन सा है?

उत्तर : कन्याकुमारी।

दावा और कारण:

6. **दावा:** पश्चिमी घाट एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है। कारण: वे अपनी समृद्ध जैव विविधता और अद्वितीय भूवैज्ञानिक विशेषताओं के लिए पहचाने जाते हैं।

उत्तर: कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन को स्पष्ट करता है।

7. **दावा:** भारतीय मानसून भूमि और पानी के अलग-अलग ताप के कारण होता है।

कारण: भूमि पानी की तुलना में अधिक धीरे-धीरे गर्म और ठंडी होती है।

उत्तर: दावा सही है, लेकिन कारण गलत है।

महत्वपूर्ण सोच:

8. भारत की जलवायु को प्रभावित करने में हिमालय की भूमिका की व्याख्या करें।

9. उत्तर: हिमालय एक अवरोधक के रूप में कार्य करता है जो सर्दियों के दौरान मध्य एशिया से आने वाली ठंडी हवाओं को रोकता है, जिससे उत्तरी क्षेत्र अपेक्षाकृत गर्म रहते हैं। वे मानसून के मौसम के दौरान हिंद महासागर से नमी से भरी हवाओं को पकड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप हवा की ओर भारी वर्षा होती है और हवा की ओर वर्षा छाया प्रभाव पैदा होता है।

10. पश्चिमी घाट में वनों की कटाई के पारिस्थितिक प्रभाव पर चर्चा करें।

11. भूस्खलन का खतरा बढ़ जाता है। यह स्वदेशी समुदायों की आजीविका को भी प्रभावित कर सकता है और संग्रहीत कार्बन डाइऑक्साइड को जारी करके जलवायु परिवर्तन में योगदान दे सकता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न (एमसीक्यू):

10. किस नदी को बार-बार आने वाली बाढ़ के कारण "बिहार का शोक" कहा जाता है? ए) यमुना बी) ब्रह्मपुत्र सी) गंगा डी) गोदावरी

- उत्तर: सी) गंगा

11. दक्कन का पठार मुख्यतः किस प्रकार की चट्टान से बना है? a) ग्रेनाइट b) चूना पत्थर c) बलुआ पत्थर d) बेसाल्ट

- उत्तर: डी) बेसाल्ट

केस स्टडी-आधारित प्रश्न:

12. केस स्टडी: सुंदरबन डेल्टा सुंदरबन डेल्टा भारत और बांग्लादेश द्वारा साझा किया जाने वाला एक अनूठा पारिस्थितिकी तंत्र है। इसके सामने आने वाली पर्यावरणीय चुनौतियों और इसके क्षरण के संभावित परिणामों पर चर्चा करें।

13. उत्तर: सुंदरवन डेल्टा को समुद्र के बढ़ते स्तर, कटाव, लवणता घुसपैठ और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ये कारक मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र को खतरे में डालते हैं, जो तूफानों के खिलाफ प्राकृतिक बफर के रूप में कार्य करता है, जैव विविधता का समर्थन करता है और स्थानीय समुदायों को बनाए रखता है। यदि गिरावट जारी रहती है, तो इससे निवास स्थान का नुकसान हो सकता है, समुदायों का विस्थापन हो सकता है और प्राकृतिक आपदाओं के प्रति संवेदनशीलता बढ़ सकती है।

14. केस स्टडी: मुंबई में शहरीकरण मुंबई में तेजी से शहरीकरण को चलाने वाले कारकों और शहर के बुनियादी ढांचे, पर्यावरण और सामाजिक ताने-बाने पर इसके प्रभावों का विश्लेषण करें।

उत्तर: मुंबई में तेजी से शहरीकरण ग्रामीण से शहरी प्रवास, आर्थिक अवसरों और औद्योगिक विकास जैसे कारकों से प्रेरित है। इससे बुनियादी ढांचे पर भारी दबाव पड़ा है, जिससे भीड़भाड़, अपर्याप्त आवास और प्रदूषण में वृद्धि हुई है। खुले स्थानों पर अतिक्रमण, जल निकायों के प्रदूषण और संसाधनों पर दबाव से पर्यावरण को नुकसान होता है।

इसके अतिरिक्त, रहने की स्थिति में असमानताएं शहरीकरण से उत्पन्न होने वाली सामाजिक चुनौतियों को उजागर करती हैं